रांची, शनिवार
14.12.2024
वर्ष : 10, अंक : 14 पृष्ठ : 12
मूल्य : दो रूपए

बिहान भारत

रांची से प्रकाशित हिन्दी दैनिक
खबरे हमारी, विश्वास आपका

website : www.bihanbharat.org bihanbharat@gmail.com @bihan_bharat Bihan Bharat RNI NO - JHAHIN/2015/73988

संक्षिप्त खबरें

अभिनेता अल्लू अर्जुन को किया गिरफ्तार, हाईकोर्ट से मिली अंतरिम राहत

हैदराबाद: तेलुगू फिल्म अभिनेता अल्लू अर्जुन को यहां संध्या थिएटर भगदड़ मामले में शुक्रवार को पुलिस ने गिरफ़्तार कर अदालत में पेश किया जहां उन्हें 14 दिन की न्यायायिक हिरासत में भेजने का आदेश दिया गया। अभिनेता की ओर से निचली अदालत के आदेश के खिलाफ तेलंगाना उच्च न्यायालय में दायर अर्जी पर उनकी अंतरिम जमानत मंजूर कर ली गयी। इसबीच तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने कहा कि अभिनेता अर्जुन की गिरफ्तारी में सरकार की कोई भूमिका नहीं है। उन्होंने कहा कि इस मामले की विस्तृत जानकारी के बाद ही कुछ बोल सकते हैं। यह घटना चार दिसंबर को अर्जुन की फिल्म पुष्पा 2 : द रूल के प्रीमियर शो के दौरान हुई थी। भगदड़ में 35 साल की महिला रेवती की मृत्यु हो गयी थी और उसका बेटा गंभीर रूप से घायल हो गया था।

महाराष्ट्र मंत्रिमंडल का विस्तार 15 दिसंबर को

मुंबई। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत महाराष्ट्र सरकार का मंत्रिमंडल विस्तार 15 दिसंबर को होगा और नए मंत्री नागपुर में आयोजित एक समारोह में पद की शपथ लेंगे। आधिकारिक सूत्रों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने बताया कि लगभग 30 मंत्री शपथ लेंगे। राज्य विधानमंडल का एक सप्ताह तक चलने वाला शीतकालीन सत्र नागपुर में 16 दिसंबर से शुरू होगा। मुंबई में पांच दिसंबर को एक भव्य समारोह में भाजपा नेता देवेंद्र फडणवीस ने मुख्यमंत्री पद जबकि शिवसेना नेता एकनाथ शिंदे और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) प्रमुख अजित पवार ने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। महाराष्ट्र में मंत्रिपरिषद में मुख्यमंत्री समेत अधिकतम 43 सदस्य हो सकते हैं।

श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा दिसनायका कल से दो दिन की भारत यात्रा पर

नई दिल्ली : श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमार दिसनायका 15-17 दिसंबर को राजकीय यात्रा पर भारत आएंगे। राष्ट्रपति बनने बाद श्री दिसनायका की भारत की यह पहली द्विपक्षीय यात्रा होगी। विदेश मंत्रालय द्वारा शुक्रवार को जारी एक बयान में कहा गया है कि राष्ट्रपति दिसनायका इस यात्रा में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से मुलाकात करेंगे और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ दोनों देशों के परस्पर हित के मुद्दों पर चर्चा करेंगे।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने पत्नी कल्पना के साथ बाबा बैद्यनाथ व बासुकीनाथ मंदिर में की पूजा-अर्चना

बिभा संवाददाता

देवघर/रांची। प्रदेश के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं उनकी धर्मपत्नी विधायक कल्पना सोरेन ने शुक्रवार को देवघर स्थित बाबा बैद्यनाथ धाम मंदिर में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक किया। तीर्थ पुरोहितों के जरिये पूरे विधि-विधान से बाबा बैद्यनाथ धाम मंदिर के गर्भ गृह में शिवलिंग की पूजा-अर्चना संपन्न कराई गई।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं विधायक कल्पना सोरेन ने बाबा भोलेनाथ से झारखंडवासियों की सुख-समृद्धि, उन्नति और खुशहाली की प्रार्थना की।

इससे पूर्व देवघर एयरपोर्ट आगमन पर मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं विधायक कल्पना सोरेन का विधायक, सारठ उदय शंकर सिंह, संथाल परगना कमिश्नर लालचंद दादेल, संथाल परगना आईजी क्रांति कुमार, डीआईजी संजीव कुमार, उपायुक्त सह जिला दण्डाधिकारी विशाल सागर, पुलिस अधीक्षक अजीत पीटर डुंगडुंग के जरिये स्वागत और अभिवादन किया गया। इस मौके पर जिला प्रशासन देवघर द्वारा एयरपोर्ट परिसर में मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन को गॉर्ड ऑफ ऑनर दिया गया।

इधर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन शुक्रवार को फौजदारी दरबार बासुकीनाथ पहुंचे। जहां उन्होंने पत्नी कल्पना सोरेन संग विधि विधान के साथ बाबा का पूजा अर्चना और श्रृंगार किया। इसके बाद माता पार्वती काली एवं शत्रु संहारिणी बंगलामुखी की पूजा की गई। पूजा के समापन पर मंदिर परिसर में एक भव्य आरती के कार्यक्रम में बाबा बासुकीनाथ सहित मंदिर में मौजूद समस्त देवी-देवताओं की आरती उतारी गई। इस दौरान जरमुंडी के पूर्व विधायक बादल हेमंत के साथ पूजा अर्चना करते नजर आए। वहीं झामुमो नेता सह मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने फौजदारी नाथ से प्रदेशवासियों के लिए खुशहाली का कामना किया।

उधर जिला प्रशासन की ओर से डीसी अंजनेयुलु दोड्डे सहित अन्य अधिकारियों ने सीएम को फूलों का गुलदस्ता एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया। मालूम हो कि मुख्यमंत्री के बासुकीनाथ आगमन को लेकर जिला प्रशासन के तमाम अधिकारी मुस्तैद नजर आए। मुख्यमंत्री की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए बासुकीनाथ धाम को अभेद किला में तब्दील कर दिया गया था। इतना ही नहीं तीर्थ नगरी की साफ-सफाई की व्यवस्था अन्य दिनों की तुलना में कुछ खास नजर आई।

हजार करोड़ की लागत से झारखंड को मिलेगा नया रिम्स-2 : डॉ इरफान अंसारी

बिभा संवाददाता

रांची : स्वास्थ्य चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण विभाग, झारखंड की अध्यक्षता में मंत्री डॉ. इरफान अंसारी जी द्वारा विभागीय समीक्षात्मक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में विभाग के सभी आला अधिकारी और राज्य के सभी सिविल सर्जन उपस्थित हुए। बैठक में स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने स्वास्थ्य व्यवस्था को सुधारने के लिए अपने संकल्प को दोहराया और कड़े निर्देश दिए।

मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने कहा, झारखंड राज्य को एक डॉक्टर के रूप में स्वास्थ्य मंत्री मिला है। स्वास्थ्य सेवा में किसी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं करूंगा। जो अधिकारी अच्छा काम करेंगे उन्हें इनाम मिलेगा, लेकिन गलतियों पर सख्त कार्रवाई होगी। उन्होंने कहा कि इस विभाग में एक नई सोच के साथ आया हूं, और मेरा उद्देश्य झारखंड की स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाना है। आप सभी का सहयोग चाहिए।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में स्वास्थ्य विभाग केवल कागजों तक सीमित नजर आ रहा है। इस व्यवस्था को बदलने के लिए प्रतिबद्ध हूं। यह बैठक उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने कहा कि झारखंड की स्वास्थ्य व्यवस्था को कागजों से निकालकर जमीन पर लाना चाहता हूं। यह तभी संभव है जब अधिकारी पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ काम करें। बैठक के अंत में मंत्री ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिया कि झारखंड की जनता के प्रति उनकी जिम्मेदारी सर्वोपरि है।

10 दिन में नई एजेंसी का चयन, पुरानी एजेंसियों पर गिरी गाज

झारखंड का मॉडल बनेगा आदर्श, अब दिल्ली भी लेगा हमारे अस्पतालों से सीख

प्राइवेट अस्पतालों को चेतावनी, मरीज की मौत के बाद शव रोकने पर होगी कार्रवाई

महत्वपूर्ण घोषणाएं और निर्देश

♦ **रिम्स-2 का निमार्ण:** झारखंड में 1000 करोड़ रुपये की लागत से रिम्स-2 का निर्माण किया जाएगा। यह अस्पताल न केवल दिल्ली के तर्ज पर होगा बल्कि झारखंड का मॉडल बनकर दिल्ली के अस्पतालों को भी प्रेरित करेगा।

♦ प्राइवेट अस्पतालों पर सख्त निर्देश: मरीजों की मौत के बाद शव को रोकने की प्रथा पर रोक लगाने के लिए सख्त निर्देश दिए गए हैं। इस पर जल्द ही सरकार आदेश जारी करेगी।

♦ 1000 पीएचसी का निमार्ण: राज्य भर में 1000 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (पीएचसी) बनाए जाएंगे ताकि ग्रामीण और सुदूर इलाकों तक स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंच सकें।

♦ नई एजेंसियों का चयन: सभी वर्तमान एजेंसियों को रद्द कर 10 दिनों के अंदर नई एजेंसियों का चयन किया जाएगा।

♦ 200 हॉस्पिटल मैनेजर की बहाली: राज्य भर के अस्पतालों में लगभग 200 अस्पताल प्रबंधकों की नियुक्ति की जाएगी।

♦ सदर अस्पतालों का आधुनिकीकरण: सभी सदर अस्पतालों को आधुनिक सुविधाओं से लैस किया जाएगा और प्रत्येक जिले में मॉड्यूलर ऑपरेशन थिएटर (ओटी) बनाए जाएंगे।

♦ एमआरआई और सीटी स्कैन मशीनें: एक सप्ताह के अंदर सभी अस्पतालों में एमआरआई और सीटी स्कैन की मशीनें उपलब्ध कराई जाएंगी।

♦ शाम की ओपीडी सेवा: मरीजों की सुविधा के लिए शाम को भी ओपीडी सेवा शुरू की जाएगी। डॉक्टर दो शिफ्ट में बैठेंगे।

♦ प्राइवेट डॉक्टरों की सेवाएं: आवश्यकता पड़ने पर प्राइवेट डॉक्टरों को भी नियुक्त किया जाएगा ताकि सभी अस्पतालों में पर्याप्त डॉक्टर उपलब्ध हों।

♦ जामताड़ा में मेडिकल कॉलेज: जामताड़ा में मेडिकल कॉलेज निर्माण के लिए रास्ता साफ हो चुका है। जल्द ही रांची से स्थल निरीक्षण के लिए टीम जाएगी।

♦ सुदूर इलाकों तक पहुंचेगी स्वास्थ्य सेवाएं: सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि झारखंड के हर कोने में स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हों।

♦ मोहल्ला क्लीनिक का आधुनिकरण: मोहल्ला क्लीनिक की जगह मुख्यमंत्री की सलाह के अनुसार इसका आधुनिकीकरण किया जाएगा।

वर्तमान सरकार संविधान में मिला सुरक्षा कवच तोड़ रही: प्रियंका गांधी

नई दिल्ली। कांग्रेस महासचिव एवं पहली बार संसद पहुंची प्रियंका गांधी ने शुक्रवार को लोकसभा में कहा कि भारत के संविधान ने देश की जनता को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय का वादा करते हुए एकता, न्याय और सुरक्षा का कवच दिया है। वर्तमान सरकार इस सुरक्षा कवच को तोड़ने का प्रयास कर रही है। विपक्ष की ओर से संविधान को अंगीकृत करने की 75वीं वर्षगांठ पर आयोजित विशेष चर्चा में प्रियंका ने कहा कि निजीकरण और लैटरल एंट्री के जरिए सामाजिक न्याय से जुड़ा सुरक्षा कवच तोड़ने की कोशिश की जा रही है। अगर वर्तमान सरकार पूर्ण बहुमत से आती तो संविधान बदलने का प्रयास जारी रहता। प्रियंका ने अपने पहले भाषण में अपने भाई राहुल गांधी की तरह जातिगत जनगणना, अडाणी और संविधान का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस का देश के निर्माण में बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने बैंकों और खदानों के राष्ट्रीयकरण का जिक्र किया। साथ ही सत्ता पक्ष पर आरोप लगाया कि आज महंगाई, बेरोजगारी जैसे विषयों पर संसद में चर्चा नहीं होती है। वायनाड से लेकर ललितपुर तक देश का किसान रो रहा है।

कार्यों में तेजी लाकर सभी निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करें : चमरा लिंडा

बिभा संवाददाता

रांची : अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग के मंत्री चमरा लिंडा ने कल्याण कॉम्प्लेक्स पहुंच कर आदिवासी कल्याण आयुक्त अजय नाथ झा के साथ विभाग द्वारा कार्यान्वित की जाने वाली सभी योजनाओं की जानकारी ली और उनके अद्यतन कार्य प्रगति की भी समीक्षा की। मंत्री ने अधिकारियों से कहा कि आदिवासी संस्कृति की उच्च परंपराओं पर आधारित कल्याण की योजनाएं बनायी जाए। उन्होंने कहा कि आदिवासियों की शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को उच्च मानक स्तर पर पहुँचाना हमारा ध्येय होना चाहिए। ग्रामीण कल्याण अस्पताल, आयुर्वेदिक चिकित्सा केंद्र और पहाड़िया स्वास्थ्य केंद्रों में सभी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। आवासीय विद्यालयों और छात्रावासों में सभी सुविधाएं सुनिश्चित करने के लिए पहल की जाए।

एसटी/एससी और पिछड़ा वर्ग के लिए चल रही प्रत्येक योजनाओं के क्रियान्वयन में गुणवत्ता और पारदर्शिता को सबसे अहम प्राथमिकता देकर कार्य किए जाएं। एसटी/एससी और पिछड़ा वर्ग के युवाओं के लिए रोजगार और आय वृद्धि के लिए दीर्घस्थायी कार्यक्रम तैयार किए जाएं।

मंत्री चमरा लिंडा ने प्रगतिरत सभी कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने पर बल दिया। मंत्री ने आदिवासी कल्याण आयुक्त से कहा कि मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के कुशल नेतृत्व में अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग सहित सभी वर्ग-समुदाय के जनमानस का सर्वांगीण विकास तथा कल्याण राज्य सरकार की प्राथमिकता है। चमरा लिंडा ने कहा कि राज्य सरकार ने आदिवासी कल्याण से सम्बंधित सभी क्षेत्र के विकास पर फोकस किया है। मंत्री चमरा लिंडा ने आदिवासी कल्याण आयुक्त से कहा कि कार्यों में तेजी लाकर सभी निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करना हमारी जिम्मेदारी है। विभाग द्वारा संचालित योजनाओं का पूर्ण लाभ पहुंचाकर पात्र लाभार्थियों को विकास की राह में आगे बढ़ाने की सोच के साथ सभी कार्यों को ससमय पूरा करें।

राज्य में लगातार बढ़ रही ठंड, तीन जिलों में शीतलहर की चेतावनी

बिभा संवाददाता

रांची। राज्य में दिन-प्रतिदिन ठंड में बढ़ोत्तरी हो रही है। लगातार चल रही हवा से ठंड काफी बढ़ गयी है। राजधानी रांची में शुक्रवार को सुबह कोहरा छाया रहा। ठंडी हवाओं की वजह से कनकनी बढ़ गई। दिन ढलने के बाद आसमान साफ हो गया लेकिन ठंड के असर में कोई कमी नहीं देखी गयी। मौसम विभाग ने तापमान में अभी और गिरावट की उम्मीद जताई है।

मौसम केंद्र ने शुक्रवार को चेतावनी जारी करते हुए कहा है कि 15 दिसंबर तक तीन जिलों के लोगों को शीतलहर का सामना करना पड़ेगा। रांची से सटे रामगढ़ के साथ बोकारो और धनबाद जिले में भी कहीं-कहीं शीतलहर चलेगी। न्यूनतम तापमान में अभी कोई बड़ा बदलाव होता नहीं दिख रहा है लेकिन दो दिन तक इसके सामान्य से 2 से 4 डिग्री सेंटीग्रेड कम रहने का अनुमान है।

इस संबंध में रांची मौसम केंद्र के वैज्ञानिक अभिषेक आनंद ने शुक्रवार को बताया कि पिछले 24 घंटे के दौरान झारखंड का मौसम शुष्क रहा। सबसे कम न्यूनतम तापमान 7.9 डिग्री सेंटीग्रेड पलामू के डाल्टेनगंज में दर्ज किया गया। सबसे अधिक उच्चतम तापमान 29 डिग्री सेंटीग्रेड चाईबासा में रहा। अगले पांच दिनों तक सुबह में कोहरा रहेगा। तापमान लगभग दो से चार डिग्री तक गिरने का संभावना है।

सप्ताह में दो दिन फील्ड विजिट पर रहेंगे कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग के उच्चाधिकारी : शिल्पी नेहा तिर्की

बिभा संवाददाता

रांची। कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने शुक्रवार को नेपाल हाउस में पहली विभागीय समीक्षा के बाद अधिकारियों को निर्देश दिया कि विभाग के उच्च अधिकारी सप्ताह में दो दिन फील्ड विजिट पर रहेंगे। इसका उद्देश्य ग्राउंड लेबल पर विभाग की योजनाओं की हकीकत जानना है। अधिकारी विभाग के बंद कमरों से बाहर निकलकर धरातल पर योजनाओं की हकीकत को समझने का काम करेंगे।

दिनभर चली मैराथन बैठक के बाद मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा कि समीक्षा बैठक में विभाग के सामने चुनौतियों को चिह्नित करते हुए उसके समाधान की दिशा में बढ़ने पर चर्चा हुई है। इसके साथ विभागीय बजट को लेकर भी अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए गए हैं। मंत्री ने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि वो खुले विचार से लोगों के सुझाव को ग्रहण करने की सोच को अपनाये। उन्होंने कहा कि विभाग ग्रामीण हाट बाजार को विकसित करेगी। ग्रामीण इलाकों में जर्जर हाट बाजार को दुरुस्त करने के लिए विभाग राशि खर्च करने पर भी सहमति बनी है। विभाग की योजनाओं की संपूर्ण जानकारी के लिए ब्लॉक स्तर पर योजना कैलेंडर जारी करने का निर्देश दिया गया है।

दरअसल, योजना की सही जानकारी के अभाव में लाभुकों तक विभाग की योजना का लाभ नहीं पहुंचा पाता है। समीक्षा बैठक के दौरान केंद्र सरकार की योजनाओं को लेकर अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दे दिया गया है। मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि केंद्र सरकार की योजना का पहले विभागीय स्तर पर समीक्षा की जाएगी। योजना को लेकर विभागीय सहमति बनने के बाद विभाग उस पर काम करेगी।

कुंभ में एकता का ऐसा महायज्ञ होगा जिसकी चर्चा पूरी दुनिया में होगी : मोदी

एजेंसी

प्रयागराज। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को यहां सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान 5500 करोड़ रुपये की 167 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण किया। इस दौरान प्रधानमंत्री पूरी तरह से कुंभ के रंग में रंगे दिखे। उन्होंने संबोधन में कई श्लोक के जरिए प्रयागराज और कुभ की महिमा का बखान किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस महाकुंभ से एकता का संदेश निकलेगा, भाषा, जाति और क्षेत्र का कोई भेद नहीं होगा। यहां सब एक होंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि अगर मुझे इस महाकुंभ का वर्णन करना हो तो मैं कहूंगा कि एकता का ऐसा महायज्ञ होगा जिसकी चर्चा पूरी दुनिया में होगी। इस आयोजन की भव्य एवं दिव्य सफलता की शुभकामनाएं देता हूं। हमारा भारत पवित्र नदियों और तीर्थस्थलों का देश है। इन नदियों के प्रवाह की जो पवित्रता है, अनेकानेक तीर्थों का जो महत्व है, उनका संगम, उनका समुच्चय, संयोग, प्रभाव प्रताप प्रयाग है। यह केवल तीन पवित्र नदियों का संगम

ही नहीं है।

श्लोक के साथ प्रधानमंत्री ने कहा कि जब सूर्य मकर में प्रवेश करते हैं सभी दैवीय शक्तियां प्रयाग में आ जाती हैं। प्रयागराज की प्रशंसा वेदों में भी किया गया है। उन्होंने प्रयाग के पवित्र स्थलों का जिक्र करते हुए गुणगान किया। यह वह धरती है जहां धर्म, अर्थ, कम और मोक्ष सुलभ है। मुझे आशीर्वाद है कि यहां बार-बार आने का सौभाग्य मिलता है। आज हमने लेटे हुए हनुमान जी का दर्शन किया। अक्षय वट का पूजन किया। इन दोनों स्थलों पर कॉरिडोर का निर्माण हो रहा है। यहां हजारों करोड़ की परियोजनाओं का लोकार्पण हुआ है। आप सबको इसके लिए बधाई देता हूं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सैकड़ों साल की गुलामी का कालखंड रहा हो या कोई अन्य विपरीत परिस्थिति, आस्था का यह प्रवाह कभी नहीं रुका। यह इसलिए संभव हुआ है क्योंकि कुंभ में आना स्वतः चेतना की प्रेरणा से होता है। ऐसा संगम शायद ही दुनिया में कहीं मिलता है। यहां ज्ञानी, अज्ञानी, छोटे-बड़े, जातियों का भेद मिट जाता है। सब एक हो जाते हैं। इस बार भी यहां अलग-अलग राज्यों से करोड़ों लोग जुटेंगे। उनकी भाषा, मान्यताएं अलग हो सकती हैं लेकिन यहां सब एक हो जाएंगे। इसीलिए मैं कहता हूं कि यह एकता का महाकुंभ होगा। एक भारत श्रेष्ठ भारत की तस्वीर महाकुंभ पेश करता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि कुंभ में देश की स्थिति परिस्थिति पर संत महात्माओं का जुटान होता है। वे बैठकर चर्चा परिचर्चा करते थे। समाज की समस्याओं का हल निकालने का संदेश देते थे। आज भी वह प्रवाह चल रहा है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि कुंभ का इतना महत्व होने के बावजूद पहले की सरकारों में इस पर ध्यान नहीं दिया गया। श्रद्धालु कष्ट उठाते रहे लेकिन उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ा। उनका सनातन भारतीय संस्कृति से लगाव नहीं था। आज की डबल इंजन की सरकार संस्कृति और सभ्यता को महत्व देने वाली हैं। इसलिए हजारों करोड़ की परियोजनाएं संचालित की जा रही हैं। अयोध्या, वारणसी, लखनऊ, रायबरेली से कनेक्टविटी को बेहतर किया गया है। हमारी सरकार ने विकास के साथ-साथ विरासत को भी समृद्ध बनाने पर फोकस किया है। आज देश के अलग-अलग हिस्सों में बौद्ध सर्किट, रामायण सर्किट जैसे अन्य सर्किट विकसित किए जा रहे हैं। अयोध्या के विकास के हम सब साक्षी हैं। विश्वनाथ धाम, महालोक की चर्चा आज विश्व में है। प्रयागराज का विकास इसी का प्रतीक है। हमारा यह प्रयागराज निषादराज की भी भूमि है। भगवान राम के मयार्दा पुरुषोत्तम बनने में एक महत्वपूर्ण पड़ाव श्रृंगवेरपुर भी है। केवट ने अपने प्रभु को सामने पाकर उनके पैर धोए थे। इसमें भगवान और भक्त की मित्रता का संदेश है।

चटवल मोड पर फिर हुआ सड़क हादसा, कार सवार हुआ घायल

चान्हो/बिभा संवाददाता। थाना क्षेत्र के एन एच 39 चटवल मोड़ के समीप गुरुवार शाम 6 बजे फिर एक सड़क दुर्घटना हुआ। इस हादसे में कर चालक घायल हो गया है। बताया जा रहा है कि लोहरदगा की ओर से रांची की ओर जा रहे एक कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गया। डिवाइडर से टकराते ही कार का एयरबैग खुल गया जिससे कर सवार की जान बच गई। मालूम हो कि बुधवार दोपहर उक्त स्थान पर हुए सड़क दुर्घटना में मां बेटे की मौत हो गई थी इस तरह से कहा जाए तो NH 39 चटवल मोड जानलेवा बन चुका है।

नर्सरी से कक्षा 4 बच्चों को को शौक्षिक भ्रमण कराया गया

रामगढ़/बिभा संवाददाता। श्री गुरु नानक पब्लिक स्कूल के कक्षा नर्सरी से कक्षा 4 बच्चों को फन केशल आदि का भ्रमण कराया गया। कक्षा से बाहर जाकर शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से हम प्रकृति और मनुष्य के सह- सम्बन्धों को बेहतर तरीक़े से समझ सकते हैं। बच्चों को तो अपने परिवेश की काफी सारी जानकारी होती है और उसी जानकारी को विषय व विषयवस्तु से जोड़ना और उसमें विस्तार करना शैक्षिक भ्रमण का मुख्य उद्देश्य है। श्री गुरु नानक पब्लिक स्कूल रामगढ़ के कक्षा नर्सरी से कक्षा 4 के विद्यार्थि शैक्षणिक भ्रमण पर शुक्रवार को छोटानागपुर फन केशल और रातु फोर्ट गये थे। इस दल में 8 शिक्षाक भी शामिल थे। प्रधानाध्यापक हरजाप सिंह के अनुसार शैक्षिक भ्रमण में बच्चे सीधे तौर पर चीज़ों को देखते हैं, जिससे उनका ज्ञान स्थायी होता है। भ्रमण पर जाकर बच्चे नई चीज़ें सीखते हैं और अपने ज्ञान को नए स्तर पर ले जाते हैं. इस भ्रमण के ज़रिए बच्चे अलग संस्कृति का अनुभव करते हैं और सांस्कृतिक जागरूकता हासिल करते हैं। भ्रमण पर जाकर बच्चे नए अनुभवों और चुनौतियों का सामना करते हैं, जिससे उनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित होती है। छोटानागपुर फन केशल जाकर बच्चों ने विभिन्न प्रकार के झुलों का आनंद लिया । रातु फोर्ट जाकर इतिहास से रूबरू हुए। किला कैसा होता है, कैसे क़िला राजाओं को सुरक्षित रखता था , पुराने समय में महल और क़िले के आकार कैसे हो तो थे यह सब कुछ की जानकारी ली। नई चीज़ें सीखी और प्रकृति के प्रति सम्मान को विकसित किया। विद्यालय आने वाले दिनों में इस प्रकार के भ्रमण का आयोजन करता रहेगा।

16वीं झारखंड स्टेट फेंसिंग चैंपियनशिप का हुआ शुभारंभ

रांची/बिभा संवाददाता। 16 वीं झारखंड स्टेट फेंसिंग चैंपियनशिप का शुक्रवार को शुभारंभ हुआ. रांची के दलादली स्थित आइडियल इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित इस तीन दिवसीय प्रतियोगिता का उद्घाटन मुख्य अतिथि सह विद्यालय की डायरेक्टर सम्बुल आलम, फेंसिंग राज्य संघ के महासचिव जय कुमार सिन्हा, विशिष्ठ अतिथि स्कूल की प्रिंसिपल मंजू बग्गा, विद्यालय के प्रबंधक प्रणय कुमार और डॉ आशुतोष कुमार ने संयुक्त रूप से किया. मौके पर सभी अतिथियों को पुष्प गुच्छ और शॉल देकर सम्मानित किया गया. उद्घाटन कार्यक्रम में स्कूल के छात्राओं ने संस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए. साथ ही स्कूल के बच्चों के सामने फेंसिंग का प्रदर्शनी मुकाबला भी खेला गया. बता दें इस प्रतियोगिता में राज्य भर के विभिन्न जिलों से 150 से अधिक प्रतिभागी भाग ले रहे हैं. 15 दिसंबर को सेमीफाइनल और फाइनल प्रतियोगिता होगी और पुरस्कार वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन होगा. महासचिव जय कुमार सिन्हा ने कहा कि इस राज्यस्तरीय प्रतियोगिता से चुने गए सभी पदक विजेता खिलाड़ियों को राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिस्सा लेने का मौका मिलेगा. उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य रुप से राज्य संघ के कोषाध्यक्ष करमबीर उरांव, स्कूल प्रबंधक प्रणय कुमार, चीफ रेफरी रामाशीष सिंह सभी सक्रिय टेक्निकल पदाधिकारी और रेफरी मौजूद थे। आज के परिणाम में सब्रे गर्ल्स (अंडर 10) 1. सिखा उरांव - रांची, 2. दिव्यांका कुमारी - रांची, 3. मुस्कान छेत्री - रांची, 4. मधुलता - रांची। सब्रे बॉयज (अंडर 10) 1. रेयांश सिंह - रांची, 2. हर्ष शर्मा - रामगढ़, 3. प्रियांश उरांव - रांची, 4. आर्ष तिर्की - रांची। ईपी बॉयज (अंडर 10) 1. अर्पण टोप्पो - रांची, 2. ओम कुमार साहू - रांची, 3. समर उरांव - रांची, 4. कुणाल कुमार - रांची। फॉइल गर्ल्स (अंडर 10) 1. अदिति कुमारी - रामगढ़, 2. दीपिका राज - रांची, 3. नियति भगत - रांची।

जिला स्तरीय राष्ट्रीय युवा महोत्सव का हुआ आयोजन

रामगढ़/बिभा संवाददाता। स्वामी विवेकानंद की जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय युवा महोत्सव का आयोजन किया जाना है। इसी क्रम में 13 दिसंबर को रामगढ़ जिले में जिला स्तर पर आयोजित राष्ट्रीय युवा महोत्सव का शुक्रवार को उपायुक्त रामगढ़ चंदन कुमार ने रामगढ़ शहर अंतर्गत मैक्स बीएड कॉलेज में शुभारंभ किया। इस दौरान उपस्थित सभी को संबोधित करते हुए उपायुक्त ने सभी को देश के विकास में युवाओं के महत्वपूर्ण योगदान के प्रति जानकारी देते हुए सभी के साथ स्वयं के अनुभवों को साझा किया। उपायुक्त ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए यह सबसे जरूरी है कि आप निरंतर मेहनत करें अगर आप सभी किसी भी क्षेत्र को चिन्हित कर लगातार उस दिशा में मेहनत करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी। मौके पर उपायुक्त ने सभी को अपने मित्र सोच समझ कर बनाने एवं अच्छी संगत में रहने पर जीवन में आने वाली सफलताओं के प्रति जागरूक किया। इस दौरान उन्होंने सभी से नशे से सावधान रहने एवं किसी भी हालत में नशीली पदार्थों के सेवन से दूर रहने का संदेश दिया।

राज्य के सभी शिक्षण संस्थानों को तम्बाकू मुक्त बनाने के लिये कार्यशाला का हुआ आयोजन

बच्चों को तम्बाकू उत्पाद बेचा तो होगा 1 लाख का जुर्माना और 7 साल का जेल

बिभा संवाददाता

रामगढ़। जिले के सभी शिक्षण संस्थानों को तम्बाकू मुक्त बनाने हेतु जारी दिशा-निर्देशों के क्रियान्वयन तथा तम्बाकू मुक्त युवा अभियान 2.0 हेतु शुक्रवार स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा सोशियो इकोनॉमिक एण्ड एजुकेशनल डेवलॉपमेंट सोसाईटी (सीड्स) के तकनीकी सहयोग से एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान अतिरिक्त जिला कार्यक्रम पदाधिकारी नलिनी रंजन ने कार्यशाला में उपस्थित सभी पदाधिकारीयों, प्राचार्यों, शिक्षकों का स्वागत किया तथा कार्यशाला के उद्देश्यों के बारे में बताया। जिला शिक्षा पदाधिकारी कुमारी नीलम ने अपने संबोधन में कहा कि तम्बाकू सेवन की आदत जनस्वास्थ्य के लिए एक बड़ी समस्या के रुप में

वैश्विक स्तर पर उभर रहा है। अतः तंबाकू सेवन के दुष्परिणाम के प्रति अवयस्क और युवा वर्ग में जागरूकता फैलाना बहुत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हम सब की जिम्मेदारी है कि अपने आनेवाले भविष्य की चिंता करते हुए युवाओं और अवयस्कों को तम्बाकू की लत से दूर रखा जाये। उन्होंने बताया कि स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड सरकार के मार्गदर्शन में सोशिओ इकोनॉमिक एण्ड एजुकेशनल डेवलपमेंट सोसायटी (सीड्स) झारखण्ड द्वारा "तम्बाकू मुक्त शैक्षणिक संस्थान (ToFEI) के दिशा-निर्देशों के अनुरूप क्रियान्वयन हेतु साकारात्मक प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि सीड्स झारखण्ड के सहयोग से स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा राज्य के सभी शिक्षण संस्थानों को तम्बाकू मुक्त घोषित कराने हेतु आज हमारे रामगढ़ जिले में इस कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है एवं क्रमवार इस कार्यशाला का आयोजन राज्य के सभी जिलों में किया जाएगा। सीडस के कार्यक्रम समन्वयक रिम्पल झा ने तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम की आवश्यकता के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। उन्होने बताया कि तम्बाकू का उपयोग पूरी दुनियाँ के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। लेकिन इसका कारोबार और उपयोग विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में ज्यादा तेजी से बढ रहा है। तम्बाकू उत्पाद से बच्चे, अवस्क एवं युवा वर्ग के लोगों को बचाये जाने की आवश्यकता है। ग्लोबल यूथ टोबैको सर्वे (2019) द्वारा सम्पूर्ण विश्व में युवाओं द्वारा तम्बाकू सेवन से संबंधित जो आंकड़ें संकलित किये गये हैं वह यह दर्शाता है कि भारत में 13-15 वर्ष के 8.5 प्रतिशत छात्रगण किसी न किसी प्रकार के तम्बाकू का उपयोग कर रहे हैं वहीं झारखण्ड मे यह 5.1 प्रतिशत है जो चिन्ता का विषय है। श्री झा ने बताया कि पिछले 7-8 वर्षों से झारखण्ड सरकार और सीड्स ने मिलकर राज्य एवं जिला स्तर पर तम्बाकू सेवन को नियंत्रित करने के लिए काफी प्रभावी कदम उठाये हैं। उन प्रयासों का प्रतिफल गेट्स 2 के रिपोर्ट में देखने को मिला था, जिसके मुताबिक हमारे राज्य में तम्बाकू सेवन करने वालों का प्रतिशत 50 .1 % से घट कर 38.9 % पर आ गया था। लेकिन हम अभी भी राष्ट्रीय औसत (28.6%) से काफी ऊपर हैं। उन्होंने कहा कि तम्बाकू सेवन से हर साल देश में लगभग 13 लाख लोगों की मौत हो रही है। तम्बाकू सेवन से खास तौर पर बच्चों, अवयस्कों एवं युवा वर्ग के लोगों को बचाये जाने की आवश्यकता है। उन्होने कहा प्रायः ऐसा देखा जाता है कि राज्य के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के आस-पास तम्बाकू उत्पाद जैसे कि सिगरेट, बीडी. पान मसाला, जर्दा एवं खैनी इत्यादि की बिक्री की जाती है।

पांच लाख सदस्य बनाएगी भाजपा ओबीसी मोर्चा : डॉ अमरदीप यादव

बिभा संवाददाता

रांची। भारतीय जनता पार्टी पिछड़ा जाति मोर्चा झारखंड प्रदेश की संगठन पर्व सदस्यता अभियान हेतु एक कार्यशाला हरमू स्थित प्रदेश कार्यालय में आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष डॉ अमरदीप यादव ने किया।

भाजपा प्रदेश के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ रविंद्र कुमार राय ने कार्यकर्ताओं से कहा कि ओबीसी वर्ग के प्रबुद्धजनों को भी भाजपा का सदस्य बनाना है, एक बड़ी आबादी इस वर्ग की है जो राष्ट्र के विकास में अहम भूमिका अदा करती है।

झारखंड से लोकतंत्र विरोधी, राष्ट्र विरोधी, विकास विरोधी ताकतों से लड़ने के लिए भाजपा संगठन को निरंतर गति देने हेतु नए सदस्यों को जोड़ना आवश्यक है। भाजपा केवल चुनाव के लिए नहीं है बल्कि समाज के हर वर्ग को राष्ट्र की प्रगति में भागीदार बनाने के लिए संकल्पित है।

प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने कहा कि भाजपा राष्ट्रवादी

विचारों की संवाहक और कार्यकर्ता आधारित पार्टी है। इसलिए सदस्यता अभियान संवैचारिक लोगों की संख्या बढ़ाने का माध्यम है। 15-16 दिसंबर को जिला कार्यशाला और 18-19 दिसंबर को सभी 515 कार्यशाला है। 22 दिसंबर 2024 से सदस्यता अभियान विधिवत शुरुआत होगी। 25 दिसंबर को पूर्व प्रधानमंत्री सह झारखंड निर्माता स्व अटल बिहारी वाजपेयी जयंती पर प्रत्येक बूथ पर कम से कम 100 सदस्य बनाना है। उसके बाद सक्रिय सदस्य बनाने की प्रक्रिया शुरू होगी। भाजपा को 59 लाख से अधिक सदस्य बनाना है जिसमे ओबीसी मोर्चा को 5 लाख सदस्य बनाने का लक्ष्य दिया गया है। सदस्यता अभियान के संयोजक भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष राकेश प्रसाद ने कहा कि यह मात्र एक अभियान नहीं बल्कि संगठन महापर्व है। जिसे कार्यकर्ता अन्य पर्व की तरह पूरे उत्साह और पारिवारिक वातावरण में मनाती है। ओबीसी वर्ग का साथ भारतीय जनता पार्टी को सदा मिलता रहा है। इसलिए मोर्चा की जिम्मेदारी है कि वे इस अभियान में समान विचारधारा के लोगों को पार्टी से जोड़ने का अभियान चलाए। यह संगठन का नियमित कार्य है जिसके माध्यम से संगठन को मजबूती मिलती है, जिसमे कार्यकर्ताओं को अपनी नेतृत्व क्षमता दिखाने का मौका मिलता है। स्वागत भाषण एवं विषय प्रवेश में डॉ अमरदीप यादव ने कहा कि ओबीसी मोर्चा अपने स्थापना काल से संगठन और चुनाव कार्यों में पूरी निष्ठा से मेहनत किया, विगत विधानसभा चुनाव में भी ओबीसी मोर्चा नेअपनी जिम्मेदारी निभाई। आगे भी पार्टी द्वारा दिया गया सदस्यता लक्ष्य को पूरा करने में पूरी ईमानदारी के साथ कार्य करेगी। वर्तमान में झारखंड सरकार नगर निकाय चुनाव में ओबीसी को आरक्षण है नहीं देना चाहती इसलिए चुनाव टाल रही है, ओबीसी मोर्चा इसके लिए चरणबद्ध आंदोलन करेगी। भाजपा प्रदेश आईटी सेल के संयोजक राहुल अवस्थी ने पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन को प्रोजेक्टर के माध्यम से सदस्यता अभियान के ऑनलाइन और ऑफलाइन की तकनीकी विषयों को बताया।

जिला परिवहन पदाधिकारी के नेतृत्व में चलाया गया सघन वाहन जांच अभियान

बिभा संवाददाता

रामगढ़। परिवहन व्यवस्था को सुगम बनाने एवं ओवरलोडिंग परिवहन पर रोक लगाने के उद्देश्य से उपायुक्त,रामगढ़ चंदन कुमार के निर्देशानुसार गुरुवार एवं शुक्रवार को जिला परिवहन पदाधिकारी मनीषा वत्स के नेतृत्व में जिलें के विभिन्न चौक चौराहे पर सघन वाहन जांच अभियान चलाया गया।

गुरुवार एवं शुक्रवार को जांच के दौरान कुल 30 से 35 बड़े वाहनों की जांच की गई जिसमें 15 वाहनों के कागजात अधूरे पाए गए उन सभी वाहनों के वाहन चालकों से नियम संगत जुर्माना की वसूली की गई जिसमे लगभग कुल 422153 रुपया जुर्माना वसूल किया गया। उन्होंने बताया की जांच के दौरान 15 बड़ी वाहनों का पेपर फ़ेल, फिटनेस, टैक्स फेल, ओवरलोड, ओवरहाइट एवं रिफ्लेक्टिव टेप नही लगा होने के कारण लगभाग 422153 रुपये का जुर्माना लगाया गया। जांच अभियान के दौरान जिला परिवहन पदाधिकारी द्वारा जिले के अलग-अलग क्षेत्र में चार पहिया व दो पहिया वाहनों की भी जांच की गई जांच के दौरान हेलमेट, ड्राइविंग लाइसेंस, इंश्योरेंस, ट्रिपल लोडिंग आदि की भी जांच की गई मौके पर उन्होंने सभी अभिभावकों से अपील भी किया कि 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को वाहन चलाने ना दे और जिनकी उम्र 18 वर्ष से अधिक है वह वाहन चलाते समय सेफ्टी रूल का अनुपालन जरूर करें। जांच के दौरान उन्होंने बताया की अभियान आगे भी जारी रहेगा। जिन वाहनों का परमिट, बीमा, फिटनेस, प्रदूषण, ओवरहाइट, ओवरलोड सहित रिफ्लेक्टिव टेप लगा हुआ नहीं मिलेगा उन वाहनों पर कार्रवाई के साथ जुर्माना भी लगाया जाएगा।

राजधानी का सुंदरीकरण एवं विकास किया जायेगा: सचिव

बिभा संवाददाता

रांची। नगर विकास एवं आवास विभाग के प्रधान सचिव सुनील कुमार ने राजधानी रांची को उसके नाम एवं गरिमा के अनुरूप् विकसित करने का जुडको को निर्देश दिया है। प्रधान सचिव ने शुक्रवार को प्रोजेक्ट भवन में कार्यालय कक्ष में हुई बैठक के क्रम में यह निर्देश दिया। जुडको की ओर से प्रथम चरण में कचहरी चौक और उपायुक्त कार्यालय के आसपास के इलाकों की सुदंरीकरण एवं विकास के लिए तैयार किये गये खाका का प्रस्तुतिकरण प्रधान सचिव के समक्ष किया गया। प्रधान सचिव ने प्रस्तुतिकरण देखने के बाद कहा कि कचहरी चौक की ही तरह शहर के अन्य प्रमुख क्षेत्रों के विकास एवं सौंदर्यीकरण से

संबंधित प्रस्ताव जल्द तैयार किया जाये। शहर के प्रमुख केंद्र कचहरी क्षेत्र में विभिन्न सरकारी कार्यालय है जिससे यातायात का भारी दबाव रहता है। इसे सुगम बनाने के लिए समेकित विकास के प्रस्तावों का प्रस्तुतिकरण किया गया। वर्तमान में मौजूद सड़कों का चौड़ीकरण , सुंदरीकरण, फुटपाथ का निर्माण और ड्रेनेज प्रणाली तथा लाइटिंग का प्रावधान कर इस परिक्षेत्र को आकर्षक बनाया जायेगा। इसके तहत उपायुक्त कार्यालय , आयुक्त कार्यालय के आगे पीछे , आयुक्त कार्यालय से लाइनटैंक तालाब , शारदा बाबू लेन सहित अन्य संपर्क पथों को समेकित विकास की योजना तैयार की गयी है। प्रधान सचिव ने निर्देश दिया कि जो भी सरकारी खाली जमीन और पुराने सरकारी भवन हैं उनका विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर उनके समक्ष प्रस्तुत किया जाये। उन्होंने कहा कि रिपोर्ट में 24 घंटे आमलोगों को उपलब्ध होने वाली जनसुविधाओं का उल्लेख किया जाये। वाकिंग मार्केट, पार्क, वृक्षारोपण तथा लाइटिंग का प्रावधान किया जाये जिससे शहर की हृदयस्थली में बसे इस कचहरी क्षेत्र का दृश्य खूबसूरत दिखे।

किसान धान अधिप्राप्ति केंद्र पर ही करें धान की बिक्री : उपायुक्त

बिभा संवाददाता

रामगढ़। खाद्य सार्वजनिक वितरण एवं उपभोक्ता मामले विभाग झारखंड सरकार से प्राप्त निर्देश के आलोक में खरीफ विपणन मौसम 2024 - 25 के तहत 15 दिसम्बर 2024 से धान अधिप्राप्ति का कार्य शुरू होना है। इस संबंध में उपायुक्त, रामगढ़ चंदन कुमार ने रामगढ़ जिला अंतर्गत सभी किसानों से अपील करते हुए कहा है कि वे किसी भी हालत में बिचौलियों से सावधान रहे एवं अपने नजदीकी धान अधिप्राप्ति केंद्र पर ही धान की बिक्री करें। साथ ही उन्होंने जिला एवं प्रखंड स्तरीय अधिकारियों को विभिन्न माध्यमों का इस्तेमाल करते हुए सभी किसानों को इसके प्रति जागरूक करने का निर्देश दिया है। इस वर्ष किसानों से क्रय किए जाने वाले धान के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य 2300 प्रति क्विंटल के दर से

निर्धारित है एवं बोनस के रूप में प्रति क्विंटल 100 भी दिए जाने हैं। इस तरह प्रति क्विंटल धान के लिए किसानों को 2400 का भुगतान किया जाएगा वहीं धान की बिक्री करते ही 50 फीसदी राशि तत्काल रूप से पीएफएमएस के माध्यम से किसानों को भुगतान कर दी जाएगी। रामगढ़ जिले में धान अधिप्राप्ति कार्य के लिए अलग-अलग प्रखंडों में कुल 24 पैक्स केंद्रों निर्धारित हैं जिसमें गोला प्रखंड में 5, चितरपुर प्रखंड में 3, रामगढ़ में 2 दुलमी में 5 पतरातू में 4 एवं मांडू 5 पैक्स के केंद्रों को चिन्हित किया गया है।

मुख्यमंत्री से मिला युवा कांग्रेस का प्रतिनिधिमंडल

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से युवा कांग्रेस का एक प्रतिनिधिमंडल रोहित सिन्हा के नेतृत्व में मिलकर उन्हें नई सरकार के लिए शुभकामनाएं दी। युवा कांग्रेस नेताओं ने मुख्यमंत्री से मांग किया कि झारखंड के युवाओं को रोजगार और बेहतर शिक्षा सुविधा मुहैया कराए। जिससे कि राज्य के युवाओं को अन्य प्रदेशों में नहीं जाना पड़े। इसके साथ ही युवाओं को राज्य में शिक्षा ग्रहण करने में खर्च भी कम आएगा। नेताओं ने सभी क्षेत्र में मुख्यमंत्री द्वारा किए जा रहे जनहित व विकास के कार्यों की सराहना की। रोहित ने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की सोच का ही परिणाम है कि आज लाखों महिलाओं को मईया योजना का लाभ मिल रहा है।

आईडब्ल्यूईआई 2024 में टाटा स्टील को लगातार चौथे वर्ष गोल्ड एम्प्लॉयर

बिभा संवाददाता

रांची। टाटा स्टील को इंडिया वर्कप्लेस इक्वेलिटी इंडेक्स (आई डब्ल्यू ई आई) 2024 में लगातार चौथे वर्ष गोल्ड एम्प्लॉयर के रूप में मान्यता मिली है। यह सम्मान एलजीबीटी+ समावेशन के प्रति कंपनी की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। आई डब्ल्यू ई आई ने टाटा स्टील की नीतियों, नियोजन प्रक्रियाओं और बाहरी संचार में विविधता और समावेशन को प्रभावी रूप से शामिल करने के लिए इसकी उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की है।

टाटा स्टील ने एक समावेशी कार्यस्थल बनने की दिशा में अपनी यात्रा को एचआर नीतियों, प्रक्रियाओं और संगठनात्मक संस्कृति के हर पहलू में व्यापक और प्रभावशाली प्रयासों के साथ आगे बढ़ाया है। कंपनी ने प्रगतिशील नीतियां अपनाई हैं, जिनमें एलजीबीटी+ पार्टनर्स के

लिए समान लाभ शामिल हैं। ये लाभ केवल चिकित्सा कवर तक सीमित नहीं हैं, बल्कि हनीमून पैकेज, कर्मचारियों के लिए जेंडर ट्रांजिशन सपोर्ट, और जेंडर-न्यूट्रल पेरेंटल लीव्स जैसी सुविधाएं भी प्रदान करते हैं।

समावेशी नियुक्ति प्रक्रियाओं के साथ, टाटा स्टील ने एलजीबीटी+ समुदाय के लिए एक सहायक नेटवर्क तैयार करने हेतु कर्मचारी संसाधन समूहों (ईआरजी) को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया है। कंपनी ने स्वीकृति और समझ की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए आउटरीच कार्यक्रमों, सामुदायिक पहलों और साझेदारियों में भी सक्रिय भूमिका निभाई है।

अत्रयी सन्याल, वाइस प्रेसिडेंट, ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट, टाटा स्टील ने कहा कि लगातार चौथे वर्ष इंडिया वर्कप्लेस इक्वेलिटी इंडेक्स द्वारा गोल्ड एम्प्लॉयर के रूप में मान्यता प्राप्त करना हमारे लिए एक सम्मान की बात है। हमने न केवल समय के साथ विकसित नीतियां अपनाई हैं, बल्कि जागरूकता बढ़ाने, सहयोग को प्रोत्साहित करने और निरंतर संवाद के लिए मजबूत तंत्र भी विकसित किए हैं, ताकि एक ऐसा कार्यस्थल बनाया जा सके जो हर व्यक्ति की विशिष्टता का सम्मान और स्वागत करता हो।हम मानते हैं कि विविधता और समावेशन केवल हमारे मूल्य नहीं हैं, बल्कि नवाचार और व्यवसायिक सफलता के महत्वपूर्ण आधार भी हैं। यह उपलब्धि एक समावेशी कार्यस्थल बनाने की हमारी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जहां हर व्यक्ति को सम्मान, महत्व और अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने का अवसर मिलता है।

टाटा स्टील का डाइवर्सिटी और इन्क्लूजन (डी एंड आई) कार्यक्रम जून 2015 में 'मोज़ेक' नामक डाइवर्सिटी ग्रुप के साथ आकार लेने लगा। मोज़ेक का उद्देश्य जेंडर डाइवर्सिटी, दिव्यांगजनों (पीडब्ल्यूडी), एलजीबीटीक्यू+, और अफर्मेटिव एक्शन ग्रुप्स के समावेश को बढ़ावा देना है। यह कार्यक्रम पांच प्रमुख स्तंभों पर केंद्रित हैः जागरूकता, आधारभूत संरचना, नियोजन, बरकरार रखना और विकास, तथा जश्न। कंपनी की विज़न के अनुरूप, जो सभी विविध समूहों के लिए एक समावेशी कार्यस्थल तैयार करना चाहती है, टाटा स्टील ने मई 2018 में 'विंग्स' नामक एलजीबीटी+ एम्पलाई रिसोर्स ग्रुप की शुरुआत की।

दिसंबर 2019 में, कंपनी ने अपनी डाइवर्सिटी और इन्क्लूजन (डी एंड आई) नीति का विस्तार किया, जिसमें एलजीबीटीक्यू+ समुदाय के साथियों को अपने पार्टनर्स की घोषणा करने और कानून के तहत सभी एचआर लाभ प्राप्त करने की अनुमति दी गई। इसके तहत, पार्टनर्स की परिभाषा को विस्तारित किया गया, जिसमें समलैंगिक जोड़े को भी वैवाहिक जोड़ी के रूप में शामिल किया गया। विस्तारित डी एंड आई नीति के तहत, टाटा स्टील के कर्मचारियों और उनके पार्टनर्स को स्वास्थ्य जांच, चिकित्सा लाभ, घर के लिए संयुक्त अंक, गोद लेने की छुट्टी, नवजात माता-पिता अवकाश, बच्चों की देखभाल के लिए छुट्टी, और कर्मचारी सहायता कार्यक्रम में शामिल होने जैसे कई लाभ प्राप्त करने की अनुमति दी गई।

उपायुक्त ने किया शहर अंचल कार्यालय का औचक निरिक्षण

बिभा संवाददाता

रांची। सभी कर्मचारी कार्यालय समय से आएं और बायोमेट्रिक हाजिरी बनाना सुनिश्चित करें। आवेदन स्वीकृति के पश्चात् ही अवकाश पर जाएं। कार्यालय को साफ रखें। दाखिल- ख़ारिज मामलों के निष्पादन में तेजी लाएं। उपायुक्त रांची मंजूनाथ भजन्त्री ने उक्त निर्देश आज शहर अंचल कार्यालय में सभी पदाधिकारियों और कर्मचारियों को दिया।

उपायुक्त रांची मंजूनाथ भजन्त्री ने 13 दिसंबर को संध्या समय शहर अंचल कार्यालय का औचक निरीक्षण किया। सर्वप्रथम उपायुक्त ने कार्यालय में उपस्थित कर्मियों की उपस्थिति पंजी और बायोमेट्रिक उपस्थिति की जांच की। कार्यालय में अनुपस्थित पाए गए एक लिपिक एवं राजस्व कर्मचारी को शो-कॉज़ करने का निर्देश उपायुक्त ने दिया। उपायुक्त मंजुनाथ भजंत्री ने अंचल अधिकारी मुंशी राम से दाखिल-खारिज के लंबित मामलों की जानकारी ली और पंजी- 2 के परिशोधन पोर्टल के कार्य में तेजी लाने का निर्देश दिया।

उपायुक्त ने अंचल कार्यालय परिसर का भ्रमण किया। उन्होंने अंचल अधिकारी को कार्यालय के आधारभूत संरचना को अधिक सुदृढ़ बनाने का निर्देश दिया।

उपायुक्त ने सभी अंचल कर्मियों को दक्षता-पूर्वक और पूरी पारदर्शिता के साथ जन कर्तव्यों का निर्वहन करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने कहा कि सभी कर्मचारी समय से कार्यालय आएं। अपने कार्यालय को साफ-सुथरा रखें। उन्होंने कहा कि सभी कर्मचारियों के कार्यालय आगमन-प्रस्थान के समय की जांच बायोमेट्रिक हाजिरी से होगी।

संक्षिप्त खबरें

जन आरोग्य केंद्र, सीसीएल ने निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का किया आयोजन

रांची/बिभा संवाददाता। कांके नगड़ी बस्ती में जन आरोग्य केंद्र, सीसीएल द्वारा एक निःशुल्क लेप्रोसी (चर्म रोग) सहित अन्य बिमारियों को लेकर जाँच शिविर का आयोजन किया गया। उक्त शिविर में विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा 175 मरीजों की जाँच की गयी और उन्हें निःशुल्क चिकित्सीय सलाह दी गई। शिविर में विशेषकर चर्म रोग, हीमोग्लोबिन, ब्लड शुगर, हाइपरटेंशन इत्यादि का निःशुल्क जाँच किया गया। ज्ञात हो कि सीसीएल देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए कोयला उत्पादन के साथ-साथ अपने कर्मियों एवं हितधारकों के स्वास्थ्य के प्रति सजग रहते हुए इस तरह का निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन समय-समय पर करते रहती है। शिविर के सफल आयोजन में सीएमएस, सीसीएल, डॉ. रत्नेश जैन; सीएमओ, सीएसआर इंचार्ज, डॉ. प्रीती तिग्गा; डॉ. अनीता होरो; डॉ. अम्बरीष कुमार; डॉ. दीपाली रमेश समरीत, डॉ. प्रियंका झा; डॉ. शिल्पी झा; डॉ. अंशु एवं पारा मेडिकल स्टाफ का सराहनीय योगदान रहा।

हैकथॉन-2024 में विनर रही एसबीयू की टीम

रांची/बिभा संवाददाता। सरला बिरला विश्वविद्यालय की टीम ने स्मार्ट इंडिया हैकथॉन-2024 के ग्रैंड फिनाले में जीत दर्ज किया है। प्रतियोगिता का आयोजन भारत सरकार द्वारा 11 से 12 दिसंबर को देश के विभिन्न नोडल केंद्रों पर किया गया था। एसबीयू ने आईआईटी जम्मू में जीत हासिल की। विवि की हैकथॉन-2024 के डॉ. मनोज पांडे और आदित्य विक्रम वर्मा ने बताया कि सहायक शिक्षक रवींद्र नाथ के मार्गदर्शन में विजेता टीम में शशांक पांडेय, पलक पाठक, गौरव पात्रा, काजल लकड़ा, रानी श्री एवं सिद्धार्थ महतो शामिल थे। टीम को पुरस्कारस्वरूप एक लाख रुपए की राशि तथा खिलाड़ियों को मेडल और प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये। एसबीयू के प्रतिकुलाधिपति बिजय कुमार दलान, सांसद डॉ. प्रदीप कुमार वर्मा, महानिदेशक प्रो. गोपाल पाठक, कुलपति (प्रभार) श्रीधर बी. डांडीन, कुलसचिव प्रो. विजय कुमार सिंह एवं डीन इंजीनियरिंग डॉ. पंकज गोस्वामी ने एसबीयू की टीम की इस सफलता पर हर्ष व्यक्त करते हुए खिलाड़ियों को बधाई दी है।

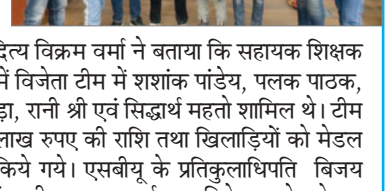

झारखंड प्रदेश कृषक मित्र महासंघ का हुआ पुनर्गठन, शशि भगत बने प्रदेश अध्यक्ष

रांची/बिभा संवाददाता। मोरहाबादी मैदान के नीलांबर पीताम्बर पार्क में झारखंड प्रदेश कृषक मित्र महासंघ की बैठक हुई। बैठक में प्रदेश कमेटी भंग की गई साथ ही कमेटी का पुनर्गठन किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से निर्विरोध शशि कुमार रौनियार प्रदेश अध्यक्ष अध्यक्ष चुने गए वहीं सुभाष सिंह को प्रदेश महासचिव और राजेश प्रजापति को सचिव बनाया गया। तत्पश्चात् उपस्थित जिला अध्यक्षों ने बुके दे कर स्वागत किया और बधाई दिया। आगामी बैठक में प्रदेश कमेटी विस्तार होगी। निर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष शशि कुमार रौनियार ने कहा कि जल्द ही कृषि मंत्री शिल्पा नेहा तिर्की से कृषक मित्र को लेकर बैठक की जाएगी जिसमें सभी बिंदुओं पर कृषि मंत्री से विचार विमर्श किया जाएगा। उन्होंने कहा कि कृषि मंत्री से वार्ता हुई है जिसमें उन्होंने जल्द ही कृषक मित्रों के प्रतिनिधिमंडल के साथ वार्ता करने की बात कही है साथ ही उन्होंने कृषक मित्रों को लेकर काफी सकारात्मक वार्ताएं की। मौके पर जिला अध्यक्ष दुःखभंजन निराकार, प्रकाश महतो,धर्मेन्द्र यादव, प्रमोद उरांव, कर्मदयाल साहु, अक्षय दे ,बिक्की राज, जगदीश महतो, अवनीत सिंह, रामोतार यादव सहित काफी संख्या में कृषक मित्र मौजूद रहे।

68वीं राष्ट्रीय स्कूल खेल प्रतियोगिता में झारखंड की बेटियों ने लहराया परचम

रांची/बिभा संवाददाता। 68वीं राष्ट्रीय स्कूल खेल प्रतियोगिता 2024-25 अंतर्गत अंडर 14 बालिका वर्ग हॉकी प्रतियोगिता में झारखंड की बेटियों ने शानदार प्रदर्शन किया है। मध्य प्रदेश के मंदसौर में दिनांक 9 दिसंबर, 2024 से 13 दिसंबर, 2024 तक आयोजित अंडर 14 बालिका वर्ग राष्ट्रीय हॉकी प्रतियोगिता में झारखंड की बालिका टीम ने मेजबान मध्य प्रदेश को 2-0 से पराजित कर चैंपियन का खिताब अपने नाम कर लिया है। झारखंड की ओर से सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस, सिमडेगा की छात्रा राजमुनि कुमारी ने खिताबी मुकाबले में पहला गोल किया। वहीं, सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस, बरियातू की छात्रा सुगन सांगा ने दूसरा गोल कर जीत झारखंड की झोली में डाल दी। इस टीम में आरती बड़ाइक कोच और एम्मा बारा टीम मैनेजर की भूमिका में है। झारखंड की शानदार जीत पर माननीय मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के माननीय मंत्री रामदास सोरेन, विभागीय सचिव उमाशंकर सिंह, राज्य शिक्षा परियोजना निदेशक शशि रंजन, राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी धीरसेन सोरेंग समेत खेल प्रभाग के अन्य पदाधिकारियों ने पूरी टीम को बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

धान अधिप्राप्ति केन्द्र में ही जिले के किसान बेंचे धान : उपायुक्त

बिभा संवाददाता

रांची। खरीफ विपणन मौसम 2024-25 में 15 दिसंबर से धान अधिप्राप्ति का कार्य प्रारंभ होगा। उपायुक्त, मंजूनाथ भजंत्री ने इसे लेकर जिले के किसानों को जागरुक एवं निबंधित करने के निर्देश दिये हैं। उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री ने जिला आपूर्ति पदाधिकारी, जिला कृषि पदाधिकारी, जिला सहकारिता पदाधिकारी, सभी प्रखण्ड विकास पदाधिकारी/अंचल अधिकारी एवं कृषक मित्रों को किसानों के बीच जागरुकता कार्यक्रम चलाकर यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। वो अपना धान बिचौलिये के माध्यम से अथवा खुले बाजार में न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम मूल्य पर न बेचें। उन्होंने कहा कि किसानों को निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य एवं राज्य सरकार द्वारा घोषित बोनस की जानकारी दें। उपायुक्त ने जागरुकता कार्यक्रम के दौरान सभी अंचल अधिकारियों को वैसे किसान जो उपार्जन पोर्टल में निबंधित नहीं हैं, उन्हें निबंधित करने के भी निर्देश दिये हैं। खाद्य, सार्वजनिक वितरण एवं उपभोक्ता मामले, झारखण्ड सरकार के निर्देशानुसार खरीफ विपणन मौसम 2024-25 में 15 दिसंबर से धान अधिप्राप्ति का कार्य प्रारंभ होगा। इस वर्ष किसानों से क्रय किये जानेवाले धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2300 रुपये प्रति क्विंटल एवं राज्य सरकार द्वारा 100 रुपये प्रति क्विंटल बोनस सहित कुल 2400 प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। रांची जिला अंतर्गत 42 धान अधिप्राप्ति केन्द्र के रुप में लैम्प्स को चिन्हित किया गया है, जिन्हें 10 राइस मिलरों के साथ टैग किया गया है। उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री के निर्देशानुसार इन सभी केन्द्रों में उपकरणों का अधिष्ठापन, मानव बलों की प्रतिनियुक्ति आदि तैयारियां पूरी की जा चुकी हैं।

- उपायुक्त ने खरीफ विपणन मौसम 2024-25 में धान क्रय करने हेतु किसानों को जागरुक एवं निबंधित करने के दिये निर्देश
- किसानों से क्रय किये जानेवाले धान का बोनस सहित न्यूनतम समर्थन मूल्य 2400 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित
- 15 दिसंबर 2024 से जिले के 42 केन्द्रों में धान अधिप्राप्ति का कार्य होगा प्रारंभ

42 अधिप्राप्ति केन्द्रों पर होगा धान क्रय

रांची जिला अंतर्गत 42 धान अधिप्राप्ति केन्द्र के रुप में लैम्प्स को चिन्हित किया गया है, जिन्हें 10 राइस मिलरों के साथ टैग किया गया है। उपायुक्त श्री मंजूनाथ भजंत्री के निर्देशानुसार इन सभी केन्द्रों में उपकरणों का अधिष्ठापन, मानव बलों की प्रतिनियुक्ति आदि तैयारियां पूरी की जा चुकी हैं।

- उपायुक्त, मंजूनाथ भजन्त्री ने जनता दरबार में लोगों से की मुलाकात
- लोगों की समस्याओं के निष्पादन के लिए संबंधित पदाधिकारियों को दिये निर्देश

ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के लोगों की सुनी समस्याएं

रांची। उपायुक्त मंजूनाथ भजन्त्री ने जनता दरबार में लोगों से मुलाकात की। उपायुक्त जिले के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं से अवगत हुए। एक-एक कर सभी की समस्याओं को सुनते हुए उन्होंने आश्वस्त किया कि संज्ञान में आए सभी शिकायतों की जाँच कराते हुए जल्द से जल्द समाधान किया जाएगा। जनता दरबार में विभिन्न आवेदन शिकायत के रूप में आये, जो कि विभिन्न विभागों से संबंधित थे।

फोटो फ्रेम

राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से कुमार विवेक, निदेशक, जीआर एण्ड डिजाइन के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल ने भेंट की। शिष्टमंडल ने राज्यपाल को 20-22 दिसंबर तक आड्रे हाउस, राँची में आयोजित होने वाले फिल्म फेस्टिवल के उद्घाटन समारोह में आमंत्रित किया।

राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से शुक्रवार को इंदु अग्रवाल, प्रधान महालेखाकार (अंकेक्षण), झारखण्ड ने राज भवन में शिष्टाचार भेंट की। वार्ता के क्रम में राज्यपाल को उनके द्वारा राज्य के विभिन्न लोक उपक्रमों के लंबित अंकेक्षण से अवगत कराया।

राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से शुक्रवार को असीम कृष्ण दास, परियोजना निदेशक, भक्तिवेदांत विद्याभवन गुरुकुल, रांची के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल ने राज भवन में भेंट की। शिष्टमंडल ने राज्यपाल को आगामी गीता महोत्सव कार्यक्रम हेतु आमंत्रित किया।

प्रदीप यादव ने कांग्रेस भवन रांची में अपना पदभार ग्रहण किया

बिभा संवाददाता

रांची। कांग्रेस विधायक दल नेता चुने जाने के बाद प्रदीप यादव एवं उप नेता राजेश कच्छप का अभिनंदन कांग्रेस भवन रांची में कांग्रेस नेता एवं कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया एवं नेताद्वय ने अपना पदभार ग्रहण किया।

इस अवसर पर प्रदीप यादव ने शीर्ष नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जिम्मेवारियां सभी बड़ी होती हैं। विधायक दल का नेता बनाए जाने पर प्रयास करेंगे कि 100% खरा उतरे। कांग्रेस ने राहुल गांधी के नेतृत्व में जिस लड़ाई को पूरे देश में छेड़ा है,सबको अधिकार दिलाना,कांग्रेस के विचारों को मजबूती से फिर से स्थापित करना समाज के सभी वर्गों में और फिर कांग्रेस के संगठन को मजबूत करना यही प्राथमिकता होगी।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में सरकार ऐसी बैठी है,जो देश विरोधी है,जन विरोधी है,गरीब विरोधी है,उसे कुर्सी से बेदखल करना है। हम प्रयास करेंगे कि अपनी बातों को मजबूती रखें।उन्होंने कहा कि तमाम विधायकों से और आला नेताओं के साथ मिलकर रोड मैप तैयार करेंगे और निश्चित रूप में सफलता हासिल करेंगे।

मुझे जो जिम्मेवारी मिली है उसके अनुरूप,जो संगठन का स्वरूप है,हमारे जितने विधायक है सब मिलकर संगठन को मजबूत करेंगे।अपने विचार को कैसे प्रत्येक घर तक पहुंचाए, कांग्रेस को कैसे मजबूत करें। ताकि देश को एक विकल्प दे सके,इस राज्य में हम उस दिशा में बढ़ेंगे।उन्होंने कहा कि परिश्रम करने वालों का रास्ता अपने आप चौड़ा होता है। कठिन परिश्रम ईमानदारी से काम करने से सफलता मिलती है और हमें मिलेगी।

झारखंड में फिर से हुई जंगल राज की वापसी : डॉ रविंद्र कुमार राय

बिभा संवाददाता

रांची। भाजपा कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष एवम पूर्व सांसद डॉ रविंद्र कुमार राय ने आज प्रदेश कार्यालय में प्रेसवार्ता कर हेमंत सरकार पर बड़ा निशाना साधा।

डॉ राय ने कहा कि बड़े परिश्रम से भाजपा सरकार ने राज्य में उग्रवाद पर नकेल कसा था।उग्रवादी संगठन राज्य पर कार्रवाई के कारण या तो उनलोगों ने आत्म समर्पण किया,या केंद्रीय सुरक्षा बलों की गोलियों के शिकार हुए। उनके दुरूह कैंप ध्वस्त किए गए थे। पहाड़ों जंगलों को छोड़ वे राज्य से बाहर अन्यत्र जाने को मजबूर हुए थे। उन्होंने कहा कि हाल के दिनों में राज्य के विभिन्न जिलों पूर्वी सिंहभूम,पश्चिमी सिंहभूम, चतरा आदि में घटी घटनाओं ने यह अहसास करा दिया है कि राज्य फिर से जंगलराज की चपेट में आ रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य गठन के पूर्व बिहार के समय में उग्रवादी झारखंड क्षेत्र में अपनी शरण लेते थे। राज्य के सांसद,विधायक,पूर्व मुख्यमंत्री के बेटे सहित आम आदमी की हत्या, खुलेआम लेवी वसूली,लगातार बंदी का आह्वान, उद्योग कर्मियों, व्यवसायियों से मोटी रकम की वसूली एक सामान्य बात हो गई थी। लेकिन केंद्र और राज्य की भाजपा सरकार ने इसपर कड़ाई से निपटने के सार्थक प्रयास किए थे,और उसके अच्छे परिणाम भी निकले। लेकिन आज फिर वैसे दृश्य का ट्रेलर दिखाई पड़ने लगा है। कहा कि राज्य की ग्रामीण जनता आत्म रक्षार्थ शस्त्र उठाने को मजबूर है। लोग ऐसे उग्रवादियों का सेन्दरा करने को मजबूर हैं। लोग रात रात भर फिर से जाग कर अपने जानमाल की सुरक्षा कर रहे। उन्होंने कहा कि ऐसे में यह शंका प्रबल हो गई है कि यह सरकार अपना चेहरा छुपाने केलिए ग्रामीणों पर कारवाई करेगी। उन्हें मुकदमों में फंसाया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य की विधि व्यवस्था नई सरकार जो केवल नया छलावा लेकर आई है जनता को सुरक्षा देने के बजाय डरा रही है। उन्होंने कहा कि हेमंत सरकार पहली ऐसी निकम्मी और भयग्रस्त सरकार है जिसने राज्य में 24 असुरक्षित सड़कों की घोषणा की है। कहा कि सरकार और पुलिस प्रशासन स्तर से ऐसी घोषणाएं ध्वस्त विधि व्यवस्था का जीता जगता उदाहरण है। उन्होंने कहा कि उग्रवादी बालू घाट,छोटे छोटे माइंस,कोयला , पत्थर से वसूली केलिए फिर से जनता,व्यवसायों को भयभीत कर रहे।

कांग्रेस मीडिया प्रभारी राकेश सिन्हा ने कसा तंज

रांची। भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष रविंद्र राय पर तंज कसते हुए कांग्रेस के मीडिया प्रभारी राकेश सिन्हा ने कहा कि भाजपा को राज्य की कानून व्यवस्था पर सवाल उठाने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। श्री राय को याद रखना चाहिए कि जब राज्य अलग़ हुआ तो राज्य में किस प्रकार बाबूलाल ने आग लगाने का काम किया और पहला कर्फ़्यू लगा एक डीएसपी की हत्या हो गई उसके बाद भाजपा शासन में ही सांसद सुनील महतो, विधायक महेंद्र सिंह, डिप्टी मेयर नीरज सिंह, की हत्या इस बात की पुष्टि करता है कि उनके शासन में कानून व्यवस्था से उपर अपराधी थे। सिन्हा ने कहा कि महागठबंधन सरकार की संजीदगी यह है कि जिस बूढ़ा पहाड़ पर नक्सलियों का खौफ और आतंक का साया छाया रहता था आज वहां विकास की लौ जल रही है।

राजद अभिनंदन समारोह में लिया गया चार से चौदह बनाने का संकल्प

बिभा संवाददाता

रांची। झारखंड प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल कार्यालय में नवनिर्वाचित झारखंड सरकार के माननीय मंत्री तथा माननीय विधायकगण के सम्मान में युवा राजद के प्रदेश अध्यक्ष रंजन कुमार यादव के अध्यक्षता में अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें झारखंड राजद ने प्रदेश अध्यक्ष सह हुसैनाबाद विधायक संजय कुमार सिंह यादव, गोड्डा विधायक सह झारखंड सरकार के मंत्री संजय प्रसाद यादव, देवघर विधायक सुरेश पासवान, विश्रामपुर विधायक नरेश प्रसाद सिंह का अभिनंदन सह स्वागत किया गया। आज के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजद के वरिष्ठ नेता पूर्व मंत्री भारत सरकार सह झारखंड प्रभारी जयप्रकाश नारायण यादव उपस्थित रहें। झारखंड प्रभारी जयप्रकाश नारायण यादव ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि झारखंड में राजद को इंडिया गठबंधन में छः सीटें मिली थीं जिसमें चार सीटों पर विजय पताका लहराया तथा दो सीट मामूली अंतर से खोना पड़ा और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में विशाल बहुमत के साथ दोबारा इंडिया गठबंधन सरकार बनी।यह जीत राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव के विचारधारा एवं युवा सम्राट तेजस्वी यादव के विचारों की जीत है।यह जीत भाजपा के विध्वंसकारी साजिशों साम्प्रदायिक शक्तियों भाई से भाई को लड़ाने वालों पर हैं।यह जीत झारखंड की साढ़े तीन करोड़ सम्मानित जनता की है। श्री यादव ने आगे कहा कि झारखंड में राजद के अच्छे प्रदर्शन का श्रेय राजद के प्रदेश अध्यक्ष संजय कुमार सिंह यादव के कुशल नेतृत्व तथा युवा राजद के अध्यक्ष रंजन कुमार यादव के मेहनत की है जिन्होंने ने पूरे प्रदेश में दौरा कर युवाओं को जोड़ने का काम कर संगठन को मजबूत बनाया साथ ही राजद के लाखों कार्यकर्ताओं और चाहने वालों को जाता है।

सर्वांगीण विकास के लिए खेलकूद में भागीदारी जरूरी: डॉ अग्रवाल

बिभा संवाददाता

रांची। खेलकूद में भाग लेने से केवल शारीरिक विकास ही नहीं बल्कि बौद्धिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास भी होता है एवं वह युवा जीवन में आने वाली भावी चुनौतियां का बेहतर ढंग से सामना करने में समर्थ बनता है। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय का निदेशक छात्र कल्याण डॉ बीके अग्रवाल ने शुक्रवार को रांची कृषि महाविद्यालय की दोदिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हुए उक्त विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि सर्वांगीण विकास के लिए खेलकूद में भागीदारी जरूरी है। उन्होंने कहा कि छात्र-छात्राओं में जो खेल भावना, अनुशासन एवं समन्वय भाव खेलकूद के दौरान रहता है वह सालों भर और प्रत्येक गतिविधि में रहना चाहिए। विद्यार्थी सुबह से मैदान में दिखेंगे तो खेलकूद संबंधी सारी सुविधाएं मुहैया की जाएंगी। कम से कम 25-30 प्रतिशत विद्यार्थियों को जरूर खेलकूद में भाग लेना चाहिए। आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ शंभूनाथ कर्मकार ने कहा कि कॉलेज का प्लेग्राउंड सालों भर साफ सुथरा एवं मेंटेंड रहना चाहिए तथा यहां लाइट की भी समुचित व्यवस्था रहनी चाहिए ताकि शाम में भी विद्यार्थी खेल सकें। कृषि महाविद्यालय के क्रीड़ा प्रभारी डॉ नीरज कुमार ने निदेशक छात्र कल्याण से आग्रह किया कि अनुबंध के आधार पर एक कोच की नियुक्ति यथाशीघ्र की जाए जो विद्यार्थियों को नियमानुसार प्रैक्टिस करा सके। संचालन डॉ अरुण कुमार तिवारी ने किया।

पत्रकारों से ही भिड़े जयराम महतो, वीडियो हो रहा वायरल

रांची। झारखंड के छठे विधानसभा का पहला सत्र खत्म हो गया है। लेकिन पहली बार जीत कर विधानसभा पहुंचे डुमरी विधायक जयराम महतो लगातार अपने बयानों और तेवर से चर्चा में रहे। गुरुवार को सत्र के अंतिम दिन वह विधानसभा के बाहर पत्रकारों से ही भिड़ गए। हुआ ये कि जब जयराम महतो बात कर रहे थे तभी उन्होंने कहा कि नेताओं को निजी आवास नहीं क्वार्टर लेना चाहिए और पब्लिक सेवा जैसे ट्रेन और बस से सदन आना चाहिए। इसपर पत्रकार ने कहा कि दिल्ली में केजरीवाल भी यही बोलते थे लेकिन वो भी सारी सेवाएं ले रहे हैं। इसपर जयराम पत्रकारों पर ही बिफर पड़े. जयराम लगतार सदन के अंदर और बाहर उग्र हैं। जयराम लगातार पत्रकार को ऊंगली दिखाकर बात करते रहे और यही नहीं जयराम ने यहां तक कह दिया कि आपको मेरा इंट्रव्यू लेना है तो लें नहीं तो छोड़ दें।

चेंबर ऑफ कॉमर्स के प्रतिनिधिमंडल ने की एयरपोर्ट निदेशक के साथ वार्ता

बिभा संवाददाता

रांची। बिरसा मुंडा एयरपोर्ट से यात्री सुविधा में बढोत्तरी को लेकर अध्यक्ष परेश गट्टानी के नेतृत्व में फेडरेशन ऑफ झारखण्ड चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रतिनिधिमंडल ने एयरपोर्ट डायरेक्टर आर.आर मौर्या से मुलाकात की। चैंबर अध्यक्ष परेश गट्टानी ने एयरपोर्ट पर पार्किंग की लगातार मिल रही शिकायतों के निराकरण का आग्रह किया जिसपर एयरपोर्ट डायरेक्टर ने जल्द ही एयरपोर्ट पर पार्किंग की पुरानी व्यवस्था लागू करने की बात कही। यात्रियों की सुविधा हेतु सीविल एवीयेशन उप समिति के चेयरमेन दिनेश प्रसाद साहू और श्रवण राजगढिया ने संयुक्त रूप से बिरसा मुंडा एयरपोर्ट से कुछ प्रमुख शहरों जयपुर, गोवा, रायपुर, बनारस, बागडोगरा, गुवाहाटी और सूरत के लिए फ्लाइट सेवा शुरू करने का आग्रह किया। चैंबर के सुझाव पर एयरपोर्ट डायरेक्टर ने सभी एयरलाइंस आपरेटर्स से वार्ता करने का आश्वासन दिया। विंटर सीजन में घने कुहासे के कारण अक्सर फ्लाइटों के रद्द होने अथवा डायवर्ट होने से यात्रियों को होनेवाली परेशानी पर प्रतिनिधिमंडल ने चिंता जताई और सुझाया कि अत्याधुनिक उपकरणों को लगाकर विंटर में भी आवागमन सामान्य रखा जाय। चैंबर के आग्रह पर एयरपोर्ट निदेशक ने कहा कि कई सारे उपकरण हमारे पास उपलब्ध हैं किंतु भूमि की अनुपलब्धता के कारण उनका इंस्टॉलेशन नहीं हो पा रहा है। जैसे ही भूमि एयरपोर्ट को हस्तांतरित की जायेगी एक माह के अंदर ही सारे उपकरण लगाकर इस समस्या का समाधान कर दिया जायेगा। एयरपोर्ट डायरेक्टर ने यात्रियों से अपील करते हुए कहा कि वे प्राइवेट नंबर वाली टैक्सी का इस्तेमाल ना करें क्योंकि एयरपोर्ट प्रशासन उनका कोई रिकॉर्ड नहीं रखता है। सुरक्षा मानकों का ध्यान रखते हुए यात्री केवल निबंधित टैक्सी आपरेटर्स से ही टैक्सी की बुकिंग करायें। उन्होंने यह भी अपील की कि यात्री अधिक से अधिक डीजी यात्रा का इस्तेमाल करें ताकि चेक-इन में कम समय लगे। एयरपोर्ट पर अब बैगेज एक्स-रे के लिए अत्याधुनिक आईएलबीएस मशीन लगा दी गई है जिससे यात्रियों को एक्सरे नहीं कराना पडता है। यात्री यह सुनिश्चित करें कि वे अपने चेक-इन बैगेज में कोई भी बैटरीचालित उपकरण नहीं रखें अन्यथा अनावश्यक परेशानी होगी। बैठक के दौरान उन्होंने अपने भविष्य की योजनाओं से भी अवगत कराया।

प्रतिनिधिमंडल में चैंबर अध्यक्ष परेश गट्टानी, महासचिव आदित्य मल्होत्रा, सह सचिव विकास विजयवर्गीय, नवजोत अलंग, कोषाध्यक्ष रोहित अग्रवाल, कार्यकारिणी सदस्य शैलेष अग्रवाल, अमित शर्मा, सीविल एवीयेशन उप समिति चेयरमेन दिनेश प्रसाद साहू और श्रवण राजगढिया शामिल थे। उक्त जानकारी प्रवक्ता सुनिल सरावगी ने दी।

बरियातू क्षेत्र के विभिन्न जन वितरण प्रणाली दुकानों का हुआ निरीक्षण

बिभा संवाददाता

रांची। उपायुक्त-सह-ज़िला दंडाधिकारी, रांची मंजूनाथ भजंत्री के निदेशानुसार 13 दिसंबर को विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी, रांची मोनी कुमारी द्वारा बरियातू क्षेत्र के जन वितरण प्रणाली दुकानों का निरीक्षण किया गया। वार्ड संख्या 01 एवं 09 के विभिन्न जन वितरण प्रणाली दुकानों का निरीक्षण करते हुए उन्होंने उपस्थित राशन कार्डधारियों से भी बातचीत की। कार्डधारियों द्वारा बताया गया कि प्रत्येक माह खाद्यान्न का वितरण ससमय हो रहा है। कुछ कार्ड धारी द्वारा चना दाल वितरण नहीं होने की बात कही गई, जिस पर विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी द्वारा संबंधित पीडीएस डीलर को चना दाल वितरण सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया। मोनी कुमारी ने सभी पीडीएस डीलर को वर्तमान माह का खाद्यान्न वितरण जल्द से जल्द सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया।

बीपीसीएल प्रबंधन मजदूरों और स्थानियों का शोषण बंद करें : सचिन

बिभा संवाददाता

बोकारो : आजसू जिलाध्यक्ष सचिन महतो के नेतृत्व में विभिन्न मांगों को लेकर शुक्रवार को बोकारो औधोगिक क्षेत्र स्थित बीपीसीएल बॉटलिंग प्लांट के मुख्य गेट के समीप एकदिवसीय हल्ला बोल धरना-प्रदर्शन किया गया. धरना को सम्बोधित करते हुए सचिन महतो ने कहा कि बीपीसीएल प्लांट यहां के विस्थापित रैयतों की जमीन पर स्थापित है. लेकिन प्रबंधन ने न तो किसी विस्थापित को नियोजन दिया है, और न ही किसी तरह की सुविधा प्रदान करने का काम किया है. कहा कि प्लांट में झारखंड के बाहर के लोगों को

नौकरी पर रखा जा रहा है, जिससे यहां के स्थानीय लोगों के रोजगार पर असर पड़ रहा है. हमारे यहां के युवा बेरोजगारी का दंश झेल रहे है, रोजी-रोटी के लिए प्रदेश पलायन को विवश है. कहा कि प्लांट द्वारा फैल रहे गैस प्रदूषण (दुर्गंध) से आसपास रह रहे लोग पीड़ित है. जो की हानिकारक है. यहां रह रहे बच्चे बुजुर्ग एवं महिला की सेहत पर इसका काफी प्रभाव पड़ रहा. कहा कि प्रबंधन ने समय रहते हमारी मांगों पर साकारात्मक पहल नहीं किया तो आगे उग्र आंदोलन होगा. आवश्यकता पड़ी तो हम गेट जाम भी करने से पीछे नहीं हटेंगे. कार्यक्रम में अंत में बालीडीह थाना इंस्पेक्टर नवीन कुमार सिंह की उपस्थिति में आजसू जिलाध्यक्ष सचिन महतो ने बीपीसीएल प्लांट के संवेदक कोषांग इंटरप्राइजेज के अधिकारी अमित पांडेय को 6 सूत्री मांगपत्र सौंपा.
जिसमें मुख्य मांगे स्थानीय युवाओं को कुशलता के आधार पर रोजगार उपलब्ध कराने, सभी मजदूरों को ईपीएफ भुगतान करने, सभी मजदूरों को ईएसआईसी की सुविधा प्रदान करने. सभी मजदूरों से निर्धारित समय से ज्यादा समय तक काम करवाने की प्रथा बंद करने, प्लांट द्वारा आसपास में फैल रहे प्रदूषण (गैस का गंध) की रोकथाम के लिए व्यवस्था करने, अंतर्राज्यिक प्रवासी मजदूर अधिनियम 1979 का सख्ती से अनुपालन करने की मांग शामिल है।
इस दौरान सुमित्रा सिंह, नीता देवी, बासमती देवी, रेखा देवी, सहोदरी देवी, मंजू देवी, कल्पना देवी, अनीता देवी, मालती देवी, शांति देवी, बीरेंद्र हरि, रमेश सिंह, तापेश महतो, सरयू महतो, मुन्ना ओझा, अजीत रजवार, अजय गोस्वामी, खुर्दूस अंसारी, रामलाल सोरेन, अखिलेश पांडेय, विजय पांडेय, विकाश सिंह, हर्ष तिवारी, राजीव पांडेय, नवीन सिंह सहित अन्य मौजूद थे ।

संक्षिप्त खबरें

वेदन्ता ने उच्च विद्यालय मधुनियॉ में जरूरतों के सामग्री का किया वितरण

बोकारो(बिभा) : चास प्रखण्ड के मधुनियॉ पंचायत में वृहस्पतिवार को इलेक्ट्रोस्टील वेदन्ता सीएसआर विभाग के द्वारा उत्क्रमित उच्च विद्यालय मधुनियॉ में स्मार्ट बायो टॉयलेट , शुद्ध पेयजल मशीन, वृक्ष रोपण एवं छात्राओं के बीच स्कूली बैग का वितरण किया गया, इस मौके पर जिला शिक्षा पदाधिकारी प्रतिमा दास, ईएसल सीएसआर एजीएम प्रदीप द्विवेदी, बिस्वस अधिकारी गण, उत्क्रमित उच्च विद्यालय मधुनियॉ के प्राध्यापक सुरेश झा मधुनिया पंचायत के मुखिया प्रदीप कुमार एवं स्कूल के छात्र, छात्राऐं स्टाप आदि लोग उपस्थित थे ।

जैप 4 में तीन दिवसीय शूटिंग प्रतियोगिता का हुआ समापन

बोकारो(बिभा) : झारखण्ड सशस्त्र पुलिस-4, बोकारो परिसर में 19 वीं राज्य स्तरीय पुलिस शूटिंग प्रतियोगिता - 2024 का समापन समारोह का आयोजन किया गया समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में राज कुमार लकड़ा,पुलिस महानिरीक्षक, झारखण्ड सशस्त्र पुलिस, राँची उपस्थित रहे । मुकेश कुमार, संगठन सचिव सह-समादेष्टा, जैप-4, बोकारो द्वारा इस अवसर पर स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। इस प्रतियोगिता में 1. झा०स०पु०, क्षेत्र 2. कोयला क्षेत्र, बोकारो 3. कोल्हान क्षेत्र, चाईबासा 4. पलामू क्षेत्र, पलामू 5. उत्तरी छोटानागपुर क्षेत्र, हजारीबाग 6. दक्षिणी छोटानागपुर क्षेत्र, राँची 7. संथाल परगना क्षेत्र, दुमका एवं 8. झारखण्ड जगुआर, अपराध अनुसंधान विभाग, रेल एवं विशेष शाखा क्षेत्र की कुल 08 टीम एवं 148 प्रतिभोगियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में 5.56 एम०एम० इन्सास रायफल, 9 एम०एम० रिवाल्वर पिस्टल तथा 9 एम०एम० कार्रबाईन से विभिन्न पोजिशनों से प्रतियोगिता कराया गया एवं इस प्रतियोगिता में ओवरऑल चैम्पियन टीम प्रथम स्थान झा०स०पु० क्षेत्रीय टीम । द्वितीय स्थान झारखण्ड जगुआर, अपराध अनुसंधान विभाग,रेल/विशेष शाखा की सम्मलित टीम । तृतीय स्थान - कोयला क्षेत्र, बोकारो । साथ ही प्रत्येक इभेन्ट में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले पुलिसकर्मियों को मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया गया। सभी टीम मैनेजर एवं सभी उपस्थित पुलिस उपाधीक्षक स्तर के पदाधिकारी को भी पुरस्कृत करते हुए प्रशिस्त पत्र प्रदान किया गया। इस प्रतियोगिता में चयनित प्रतिभागी ऑल इंडिया पुलिस शूटिंग प्रतियोगिता में भाग लेंगे। समापन समारोह के अवसर पर उपस्थित पुलिस पदाधिकारी की सूची नि राज कुमार लकड़ा, पुलिस महानिरीक्षक, राँची। सुरेन्द्र कुमार झा पुलिस उप महानिरीक्षक, कोयला क्षेत्र, बोकारो । विनीत कुमार, ए०आर०एम०, बोकारो । ओम प्रकाश दास, परिचारी प्रवर, राँची। परनव कुमार, परिचारी प्रवर, बोकारो। प्रदीप उराँव, पुलिस उपाधीक्षक, चाईबासा। अजय राम, अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी, बरवाडीह । चन्दन कुमार बत्स, पुलिस उपाधीक्षक, रामगढ़। इकुड डुंगडुंग, पुलिस उपाधीक्षक, दुमका। आर० के० तिवारी, पुलिस उपाधीक्षक, विशेष शाखा, राँची। सतीश चन्द्र झा, पुलिस उपाधीक्षक, झा०स०पु०-3, धनबाद । आलोक रंजन, पुलिस उपाधीक्षक, बोकारो । पतरस बरवा, पुलिस उपाधीक्षक, झा०स०पु०-4, बोकारो । राजवल्लभ पासवान, पुलिस उपाधीक्षक, रा०औ०सु०बल, बोकारो । मो० साजिद जफल, पुलिस उपाधीक्षक, रा०औ० सु०बल, बोकारो ।

डीएवी 4 दो दिवसीय अत्याधुनिक विज्ञान अंतरिक्ष प्रदर्शनी द कॉसमस स्पेस साइंस का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न

बिभा संवाददाता

बोकारो : डीएवी पब्लिक स्कूल सेक्टर-4 में दो दिवसीय अत्याधुनिक विज्ञान अंतरिक्ष प्रदर्शनी द कॉसमस स्पेस साइंस का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न ।
कार्यक्रम की शुरूआत श्री बीरेन्द्र कुमार तिवारी डायरेक्टर इंचार्ज बोकारो स्टील प्लांट के कर कमलों द्वारा रिबन काटकर एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। श्री बीरेन्द्र कुमार तिवारी डायरेक्टर इंचार्ज बोकारो स्टील प्लांट श्री बीरेन्द्र कुमार तिवारी ने बच्चों की मेहनत और लगन की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह बहुत ही अद्भुत विज्ञान अंतरिक्ष प्रदर्शनी है, जिसमें बच्चों ने जीवंत मॉडल के साथ-साथ कई ऐसे मॉडल भी प्रस्तुत किए हैं जिससे हम अभी तक अनभिज्ञ थे।इस प्रदर्शनी का उद्देश्य अंतरिक्ष विज्ञान को छात्रों के लिए जीवंत बनाना है, ताकि यह सुलभ और आकर्षक दोनों बन सके। अंतरिक्ष अन्वेषण में उनकी रुचि जगाकर, हम अगली पीढ़ी के वैज्ञानिकों और नवप्रवर्तकों को प्रेरित करने की उम्मीद करते हैं।
श्री बीरेन्द्र कुमार तिवारी का स्वागत स्वागतगान तथा प्राचार्य द्वारा पुष्पगुच्छ प्रदान कर किया गया। बच्चों द्वारा बहुत ही आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।
मुख्य अतिथि श्री बीरेन्द्र कुमार तिवारी ने बच्चों से वायजर-1, मार्स रोवर, आदित्य एल -1,डार्ट ,चंद्रयान -३ ,लॉन्च व्हीकल मार्क,अपोलो-11, चन्द्रयान-१,गगनयान, मार्स पाथ फाइंडर, आदित्य- एल-1,क्यूरोसिटी रोबर जैसे मोडलों पर विशद वार्ता की।
प्राचार्य श्री सर्बेंदु शेखर कर ने कहा कि प्रदर्शनी में छात्रों की उल्लेखनीय उपस्थिति अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति जिज्ञासा और जुनून जगाने में इसकी सफलता को दशार्ती है। इसरो और नासा को सफलतापूर्वक प्रदर्शित करना युवा मस्तिष्क को प्रेरित करने और अंतरिक्ष अन्वेषण की संभावनाओं में गहरी रुचि पैदा करने के लिए एक असाधारण मंच तैयार करता है।
डीएवी पब्लिक स्कूल सेक्टर -4 के बच्चों ने इसरो और नासा द्वारा किए गए विभिन्न अन्वेषणों की प्रदर्शनी लगाई। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग का जश्न मनाने वाली इस प्रदर्शनी में कई आकर्षक प्रदर्शन किए गए झ जिसमें जल रॉकेट प्रयोग और इंटरैक्टिव मॉडल से लेकर इसरो के इतिहास और नवीनतम परियोजनाओं पर गहन सत्र शामिल थे।
इस अवसर पर वाइस चेयरमैन श्री बीएस जायसवाल, एलएमसी के सदस्यगण एवं बोकारो जिला की विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य, इंचार्ज्स एवं विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने भाग लेकर डीएवी सेक्टर-4 के बच्चों की हौसला अफजाई की। अभिभावकगण भी बच्चों की इस सराहनीय प्रयास की भूरी-भूरी प्रसंशा किए।
कार्यक्रम की सफलता में विद्यालय प्रबंधन का बहुत बड़ा योगदान रहा। कार्यक्रम में विभिन्न प्रेस एवं मीडिया के सदस्यगण भी सम्मिलित हुए।

बोकारो विकास फोरम ने बीएसएल प्रबंधन पर लगाया दोहरा मापदंड अपनाने का आरोप

बिभा संवाददाता

बोकारो : बोकारो विकास फोरम की ओर से एक प्रेस वार्ता रखी गई इस प्रेस वार्ता में फोरम के अध्यक्ष अनिल सिंह ने कहां की दैनिक समाचार पत्रों में मजदूर नेता के अवैध निर्माण पर बीएसएल प्रबंधन द्वारा चिपकाए नोटिस पर मजदूर नेता ने कहा कि उन्हें मैनेजिंग डायरेक्टर के तरफ से निर्माण कार्य के लिए परमिशन दिया गया है बोकारो इस्पात संयंत्र के सारे मजदूर, मजदुर नेता, नगर वासी, एवं मीडिया के साथी नेताजी से विनती करते हैं कि बीएसएल के मैनेजिंग डायरेक्टर द्वारा दिए गए निर्माण कार्य परमिशन को सार्वजनिक करें अगर मैनेजिंग डायरेक्टर परमिशन दिए हैं तो बीएसएल के अधिकारी किस अधिकार से उनके निर्माण अधीन कार्य पर नोटिस चिपकाए हैं अगर उनके पास परमिशन है तो नोटिस चिपकाने वाले अधिकारियों को टर्मिनेट और सस्पेंड किया जाए इस

देश में एक कानून सबके लिए चलता है दोहरी कानून का पालन क्यों बीएसएनल मैनेजमेंट के द्वारा एक तरफ बिना नोटिस के फुटपाथ दुकानदारों को उनके स्वयं रोजगार को छीन लिया जाता है और बुलडोजर से उनकी जमा पूंजी को ध्वस्त कर दी जाती है वहीं दूसरी तरफ रसूखदार और पैसे वाले के सामने उन अधिकारियों की बुलडोजर रसूखदार नेता के फोन पर बीएसएल प्रबंधन के अधिकारी बुलडोजर वापस लेकर आ जाते हैं यहां के सांसद महोदय ने कहा था कि बोकारो के अस्थाई फुटपाथ दुकानदारों की एक भी किल उखड़ेगा तो बीएसएल को इट से इट बजा देंगे कहां गए सांसद महोदय बोकारो के फुटपाथ दुकानदार साथी उन्हें खोज रहे हैं जहां बीएसएल गरीब बेरोजगार दवे कुचले समाज के पिछड़े लोगों पर अतिक्रमण के नाम पर बुलडोजर चला रही है वहीं दूसरी तरफ रसूखदार लोगों का अतिक्रमण करवा कर तलवे चाट रही है बोकारो कोऑपरेटिव कॉलोनी हाउसिंग सोसायटी बीएसएल एंप्लॉई को आवासीय निर्माण कार्य के लिए दिया था आज उस हाउसिंग सोसाइटी में जहां बीएसएल प्रबंधन के द्वारा अधिकारी नियुक्त किए जाते हैं उस सोसाइटी में पूरे व्यापरीकरण चल रहा है दूसरी तरफ इंजीनियरिंग, मेडिकल, एवं सेवा ट्रस्ट के नाम पर सेल से लीज पर जमीन लेकर पूरी तरह से व्यापरीकरण चल रहा है और अवैध तरीके से निर्माण कर बीएसएल के अतिरिक्त जमीनों पर साल में करोड़ों का ट्रांजैक्शन हो रहा है सरकार के टैक्स का चोरी कर रहे लोग वहीं बीएसएल के अधिकारी अपना मंथली हिस्सा लेकर मौन बैठे हुए हैं इनकी दोहरी दडा नियम बोकारो विकास फोरम एवं बोकारो शहर वासी फुटपाथ दुकानदार संघ नहीं चलने देंगे बीएसएल प्रबंधन के खिलाफ बहुत जल्द आंदोलन होगा उनके अधिकारियों का पुतला दहन एवं उनके ऑफिस का घिराव बहुत जल्द किया जाएगा जिन सारी चीजों के जिम्मेवार बीएसएल के अधिकारी होगी प्रेस वार्ता में मुख्य रूप से उपस्थित थे।

महिला समिति ने कंबल, साबुन तथा सैनिटरी पैड्स का किया वितरण

बिभा संवाददाता

बोकारो : महिला समिति बोकारो की कार्यकारिणी दल बीएसएल के सी. एस.आर. विभाग के सहयोग से बोकारो के समीप स्थित ग्राम गोड़ाबाली में कंबल का वितरण किया. समिति की अध्यक्षा श्रीमती अनिता तिवारी ने ग्रामवासियों को स्वच्छता का महत्व बताया तथा दैनिक जीवन में इसका पालन कैसे हो समझाते हुए समिति द्वारा उत्पादित साबुन के अलावा युवतियों में सैनिटरी नैपकिंस का भी वितरण किया. यह कार्यक्रम गांव के मुखिया तथा बीएसएल सीएसआर के वरीय प्रबंधक श्री नीरज त्रिपाठी की मदद से सुचारू रूप से संपन्न हुआ. ग्रामवासियों ने समिति की सभी सदस्याओं का गीत संगीत तथा फूलों से स्वागत किया. इस अवसर पर समिति की उपाध्यक्ष श्रीमती प्रीति शरण,सचिव श्रीमती ऋचा प्रियदर्शिनी, सांस्कृतिक सचिव श्रीमती श्वेता कुमार, कोषाध्यक्ष श्रीमती अभिरुचि प्रिया, उप कोषाध्यक्ष अंजली, सुरभि प्रभारी अनीशा झा, सदस्यीय समिता मोहंती तथा आशा राज मिश्रा उपस्थित रहीं. समिति भविष्य में भी ऐसे नेक कार्य करने को तत्पर है.

बोकारो इस्पात नगर में सीसीटीवी कैमरा लगवाएं प्रबंधन

बिभा संवाददाता

बोकारो : बीएसएल अनाधिशासी कर्मचारी संघ ने निदेशक प्रभारी , बोकारो इस्पात संयंत्र को पत्र लिखकर पुरे नगर में सीसीटीवी कैमरा लगवाने का माँग किया है । अपने पत्र में यूनियन ने लिखा है कि एक तरफ एक निजी कंपनी सेल तथा बोकारो इस्पात संयंत्र को ग्रेट प्लेस टू वर्क की उपाधी से विभुषित कर रही है तो दूसरी तरफ बोकारो इस्पात नगर के विभिन्न सेक्टरो में निवासरत कर्मचारी तथा उनके परिवारजन चोरो/उच्चकों के आतंक से त्रस्त है ।पुलिस प्रशासन के साथ साथ नगर सेवा का सुरक्षा विभाग भी चोरो, उच्चकों के कारनामो के सामने लाचार है ।
घरो से किमती सामानो की चोरी, बाहर खड़े वाहनो की चोरी, चार पहिया वाहनो के टायरो की चोरी , महिलाओ के गले की चेन, मोबाईल की छिनतई आदि घटनाओ से सभी नगर वासी काफी भयभीत है । इन घटनाओ को तकनिकि के प्रयोग से नियंत्रित किया जा सकता है तथा इसको अंजाम देने वाले अपराधियों को पकड़ा भी जा सकता है । इसके लिए एक कमांड नियंत्रण कक्ष स्थापित कर पुरे बोकारो इस्पात नगर तथा इसके सभी प्रवेश , निकास वाले रास्ते पर सीसीटीवी कैमरा लगवाकर पुरे नगर की सुनियोजित निगरानी रखी जा सकती है ।जैसे नया मोड़ से लेकर बायपास सड़क तक , सेक्टर 12, 11, 9,8, 6, 1, 2,3,4,5 के सभी प्रवेश द्वार, प्रत्येक दो तीन स्ट्रीट पर एक सीसीटीवी कैमरा , प्रत्येक बाजार, बीजीएच के दोनो प्रवेश द्वार तथा पार्किंग, प्रत्येक हटिया, सिटी पार्क , मंदिर, मस्जिद, गूरुद्वारा, चर्च का प्रांगण , निजी विद्यालयों के सभी अगल बगल वाला रोड , सभी मार्केट आदि में सीसीटीवी लगाकर सभी संगठित या असंगठित अपराधो पर निगरानी रखा जा सकता है । सीसीटीवी के सफल संचालन से भारत के कई शहरो में अपराध दर में भारी गिरावट भी आई है तथा अपराधियों को पकड़ा भी गया है ।
अतः हमारी यूनियन आपसे माँग कर रही है कि बोकारो इस्पात नगर को कई जोन में बाँट कर सभी ऊचित जगहो पर सीसीटीवी कैमरा लगवाया जाय ताकि कर्मचारियो तथा उनके परिवार सहित सभी नगरवासी निर्भिक होकर जीवन व्यतीत कर सके ।
बीएसएल तथा अन्य कंपनियों के सीएसआर के पैसे से ही पुरे शहर में सीसीटीवी कैमरा लगवाया जा सकता है । बीएसएल कर्मचारी जितना नौकरी में कमा नही पाते है उससे कई गुणा अधिक उनके जीवन भर की कमाई , चोरो द्वारा लुट लिया जा रहा है । तकनिकि का इस्तेमाल से चोरी , छिनतई की घटना को रोका जा सकता है । सीसीटीवी कैमरा तथा उसका कंट्रोल रुम बनाने से चोरो , उच्चक्के की पहचान आसानी से किया जा सकता है । प्रत्येक माह कई आवासो से लाखो रुपया का किमती सामान चोरी हो रहा है ।

केन्द्र के स्ट्रीट वेंडर एक्ट को फुटपाथ दुकानदारों के लिए लागू करें प्रबंधन : कुमार अमित

बिभा संवाददाता

बोकारो : बोकारो स्टील प्लांट के ठेका मजदूरों, बेरोजगार युवाओं, फुटपाथ दुकानदारों, विस्थापितों सहित अन्य जनसमस्याओं को लेकर भाजपा के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य श्री कुमार अमित ने बीएसएल के अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) श्री राजन प्रसाद से प्रशासनिक भवन मे मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा। कुमार अमित ने श्री राजन प्रसाद से बोकारो में ट्रांसपोर्ट नगर के लिए गैर विवादित भूमि उपलब्ध कराने, ठेका मजदूरों को मेडिकल के नाम पर छँटनी न करने, राउरकेला स्टील प्लांट के तर्ज. पर स्थानीय सभी इच्छुक छात्रों को अप्रेंटिस की ट्रेनिंग कराने, चतुर्थ श्रेणी के पदों के विस्थापित एवं स्थानीय युवाओं के लिए पूर्व की भाँति आरक्षित करने, शेष उत्तरी विस्थापित गाँवों को पंचायत का दर्जा दिलाने हेतु पहल करने, झुग्गी झोपड़ी एवं खटाल

वासियों को उचित दर पर बिजली और पानी का कनेक्शन देने, फुटपाथ दुकानदारों को लाइसेंस पर गुमटी आवंटित कर भारत सरकार के स्ट्रीट वेंडर एक्ट के तहत स्थायीकरण करने एवं उसमें विस्थापितों को प्राथमिकता देने, अप्रेंटिस की ट्रेनिंग कर चुके विस्थापित युवाओं को नियोजन देने, स्पोर्ट्स कोटा के तहत पूर्व की भाँति खिलाड़ियों को नौकरी देने, विभिन्न सेक्टरों में बंद पड़े स्वास्थ केन्द्रों को आउटसोर्सिंग के तहत प्राइवेट अस्पतालों को देने, स्थानीय बेरोजगार युवाओं के लिए प्लांट के आउटसोर्सिंग कम्पनियों के द्वारा रोजगार मेला लागने, प्लांट का उत्पादन बढ़ाने के लिए विस्तारीकरण करने जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की एवं उनसे समाधान की दिशा में पहल करने का आग्रह किया। कुमार अमित ने प्रबंधन से अतिक्रमण मुक्त अभियान के आड़ में गरीब दुकानदारों और लोगों को परेशान न करते हुए बोकारो को अशांत न करने का विशेष आग्रह भी किया है। अधिशासी निदेशक ने कुमार अमित के इन विषयों पर गम्भीरता पूर्वक विचार कर सकारात्मक पहल करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर नगर सेवा के मुख्य महाप्रबंधक श्री कुंदन कुमार एवं युवा भाजपा नेता करण गोराई, लालबाबू, चंद्रप्रकाश आदि भी उपस्थित थे।

चिन्मय विद्यालय 48वां वार्षिक खेल महोत्सव का आयोजन

वायु हाउस 296 अंक के साथ अव्वल।

बिभा संवाददाता

बोकारो : चिन्मय विद्यालय, बोकारो के क्रीडागंन में 48वां वार्षिक खेल समारोह पूरे उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ । जिसमें सभी हाउस के खिलाड़ियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और इन सभी का उत्साह बढ़ाने के लिए अभिभावकों की भारी भीड़ जमा थी। छात्रों में खेल-भावना व खेलकूद के प्रति प्रतिबद्धता के उद्देश्य से कुल 118 विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया। विद्यार्थी शिक्षक एवं अभिभावकों ने विभिन्न खेलों में हिस्सा लिया, जैसे कि 100 मीटर दौड़, 200 मीटर दौड़, 400 मीटर दौड़, सैक रेस, टॉफी रेस , बैग रेस , थ्री लेग रेस , स्पून एंड मार्वल रेस, जैवलिन थ्रो, डिस्कस थ्रो, शॉट पुट व टग ऑफ वॉर। इस अवसर पर मुख्य अतिथि कुंदन कुमार, सीजीएम - नगर प्रशासन, सेल, बोकारो आवासीय आचार्या स्वामिनी सम्युक्तानंद, अध्यक्ष बिस्वरूप मुखोपाध्याय, सचिव

महेश त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष आर.एन मल्लिक, पुर्व कोषाध्यक्ष अनुप शर्मा , प्राचार्य सूरज शर्मा, बिपुल कुमार सिंह, प्राचार्य रेनबो पब्लिक स्कूल ,रंजीत कुमार, प्राचार्य, आदर्श पब्लिक स्कूल उपप्राचार्य नरमेंद्र कुमार थे ।, सभी अतिथियो का स्वागत पुष्प गुच्छ देकर किया गया। कार्यक्रम का आरंभ गीता पाठ से हुआ, मुख्य अतिथि कुंदन कुमार, सीजीएम - नगर प्रशासन, सेल, बोकारो ने मशाल जला कर किया। मुख्य अतिथी कुंदन कुमार ने अपने संबोधन में बच्चों का उत्साह बढाते हुए कहा कि खेलकूद एवं शारीरिक गतिविधियां व्यक्तित्व निर्माण में अत्यंत आवश्यक भूमिका निभाते हैं, और हमें भारत के विश्व गुरु बनने के लिए खेलकूद को निरंतर बढ़ावा देना चाहिए। खेल जीवन ही जीवन का दर्शन है, यह हमें लक्ष्य निर्धारित कर उसे पाने के लिए एकाग्रचित हो हमेशा अभिप्रेरित करता रहता है। हमेशा जीतने की जिज्ञासा बनाए रखता है।
बाल-खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए एवं सभी उपस्थित गणमान्य अतिथियो का स्वागत करते हुए विद्यालय प्राचार्य सूरज शर्मा ने खेलकूद का महत्व बताया एवं अभिभावकों को समझाया कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए खेल कूद अत्यंत महत्वपूर्ण है। खेलकूद द्वारा हम अनुशासन, टीमवर्क एवं समर्पण जैसे गुणों को आत्मसात करते हैं। जिससे हमारी एकाग्रचित्तता बढ़ती है और पढाई में भी मन लगा रहता है। चिन्मय विजन प्रोग्राम के अंतर्गत शारीरिक विकास, कक्षागत एवं कक्षेतर गतिविधियों का एक प्रमुख स्तंभ है। प्राचार्य ने विश्व प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय धावक उसेन बोल्ट कि प्रशंसा करते हुए उनके जीवन से संबद्धित कई रोचक बाते बता कर बच्चों का हौसला बढाया । उक्त वार्षिक क्रीड़ा उत्सव में मार्च पास्ट, योग प्रदर्शनी, ऐरोबिक डान्स , ड्रिल और बालक एवं बालिका वर्ग के लिए विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा प्रि-नर्सरी से ले कर 11वी तक के छात्र-छात्राओं ने पुरे उमंग एव जोश से भाग लिया। 11वी के कुणाल प्रताप , अंजली गुप्ता, 9वी के सौरव सिंह, 8वी के अनुष्का, 7वी के शिवांश सिहं एवं 6ठी के अहाना राज ने शानदार प्रर्दशन कर कई पदक अपनी झोली मे हासिल किया।
समस्त गतिविधियां विद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष हरिहर पांडे, एवं संजीव कुमार, रणविजय ओझा, प्रांजल साइका, नितेश कुमार पांडे, प्रवीण कुमार, ललिता उराँव, विशाल मौर्य व आदर्श आचार्य के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में आयोजित की गई।

विभिन्न खेल के परिणाम कुछ इस प्रकार हैं

ओवरऑल चैंपियन हाउस- वायु हाउस 296 अंक के साथ अव्वल रहा ।
100 मी (बालक) - मानव कुमार बाउरी (कक्षा -3), हर्श राज (कक्षा -4),, आयुश राज (कक्षा -5), आदित्या कुमार सिहं(कक्षा -6) , शिवांश सिंह (कक्षा -6), आयुश (कक्षा -8), अनुशका (कक्षा -8), सोरव सिंह (कक्षा -9), कुणाल प्रताप (कक्षा -11) 100 मी (बालिका) - अंतरीक्षा सिहं (कक्षा -3),शानवी परासर (कक्षा -4) ,अन्नया हलदार (कक्षा -5) , अहाना राज (कक्षा -6), श्रिष्टि कियारा (कक्षा -7), अनुष्का (कक्षा -8), संजना जया सिंह (कक्षा -9), अंजली गुप्ता (कक्षा -11) 200 मी (बालक) - आयुष राज (कक्षा-5), राधेश्याम ठाकुर, (कक्षा-6), सिवान सिंह (कक्षा-7), आदित्य अरविंद (कक्षा-8), सौरभ सिंह (कक्षा-9), कुणाल प्रताप (कक्षा-11) 200 मी (बालिका) - अनन्या (कक्षा-5), अहाना राज (कक्षा-6), श्रीनिधि पटेल (कक्षा-7), अनुष्का (कक्षा-8), प्राणिया खवास (कक्षा-9), अंजली गुप्ता (कक्षा-11),सभी विजेताओ को आवासीय आचार्या सम्युक्तानंद जी, अध्यक्ष बिस्वरूप मुखोपाध्याय, सचिव महेश त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष आर.एन मल्लिक, प्राचार्य सूरज शर्मा, उपप्राचार्य नरमेंद्र कुमार, सभी अकादमिक पर्यवेक्षक वरीय शिक्षक शिक्षिकाए द्वारा पदक देकर सम्मानित किया गया।

संक्षिप्त खबरें

बाबा आम्रेश्वर धाम के उपाध्यक्ष मुनिनाथ मिश्रा के निधन पर शोक सभा का आयोजन

खूँटी(बिभा)। बाबा आम्रेश्वर धाम प्रबंध समिति के वरीय उपाध्यक्ष मुन्नीनाथ मिश्रा के निधन पर वृहस्पतिवार को प्रबंध समिति द्वारा शोक संवेदना व्यक्त किया गया। सभी लोगों ने एक स्वर में कहा कि स्व. मिश्रा के हम सब को छोड़ कर चले जाना बहुत ही दुःखद घटना है जो कभी पूरी नहीं हो सकती है। समिति के अध्यक्ष लाल ज्ञानेंद्र नाथ शाहदेव ने कहा कि स्व. मुन्नीनाथ मिश्रा समिति के सच्चे सिपाही थे उन्होंने समिति के लिए बहुत ही अच्छे अच्छे कार्य किये जो कि अन्य किसी के द्वारा कभी नहीं हो सकती है ,खास कर यहां के विस्तृत मंदिरों और परिसर को गति प्रदान करने में उनका हमेशा बहुमूल्य योगदान रहा है । जो कभी नहीं भुलाई जा सकती है। महामंत्री मनोज कुमार ने संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि मिश्रा जी जबतक जीवित रहे पितातुल्य सभी सदस्यों के साथ हमेशा ख्याल रखे और हर समय समिति के सभी सदस्यों को एक साथ रखने का प्रयास करते हुए समिति को आगे बढ़ाने का कार्य करते रहे थे, जो अब लगभग नामुमकिन है। समिति के वरीय उपाध्यक्ष रमेश मांझी ने कहा कि स्व. मिश्रा जी समिति के लिए अपनी पूरी जीवन समर्पित कर दिए थे जब वे अस्वस्थ हुए तब भी उनका ध्यान समिति के उत्थान में ही लगा रहता था, क्योंकि जब भी उनसे मिलने गए इशारा से समिति के विषय मे एक बार पूछ ही लेते थे, उनके जैसा कर्मठ सदस्य अब इस समिति को कभी नहीं प्राप्त होगा। समिति बाकी सभी सदस्यों ने उनके द्वारा किये गए अतुलनीय कार्यों की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए इस दुःख की घड़ी में उनके शोक संतप्त परिवार के साथ रहने का इच्छा व्यक्त किए। मुन्नीनाथ मिश्रा जी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करने में समिति के अध्यक्ष लाल ज्ञानेंद्र नाथ शाहदेव, महामंत्री मनोज कुमार के अलावे रमेश मांझी, सुखदेव भगत, उपेंद्र कश्यप, दानियल भगत, आनंद वर्मा, कैलाश भगत, प्रेमचंद महतो, महेंद्र अग्रवाल, महेंद्र कश्यप, जगदीश नाग, महेंद्र प्रसाद भगत, संतोष पोद्दार, श्रीपाल चंद जैन, जगदीश मिश्रा, परिमल चंद्र घोष, केशरी कश्यप, प्रदीप कुमार एवम समिति के अन्य सदस्य एवम् कार्यकर्ता उपस्थित थे।

जरिया गढ़ में अगहनी महालक्ष्मी पूजा भक्ति भाव के साथ सम्पन्न

महालक्ष्मी माता का विशेष आराधना का दिन होता है अगहनी वृहस्पतिवार

खूँटी(बिभा) । अगहन मास के गुरुवार कि दिन महालक्ष्मी मांकी विशेष पूजा आराधना सुख सम्पदा व शांति प्राप्त होती है। जो कि खूँटी जिले के जरियागढ में उत्कल संस्कृति में इस पूजा आराधना को विशेष अनुष्ठान मानते हैं। जरिया गाँव में समाज के लोग घरों में हर गुरुवार को महालक्ष्मी पूजा किया जाता है और महालक्ष्मी उड़िया भाषा में उद्धृत लक्ष्मी पुराण कथा हर घर में बहुत ही भक्ति भाव से सुना व पढ़ा जाता है। ये पूजा को गुरुवारी पूजा के नाम से भी जाना जाता है महिलाएँ भोर से ही करते हैं। इसके एक दिन पहले घर आँगन को गोबर से लिपाई करके घर के बाहर से घर के अंदर पूजा स्थल तक चावल के आटा से अल्पना बनाया जाता है। और फिर शाम को ही शंख बजाकर महालक्ष्मी को आवाहन किया जाता है। फिर वृहस्पतिवार की ब्रम्ह मुहूर्त में नहा धोकर घर में अनेक प्रकार की पकवान बना करके महालक्ष्मी जी पूजा पाठ विधि से करते हैं। जिसमें चार वृहस्पतिवार को चार अलग अलग विशेष प्रसाद पकवान बनाया जाता है। जिसमें पकवान प्रसाद में ककरा-मण्डा, आटे का सेवई, फल, खीर, दाल भात सब्जी आदि का भोग लगाया गया। और इस प्रकार अगहन मास के चारों गुरुवार को घर घर में महालक्ष्मी उपवास व पूजा अर्चना सम्पन्न हो गया।जहाँ दोपहर में पूजा करके महिलाएँ महालक्ष्मी पुराण उड़िया में घर घर सुनी व गुरबारी पूजा सम्पन्न हो गया।

अड़की में आयोजित रक्तदान शिविर में 10 लोगों ने किया रक्तदान

खूँटी(बिभा) । अड़की प्रखंड में उपायुक्त के निर्देश पर जिला प्रशासन भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी की स्थानीय इकाई की सहायता से शुक्रवार को रक्तदान शिविर काआयोजन किया। शिविर का उद्घाटन अड़की के प्रखंड विकास पदाधिकारी महेश कुमार महतो एवं रेड क्रॉस सोसाइटी खूँटी के अध्यक्ष किशोर कुमार गंजू ने किया। जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। लेकिन शिविर में आयोजकों द्वारा अड़की के लोगों से मात्र 10 यूनिट रक्त एकत्र कराया जा सका। वहीं कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि ने रक्तदान को ₹महान सेवा₹ बताते हुए लोगों से नियमित रक्तदान करने का आग्रह किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से रेड क्रॉस सोसाइटी खूँटी के कोर कमिटी के सदस्य कोषाध्यक्ष कैलाश कुमार नाग, राजेंद्र प्रजापति, निरंजन प्रसाद समेत अन्य उपस्थित थे।

जिला समाज कल्याण पदाधिकारी ने अड़की प्रखंड के आंगनबाडी केंद्र का निरीक्षण

खूँटी(बिभा) । उपायुक्त लोकेश मिश्रा के निर्देश पर जिला के अड़की प्रखंड अंतर्गत पिस्का हातु आंगनबाड़ी केंद्र का निरीक्षण जिला समाज कल्याण पदाधिकारी सुमन सिंह द्वारा किया गया। इस निरीक्षण का उद्देश्य आंगनबाड़ी केंद्रों में चल रही योजनाओं की प्रगति, सेवाओं की गुणवत्ता और बच्चों को दी जा रही सुविधाओं की समीक्षा करना था। साथ हीं इस आंगनबाड़ी केंद्र को मॉडल आंगनबाड़ी केंद्र के रूप में भी विकसित किया जाना है। निरीक्षण के दौरान जिला समाज कल्याण पदाधिकारी ने आंगनबाड़ी केंद्र में बच्चों को दिए जा रहे पोषण आहार, टीकाकरण, साफ-सफाई और शैक्षणिक गतिविधियों का जायजा लिया। जिला समाज कल्याण पदाधिकारी ने केंद्रों पर उपलब्ध पोषण आहार की गुणवत्ता और वितरण प्रक्रिया की जाँच की और यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि सभी बच्चों को समय पर पोषक तत्व युक्त भोजन मिले। उन्होंने गर्भवती महिलाओं और धात्री माताओं को प्रदान की जा रही सेवाओं की भी जानकारी ली और उन्हें जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। जिला समाज कल्याण पदाधिकारी ने कहा कि सरकार की योजनाओं का सही तरीके से क्रियान्वयन सुनिश्चित करना उनकी प्राथमिकता है। वहीं प्रखंड स्तर में आंगनबाड़ी सेविकाओं को पोषण भी पढ़ाई भी विषय पर दिए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी जायजा लिया गया। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य 3 से 6 वर्ष तक के बच्चों को पोषण के अतिरिक्त उन्हें रोचक तरीके से प्रशिक्षण दिए जाने के विषय पर आधारित था।

पेड़ से कार टकराने पर रेफरल अस्पताल के चिकित्सक डॉ दीप्ति और उनके पति गंभीर रूप से घायल

बिभा संवाददाता

तोरपा । खूँटी सिमडेगा मार्ग पर तोरपा थाना क्षेत्र के चुरगी गाँव के पेट्रोल पम्प के पास शुक्रवार को एक कार पेड़ से टकराने पर उसमें सवार तोरपा रेफरल अस्पताल के महिला चिकित्सक व उसके पति घायल हो गये और कार बूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी। जानकारी के अनुसार, तोरपा के रेफरल अस्पताल की चिकित्सक डॉ दीप्ति नूतन तोपनो (50 वर्ष) तथा उनके पति डॉ निरल सांगा (55 वर्ष) ड्यूटी के लिए अपने वैगन आर कार से रांची से रेफरल अस्पताल तोरपा जा रहे थे। कार निरल सांगा चला रहे थे। शुक्रवार को डॉ दीप्ति की अस्पताल में नाइट ड्यूटी थी। वे अपने पति के साथ ड्यूटी जा रहे थे। जानकारी के अनुसार लगभग तीन बजे राँची से तोरपा अस्पताल आने के क्रम में चुरगी पेट्रोल पम्प के पास सामने से एक ट्रक अचानक सामने आ गया। उसे बचाने के चक्कर में कार अनियंत्रित होकर एक पेड़ से टकरा गयी, जिसमें दोनों घायल हो गये। सूचना पाकर रेफरल अस्पताल के कर्मी एम्बुलेंस से तुरंत घटनास्थल पहुँचे और डॉ दीप्ती को अस्पताल लाया गया, लेकिन उनके पति डॉ निरल सांगा कार में फँस गये थे और उनका पैर दब गया था। मौके पर पहुँचे तोरपा के थाना प्रभारी प्रभात रंजन पाण्डेय, अस्पताल के कर्मी और स्थानीय लोगों की मदद से आधे घंटे की मशक्कत के बाद उन्हें बाहर निकाला गया तथा एम्बुलेंस से अस्पताल लाया गया। रेफरल अस्पताल में दोनों का इलाज डॉ अपूर्वा घोष ने किया। प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को राँची रेफर कर दिया गया। डॉ दीप्ति के सिर, नाक, चेहरा आदि में चोट आयी है, जबकि उनके पति डॉ निरल को पैर, हाथ आदि में चोट पहुँची है।

खरीफ विपणन मौसम 2024-25 में धान अधिप्राप्ति कार्य का होगा 15 दिसंबर से

खूँटी(बिभा) । जिले में खरीफ विपणन मौसम 2024-25 के अंतर्गत धान अधिप्राप्ति कार्य 15 दिसम्बर 2024 से प्रारंभ होगा। इस वर्ष किसानों को उनकी मेहनत का उचित मूल्य सुनिश्चित करने के लिए धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य रुपए 2300/- प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। इसके अतिरिक्त, किसानों को रुपए 100/- प्रति क्विंटल का बोनस भी प्रदान किया जाएगा। उपायुक्त लोकेश मिश्रा ने किसानों से आग्रह किया है कि वे समय पर अपने धान की बिक्री सुनिश्चित करने के लिए निकटतम अधिप्राप्ति केंद्रों यथा लैम्प्स/पैक्स केंद्र से संपर्क करें। धान अधिप्राप्ति के दौरान पारदर्शिता और सुगमता सुनिश्चित करने के लिए सभी केंद्रों पर विशेष व्यवस्थाएं की गई हैं। किसानों से यह भी अनुरोध किया गया है कि वे धान की गुणवत्ता और मापदंडों का विशेष ध्यान रखें, ताकि अधिप्राप्ति प्रक्रिया में कोई बाधा न हो। साथ हीं उन्होंने धान अधिप्राप्ति प्रक्रिया में बिचौलियों से किसानों को सावधान रहने का भी अपील किया है।

शतप्रतिशत आयुष्मान भारत कार्ड निर्माण के लिए 18 से 25 दिसंबर तक चलेगा महा अभियान

अभियान को सफल बनाने को लेकर बीडीओ खूँटी ने प्रखंड कार्यालय में किया बैठक

बिभा संवाददाता

खूँटी । जिले में शतप्रतिशत आयुष्मान भारत कार्ड निर्माण को सुनिश्चित करने के लिए खूँटी जिले में 18 दिसंबर से 25 दिसंबर तक विशेष महा अभियान चलाया जाएगा। अभियान को सफल बनाने को लेकर शुक्रवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी खूँटी ज्योति कुमारी ने प्रखंड कार्यालय में बैठक कर अभियान को प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने खूँटी प्रखंड में शतप्रतिशत आयुष्मान भारत कार्ड निर्माण सुनिश्चित कराने को लेकर आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में उपस्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सक प्रखण्ड आपूर्ति पदाधिकारी, प्रखंड प्रमुख, मुखिया एवं सभी राशन डीलर को लाभुकों को चिन्हित करने और उन्हें जागरूक करने को कहा गया। बीडीओ ने कहा कि इस अभियान के दौरान लोगों को आयुष्मान भारत योजना के लाभों की जानकारी दें और अधिक से अधिक पात्र लाभार्थियों के कार्ड बनाना सुनिश्चित करें। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक इस योजना का लाभ पहुँचाना है। आयुष्मान भारत योजना के तहत लाभार्थी 5 लाख रुपये तक के स्वास्थ्य बीमा का लाभ उठा सकते हैं। उल्लेखनीय है कि आयुष्मान भारत कार्ड निर्माण के लिए लाभुकों को आवश्यक दस्तावेज यथा राशनकार्ड एवं आधार कार्ड लाना अनिवार्य है। वहीं राशनकार्ड एवं आधार कार्ड में किसी भी प्रकार की त्रुटि होने पर इसके सुधार के लिए प्रखंडो में ₹वन स्टॉप सेंटर₹ की भी व्यवस्था की गई है। जहां लोग अपने राशनकार्ड एवं आधार कार्ड में किसी भी प्रकार की त्रुटि होने पर सुधार करवा सकेंगे।

प्रोजेक्ट उत्कर्ष के तहत स्थानीय खेल प्रतिभाओं को किया जा रहा प्रोत्साहित और प्रशिक्षित

बिभा संवाददाता

खूँटी । जिले में स्थानीय खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित और प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से जिला प्रशासन ने उत्कर्ष - सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर स्पोर्ट्स, खूँटी परियोजना के तहत बच्चों को खेल में विशेष मार्गदर्शन और उच्च स्तरीय प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु प्रोजेक्ट उत्कर्ष को लागू करने के लिए जिला प्रशासन ने खूंटी के छह प्रखंडों में 16 प्रयास कार्यक्रम आयोजित किए। जिसमें 5,000 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इन प्रयासों से 100 प्रतिभाशाली छात्रों का चयन किया गया, जिनमें 36 छात्रों को हॉकी और फुटबॉल तथा 28 को एथलेटिक्स के लिए चुना गया। ये छात्र 12 से 17 आयु वर्ग में खेलते हैं। छात्रों को जून 2024 में परियोजना के तहत आवासीय सुविधा में शामिल किया गया। सात महीनों के प्रशिक्षण में परियोजना के 21% छात्रों ने राष्ट्रीय स्तर और 64% छात्रों ने राज्य स्तरीय टूर्नामेंट में खूंटी जिले का प्रतिनिधित्व किया है। गनालोया, खूँटी की 15 वर्षीय ग्रामीण छात्रा अनीश कुमारी खेली है। वह अब राज्य स्तर पर हॉकी में प्रतिस्पर्धा के लिए चयनित हैं ।

सीमावर्ती क्षेत्र में नक्सली सेंदरा वाली घटना के बाद पुलिस जनजागरण के लिए एक्टीव

खूँटी । खूँटी जिला से सटे पश्चिमी सिंहभूम जिले के गुदड़ी थाना क्षेत्र में नक्सलियों के विरुद्ध ग्रामीणों के द्वारा उठाया गया कदम से नक्सली व प्रशासन को भी सोचने को मजबूर कर दिया है। जहाँ ग्रामीणों का मानना है कि नक्सलियों से हो रही परेशानी तब खत्म होगा जब वो बचे ही नहीं। क्योंकि जिंदा रहेगा तो जेल से छूटकर फिर वही काम करेगा। पुलिस तो हमेशा है लेकिन नक्सली व आपराधिक गतिविधि चल ही रहा है। हालांकि किसी पर हथियार उठाना अपराध का श्रेणी में आता है। जिसपर कोई आपराधिक प्रवृति में न फँसे इसलिए एसपी अमन कुमार ने पुलिस पदाधिकारियों को निर्देशित करते हुए जनजागरण करने का निर्देश दिया है। वहीं मुरहू थाना अंतर्गत केवड़ा पिकेट एवं रनिया थाना अंतर्गत तोकेन पिकेट में प्रतिनियुक्त पुलिस पदाधिकारी/कर्मियों को पश्चिमी सिंहभूम जिला (गुदडी थाना, चाईबासा) के नक्सल/उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र के ग्रामीणों द्वारा अपराधियों एवं उग्रवादियों के विरुद्ध चलाये जा रहे सेंदरा अभियान के तहत उग्रवादियों को पकड़ कर हत्या करने जैसे घटना में शामिल नहीं होने तथा उग्रवादी/अपराधी/नक्सली की जानकारी होने अथवा पकड़े जाने पर थाना या वरीय पुलिस पदाधिकारी को सूचित करने के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया।

विद्यालय स्वस्थ्य दूतों का पाँच दिवसीय प्रशिक्षण समाप्त

बिभा संवाददाता

खूँटी । जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान खूँटी में पाँच दिवसीय विद्यालय के स्वस्थ्य आरोग्य दूतों का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में खूँटी जिले के विभिन्न प्रखंडों के लगभग 150 शिक्षक शिक्षिकाओं ने आरोग्य दूध के रूप में एनसीईआरटी की 11 माड्यूल और जेसीईआरटी के पांच मॉड्यूल का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य विद्यालय जाने वाले 11 वर्ष से 18 वर्ष के बच्चों को स्वस्थ संबंधी जानकारी देना तथा जागरूकता फैलाना ताकि बच्चे स्वस्थ के प्रति जागरूक हो । आरोग्य दूतों के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त के उपरांत विद्यालय के बच्चों को बेहतर स्वास्थ एवं निर्भीक महौल में पढ़ना , स्वस्थ बढ़ाना, भावनात्मक कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य, पारिवारिक संबंध ,मूल्य और जिम्मेदार नागरिकता ,जेंडर समानता, पोषण स्वस्थ और स्वच्छता, मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम व प्रबंधन, स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देना, प्रजनन स्वस्थ और एचआईवी की रोकथाम, हिंसा और चोट के खिलाफ सुरक्षा, इंटरनेट और सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा देना, बाल विवाह, दहेज प्रथा, सड़क सुरक्षा, मानव तश्करी आदि विषयों पर जानकारी दिया गया। यह कार्यक्रम जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान खूँटी के समन्वय व तकनीकी सहयोग से हुआ। इस प्रशिक्षण में प्रशिक्षक के रूप में ललित नाग, पंकज गुप्ता, नीरज पाठक ,किशोर तोपनो ,ललित कुमार, सुनीता लकड़ा, संजय एक्का ,अनीता खाखा, अशोक महतो, राकेश भगत, मितरन सुरीन ,ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

लोयला कॉलेज के छात्र ने छात्रा को तेजगति बाईक से मारी टक्कर, छात्रा की स्थिति गम्भीर

बिभा संवाददाता

खूँटी । नगर पंचायत क्षेत्र के तोरपा रोड बदरी चौक के पास लोयला इंटर कॉलेज के विद्यार्थी अश्विन मुण्डू ने तेजगति के350 बाईक से एक छात्रा को जोरदार धक्का मार दिया जिससे तृषा धान नाम की 18 वर्षीय लड़की का पैर टूट गया और उसके सिर पर आंतरिक चोटें आने से उसकी स्थिति गम्भीर बनी हुई है। जानकारी के अनुसार, लोयला इंटर कॉलेज में पढ़नेवाला लड़का अमृतपुर निवासी जोसेफ मुण्डू का बेटा 18 वर्षीय अश्विन मुण्डू दोस्त का बाईक लेकर पीपल चौक गया हुआ था फिर वापस कॉलेज आकर अन्य दो दोस्तों को लेकर फिर तोरपा रोड जा रहा था। इसी क्रम में तृषा कॉलेज से अपना घर कटहल टोली जा रही थी और सड़क पार कर रही थी कि तेजगति से बाईक चलाते हुए तृषा को जोरदार धक्का मार दिया लेकिन बाईक में बैठे अन्य दो लोगों को कोई खास चोटें नहीं लगी। लेकिन इससे अश्विन मुण्डू के चेहरे व पैर में चोटें आयी है और तृषा के पैर टूट गये व आंतरिक चोटें आईं। वहीं लोगों ने दोनों घायलों को सदर अस्पताल खूँटी लाया गया । जहाँ तृषा का प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर उपचार के लिए रिम्स रेफर कर दिया गया।

विद्यार्थियों को बाईक से कॉलेज आना मना है पर अभिभावक देते हैं बाईक : प्रिंसिपल

लोयला इंटर कॉलेज के प्रिंसिपल विमल मिंज ने जानकारी मिलते ही घायलों को देखने सदर अस्पताल पहुँचे और वस्तुस्थिति को जानकारी ली। उन्होंने कहा कि बच्चों को मोटरसाइकिल से कॉलेज आना माना है। सभी के अभिभावकों को इसकी सख्त हिदायत दी गई है। वहीं कॉलेज में बाइक रखा भी नहीं जाता है। लेकिन अभिभावक ही अपने बच्चों को बाईक दे देते हैं। और बच्चे इधर उधर बाईक रखकर कॉलेज घुसते हैं। विद्यार्थियों को बाईक से आने के लिए मना किया गया है। साथ ही नोटिस बोर्ड में सूचना जारी भी कर दिया गया है कि लोयोला कॉलेज के यूनिफॉर्म में नाबालिक बच्चा अथवा बिना ड्राइविंग लाइसेंस के चलाते हुए पकड़े जाने पर उनके बाइक सीज कर लेना चाहिए। यह पहले से ही लोगों को सूचित भी किया गया है और ऐसा प्रावधान बनाया गया है।

डीएवी के राष्ट्रीय खेलों में डीएवी खूंटी ने रचा इतिहास

बिभा संवाददाता

खूँटी । डी.ए.वी नेशनल स्पोर्ट्स के तत्वावधान में राष्ट्रीय स्तर के खेलों का आयोजन 02 दिस. से 04दिस. तक दिल्ली के विभिन्न मैदानों में किया गया, जिसमें झारखंड की टीमों का प्रतिनिधित्व करते हुए डी.ए.वी, खूंटी के छात्रों ने शानदार प्रदर्शन किया। इन खेलों में विद्यालय के छात्रों ने कुल मिलाकर 17 स्वर्ण पदक, 08 रजत पदक तथा 06 कांस्य पदक जीतकर इतिहास रच दिया। छात्रों ने हॉकी, तीरंदाजी, शूटिंग, फुटबॉल तथा शॉट पुट जैसे खेलों में भाग लिया। अंडर - 17 वर्ष के बालक वर्ग में झारखंड की हॉकी टीम विजयी रही , जिसमें डी.ए.वी खूंटी के अनुराग टोपनो, मोहन चंद्र मुंडा, सुधांशु राम, फेलिक्स पूर्ति और आर्यन होरो ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीता।
अंडर -14 बालिका तीरंदाजी वर्ग में भी झारखंड की टीम विजयी रही, जिसमें अर्पिता कुमारी ने विभिन्न राउंडों में शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीतकर राज्य तथा विद्यालय का नाम रोशन किया।
अंडर -14 शूटिंग प्रतिस्पर्धा में विद्यालय की छात्रा शिवानी कुमारी ने प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक जीता।
ईशा कुमारी ने अंदर-19 तीरंदाजी प्रतियोगिता के इंडियन राउंड में स्वर्ण पदक , 30 मीटर व्यक्तिगत तथा ओवरऑल में कांस्य पदक जीता।
अंडर -19 बालिका तीरंदाजी वर्ग में वर्षा कश्यप ने इंडियन राउंड , 50 मीटर व्यक्तिगत में स्वर्ण पदक , 30 मीटर व्यक्तिगत तथा ओवरऑल में रजत पदक जीतकर विद्यालय का मान बढ़ाया। इसी प्रतियोगिता में ऋषिका नाग ने इंडियन राउंड , 30 मीटर व्यक्तिगत में स्वर्ण पदक , 50 मीटर व्यक्तिगत में रजत पदक तथा ओवरऑल में स्वर्ण पदक जीता।
अंडर -14 बालिका वर्ग तीरंदाजी में अश्विता पूर्ति में इंडियन राउंड में स्वर्ण , 30 मीटर , 20 मीटर तथा ओवरऑल प्रतियोगिताओं में रजत पदक जीता।
अंडर -17 तीरंदाजी के बालक वर्ग में विद्यालय के हर्ष कुमार ने इंडियन राउंड, 40 मीटर तथा ओवरऑल प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीता।
कक्षा छठी के छात्र सिद्धार्थ राम ने इंडियन राउंड में कांस्य पदक जीता।
अंडर -14 शॉट पुट प्रतियोगिता में हर्ष कश्यप ने रजत पदक प्राप्त किया।
फुटबॉल मैच में झारखंड की टीम उप-विजेता बनी जिसमें विद्यालय की छात्रा अनुष्का वर्मा ने रजत पदक हासिल किया। इस प्रकार विद्यालय के छात्रों ने कुल मिलाकर 31 पदक अपने नाम किए। वहीं वृहस्पतिवार को विद्यालय में एक समारोह का आयोजन कर विजेताओं को विद्यालय के प्राचार्य मनोजेश्वर कुमार ने मेडल तथा ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। छात्रों की शानदार सफलता पर विद्यालय के प्रबंधक एम.के सिन्हा, सहायक क्षेत्रीय पदाधिकारी एस.के. मिश्रा ने छात्रों को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की। छात्रों ने अपने प्रदर्शन से राज्य , खूंटी जिले तथा विद्यालय का मान बढ़ाया। छात्रों ने कुशल नेतृत्व और मार्गदर्शन के लिए अपने खेल शिक्षक मृत्युंजय कुमार सिंह के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। विद्यालय के समस्त शिक्षक - शिक्षाओं ने विजेताओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

नपं क्षेत्र में पिछड़ा वर्ग आरक्षण को लेकर किया जा रहा है सर्वे

बिभा संवाददाता

खूँटी । नगर निकायों में पिछड़े वर्गों को आरक्षण दिए जाने की पात्रता निर्धारण करने हेतु पिछड़े वर्गों का घर-घर जाकर सर्वे कार्य किया जा रहा है। जो कि राज्य आयोग, झारखण्ड के सदस्य सचिव के० के० सिंह के निर्देश पर किया जा रहा है। जिसकी जानकारी 31.12.2024 तक विभाग को उपलब्ध करा देना है। जिसमें खूँटी नगर पंचायत क्षेत्र में घर-घर जाकर नगर पंचायत के द्वारा सर्वे करने का कार्य दिया गया है। जिसमें सुपरवाइजर राजेश कुमार ने बताया कि नगर पंचायत क्षेत्र में रहने वाले लोगों का सर्वे करके जमा करना है। जो कि त्रुटि रहित एवं निर्धारित समय-सीमा के अन्दर करा देना है । जानकारी के अनुसार, जिला स्तर पर अपर समाहर्ता की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय क्रियान्वयन समिति का गठन किया गया है। जिसमें अपर समाहर्ता परमेश्वर मुण्डा अध्यक्ष हैं। जबकि नगर प्रशासक सृष्टि दिप्रिया मिज, खूंटी अंचलाधिकारी शिशुपाल आर्या समिति में हैं। जिनके द्वारा आयोग को सूचना उपलब्ध कराया जाएगा। जिसमें समिति के अध्यक्ष का दायित्व होगा कि वे अपने स्तर से नगर पंचायत, खूँटी में डोर-टू-डोर सर्वे हेतु विस्तृत आदेश निर्गल कर अपने पर्यवेक्षण में त्रुटि रहित सर्वे कराकर स्वयं संतुष्ट होने के उपरान्त आयोग द्वारा उपलब्ध कराये गये विहित प्रपत्र में प्रतिवेदन संकलित कर प्रेषित करेंगे। समिति के सभी सदस्य पिछड़े वर्गों के लिए राज्य आयोग के उपवर्णित पत्र के आलोक में कार्य करेंगे। नगर पंचायत, खूँटी के सभी कर्मी एवं पदाधिकारी इस कार्य को जमीनी स्तर पर करेंगे।

संपादकीय

पार्किंग की समस्या से जूझते शहर

गुणवत्तापरक शिक्षा में अभी भी आशानुरूप सफलता नहीं मिली है। जहाँ संख्यात्मक वृद्धि होती है, वहां गुणात्मक वृद्धि में कमी आ जाती है। इस कमी को दूर करने के लिए आवश्यक है कि कक्षा में रूचिपूर्ण शिक्षण पद्धति अपनाई जाये जैसे- भ्रमण विधि, खेल विधि, कहानी विधि, प्रदर्शन विधि, करके सीखना, प्रोजेक्ट विधि, केस स्टडी विधि तथा विभिन्न प्रकार की अन्य शैक्षिक गतिविधियां आदि। सीखने की प्रक्रिया मनुष्यों के मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक विकासक्रम का एक निर्धारक तत्त्व है. शिक्षा के ध्येय को मूलतः ज्ञात के प्रसार एवं अज्ञात के प्रति अनुसंधानात्मक अभिरुचि के विकास में समाहित किया जा सकता है. बीसवीं सदी तक के सामाजिक एवं वैज्ञानिक विकास की गति इतनी तीव्र नहीं थी कि पारम्परिक शिक्षण की प्रणालियाँ और व्यवस्थाएँ उसे संभाल न सकें परन्तु इक्कीसवीं सदी ने कुछ युगांतरकारी परिवर्तनों से अपनी यात्रा आरम्भ की है. पहला बड़ा परिवर्तन कंप्यूटर का आगमन है जिसने एक तरफ तो ज्ञान की एक पूरी शाखा का विकास करके ज्ञात की सीमाओं को बढ़ा दिया है और शिक्षकों का भार 'न्यूनतम समय में आधुनिकतम प्रणालियों की उपयोग क्षमता के विकास की आवश्यकता' के साथ बढ़ गया है. कहना न होगा कि सिखाने और सीखने की गतिवृद्धि के लिए अत्यंत कारगर उपाय के रूप में कंप्यूटर स्लाइड शो, फ्लैश फिल्मों आदि के साथ अनिवार्य होता जा रहा है. दूसरा बड़ा परिवर्तन तथ्यों और संदेशों के महासमुद्र में खोज और अभिव्यक्ति की सेवा देनेवाली साइटों का आगमन है. गूगल और फेसबुक मानवीय मस्तिष्क की तथ्यात्मक समृद्धि को अनावश्यक और अतीत की बात बनाने में जुटे हैं. ऐसा लगने लगा है कि छात्रों को आंकड़े और अन्य वस्तुनिष्ठ तथ्यों के लिए स्मृति पर निर्भर कराना स्मरण शक्ति का दुरुपयोग बनता जा रहा है. 'ज्ञान का विस्फोट' जो सूचना के विस्फोट का उपादान बनाकर प्रकट हुआ है, कोई भी शिक्षण प्रणाली उससे विरक्त रहकर समय के साथ नहीं चल सकती. तीसरा बड़ा और भविष्योन्मुख परिवर्तन अत्याधुनिक तकनीक और विचारधाराओं के साथ विश्व की एकीकृत सामाजिक स्थिति है. इतिहास परिप्रेक्ष्य के साथ बदल जाता है और 'ग्लोबल विलेज' में अंतर्राष्ट्रीय भावनाओं के साथ वस्तुनिष्ठ चिंतन का विकास आवश्यक हो गया है. कहना न होगा कि शिक्षकों का समुदाय अब ज्ञान की खिडकी नहीं रह गया है, छात्रों के पास ज्ञान के अन्य बेहद विकसित और समर्थ स्रोत उपलब्ध हो गए हैं और शिक्षण में एटीट्यूड, तर्कविकास और मानवीय गुणों का बीजारोपण अधिक महत्त्वपूर्ण होते जा रहे हैं इसके लिए हिंदी में विज्ञान अनिवार्य है हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद अच्छा काम कर रही है।

गुकेश : शह-मात का नया शहंशाह

लेखक

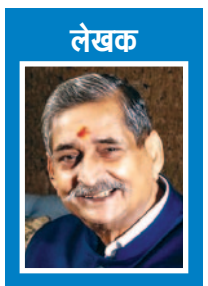

डॉ. आर.के. सिन्हा

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं।)

सारा भारत आज के दिन डी. गुकेश के विश्व शतरंज चैंपियन बनने से गौरवान्वित है। गुकेश ने नया इतिहास रच दिया है। वे सबसे कम उम्र के विश्व शतरंज चैंपियन बन गए हैं। उन्होंने अपने अद्भुत प्रदर्शन से पूरे भारत का मान बढ़ाया है। उनकी शानदार सफलता में उनकी असाधारण प्रतिभा, समर्पण और रणनीतिक दृष्टिकोण अहम रहे। गुकेश ने बहुत कम उम्र में शतरंज खेलना शुरू कर दिया था, जिससे उन्हें खेल की बारीकियों को समझने और अपनी प्रतिभा को विकसित करने का पर्याप्त समय मिला। उनमें जन्मजात प्रतिभा है और ग्रहण करने की क्षमता बहुत तेज है, जिससे वे जटिल शतरंज रणनीतियों को आसानी से समझ पाते हैं। उन्होंने शतरंज के प्रति पूर्ण समर्पण दिखाया है और लगातार अभ्यास करके अपनी क्षमताओं को निखारा है। गुकेश को अनुभवी और कुशल प्रशिक्षकों का मार्गदर्शन मिला, जिन्होंने उनकी खेल तकनीकों को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण और संसाधनों तक पहुंच मिली, जिससे उन्हें विश्व स्तर के खिलाड़ियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में मदद मिली। गुकेश के प्रशिक्षण में आधुनिक तकनीकी उपकरणों का उपयोग शामिल था, जिससे उनकी खेल रणनीति का विश्लेषण करना और सुधार करना आसान हो गया।

> गुकेश नियमित रूप से शतरंज का अभ्यास करते हैं और अपनी कमजोरियों को दूर करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे अपने पिछले मैचों का विश्लेषण करते हैं और अपनी गलतियों से सीखते हैं, जिससे उनकी खेल रणनीति में लगातार सुधार होता रहता है। वे शतरंज के महान खिलाड़ियों के खेलों का लगातार गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करते रहते हैं और उनसे नई तकनीकों को सीखते हैं। गुकेश ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया है, जिससे उन्हें उच्च स्तर के खिलाड़ियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने का अनुभव मिला है।

गुकेश के पास शतरंज में गहरी रणनीतिक सोच है, जो उन्हें खेल के दौरान तत्काल सही निर्णय लेने में मदद करती है। वे दबाव की स्थितियों में भी शांत और संयमित रहते हैं, जिससे वे महत्वपूर्ण मुकाबलों में बेहतर प्रदर्शन कर पाते हैं। उनमें मानसिक रूप से

मजबूत होने की क्षमता है, जिससे वे हार से निराश नहीं होते और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित रहते हैं।

गुकेश नियमित रूप से शतरंज का अभ्यास करते हैं और अपनी कमजोरियों को दूर करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे अपने पिछले मैचों का विश्लेषण करते हैं और अपनी गलतियों से सीखते हैं, जिससे उनकी खेल रणनीति में लगातार सुधार होता रहता है। वे शतरंज के महान खिलाड़ियों के खेलों का लगातार गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करते रहते हैं और उनसे नई तकनीकों को सीखते हैं। गुकेश ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया है, जिससे उन्हें उच्च स्तर के खिलाड़ियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने का अनुभव मिला है। उन्होंने अलग-अलग शैली के खिलाड़ियों का सामना किया है, जिससे उनकी खेल में विविधता आई है। गुकेश को अपने परिवार से भरपूर समर्थन और प्रेरणा मिली है, जो उनकी सफलता में महत्वपूर्ण कारक है। उनके परिवार ने उनके संघर्षों के दौरान उनका भावनात्मक रूप से समर्थन किया और उन्हें हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इन सभी कारणों के संयोजन ने गुकेश को विश्व शतरंज चैंपियन बनने में मदद की है। उनकी सफलता न केवल उनकी व्यक्तिगत प्रतिभा और मेहनत का परिणाम है बल्कि यह भारत में शतरंज के विकास और प्रोत्साहन का भी प्रतीक है।

इस बीच, कुछ जानकार गुकेश और पूर्व विश्व शतरंज चैंपियन विश्वनाथन आनंद की तुलना भी रहे कर रहे हैं। गुकेश और विश्वनाथन आनंद, दोनों भारतीय शतरंज के महान खिलाड़ी हैं लेकिन उनकी शैलियों, दृष्टिकोण और खेल में कुछ समानताएं और कुछ मौलिक अंतर भी हैं। दोनों ही खिलाड़ियों में शतरंज की असाधारण प्रतिभा है। वे जटिल स्थितियों को समझने और सटीक चाल चलने में माहिर हैं। दोनों खिलाड़ी अपनी रणनीतिक गहराई के लिए जाने जाते हैं। वे न केवल तात्कालिक लाभ पर ध्यान देते हैं बल्कि लंबी अवधि की योजनाओं को भी ध्यान में रखते हैं। दोनों खिलाड़ियों में दृढ़ संकल्प है और वे कभी हार नहीं मानते। उन्होंने कई बार मुश्किल परिस्थितियों से वापसी कर जीत हासिल की है।

दोनों खिलाड़ी अपनी शालीनता और खेल भावना के लिए जाने जाते हैं। वे हारने पर भी सम्मान बनाए रखते हैं। विश्वनाथन आनंद एक अनुभवी खिलाड़ी हैं जो 90 के दशक से खेल रहे हैं, जबकि गुकेश युवा और उभरते हुए खिलाड़ी हैं। आनंद ने कंप्यूटर युग से पहले शतरंज खेला जबकि गुकेश का विकास कंप्यूटर के युग में हुआ है। आनंद अपनी तेज और आक्रामक शैली के लिए जाने जाते हैं, जबकि गुकेश एक अधिक रणनीतिक और रक्षात्मक खिलाड़ी हैं। आनंद त्वरित चालों और जटिलताओं में माहिर हैं जबकि गुकेश स्थिति को नियंत्रित करने और धैर्यपूर्वक आगे बढ़ने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

जाहिर है, आनंद के पास खेल का अधिक अनुभव है और उन्होंने कई विश्व चैंपियनशिप जीती हैं, जबकि गुकेश अभी भी अपने करियर के शुरुआती चरण में हैं। आनंद ने दशकों तक शीर्ष स्तर पर खेला है, जबकि गुकेश अभी भी वैश्विक शतरंज समुदाय में अपनी जगह बना रहे हैं। आनंद अधिक सहज और रचनात्मक खिलाड़ी हैं, जबकि गुकेश अधिक व्यवस्थित और वैज्ञानिक खिलाड़ी हैं। आनंद स्वाभाविक रूप से प्रेरित होकर खेलते हैं, जबकि गुकेश अपनी तैयारी पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। भारत में शतरंज पहले से काफी लोकप्रिय हैं लेकिन गुकेश जैसे युवा खिलाड़ियों के उदय से यह और भी लोकप्रिय हो सकता है।

सत्ता और पद के नशे से लड़खड़ाता सिस्टम

लेखक

भूपेन्द्र गुप्ता

जब भी समाज घातक घटनाओं को नजरअंदाज करता है और उन पर कोई स्टैंड नहीं लेता तो वे नजीर बन जातीं हैं।

अठारह साल पहले स्व जुगलकिशोर बागरी ने माध्यमिक शिक्षा मंडल के एक बाबू क़ा कालर पकड़ लिया था वे तब जल संसाधन मंत्री थे।उसी काल में एक और मंत्री उमाशंकर गुप्ता ने भी एक डाक्टर को थप्पड़ जड़ दिया था।घटनायें तो भुला दीं गईं किंतु विकृति बढ़ती गई है।

देश आज जिस राह पर है वह निश्चित ही चौंकाने वाला है।प्रतिक्रियायें हिंसक और उन्मादी होती जा रहीं हैं।सीमायें अपने आप टूट रहीं हैं।ऐसा क्यों हो रहा है।

पूर्व में. हुईं तीन घटनाओं की तरह एक ही सप्ताह में फिर से वैसी ही नई घटनायें सामने आ गई हैं।जो झकझोरतीं हैं।

इलाहाबाद हाईकोर्ट के एक जज ने अपने सार्वजनिक भाषण में अल्पसंख्यकों को कठमुल्ला कहते हुए उन्हें देश के लिये खतरनाक बताया है।वे कथित रूप से बहुसंख्यकों के अनुसार देश चलाने की बात भी कहते हैं। उनके विरुद्ध महाअभियोग लाने की बात हो रही है।यह रेडिकिलाईजेशन (कट्टरता) की नई नजीर है।

इससे भी खतरनाक घटना गाजियाबाद के जिला जज द्वारा छोटी सी बात पर वकीलों से हुए वाद विवाद में जिला न्यायाधीश और वकीलों के बीच में कथित झूमा झटकी की है, जहां पुलिस द्वारा वकीलों की जबरदस्त पिटाई के बाद वकीलों द्वारा अदालत के बाहर पुलिस चौकी में आग लगा देने की है।यह दोनों घटनायें न्यायपालिका के आचरण पर रोशनी डालती हैं अगर न्यायाधीश इतने ही प्रतिक्रियावादी हो जायेंगे तब निष्पक्ष न्याय की परिकल्पना ही व्यर्थ है।कल तक तो न्याय की मूर्ति की आंखों पर पट्टी थी लेकिन आज तो पट्टी हटा दी गई है ,तब जजों और वकीलों का यह कथित व्यवहार स्पष्ट संकेत है कि प्रतिक्रिया का उत्तेजक जहर पूरे कुंए में घुल चुका है।

एक राष्ट्रीय दल के बड़े नेता के विरुद्ध विदिशा में शर्मनाक मामले में एफआईआर दर्ज हुई है।उसकी भतीजी ने ही उस पर यौन शोषण और रेप के आरोप लगाये हैं।हालांकि भाजपा ने उसे पार्टी से निष्कासित कर दिया है किंतु यह वासनागत उन्माद की पराकाष्ठा है जिसमें रिश्ते तार तार हो गये हैं।पारिवारिकता के रिश्तों को भी अब संशय की नजर से देखा जायेगा।इसके पूर्व भी पन्ना में रिश्तों को कलंकित करने वाला मामला दर्ज हुआ था।संयोग से वे भी इसी दल के नेता थे।क्या रसूख और सत्ता का गुमान दैहिक शोषण की आजादी का कारण बन रहा है,या यह केवल समाज को निरंतर उत्तेजक बनाये रखने के राजनीतिक तमाशों का अनिवार्य परिणाम है।

रतलाम में मध्यप्रदेश की एक नवजात पार्टी के इकलौते विधायक और एक शासकीय डाक्टर के बीच खुल्ले गाली गलौज का वीडियो भी अपनी अपनी भूमिका में मगरूरियत का प्रमाण है।जो डाक्टर विधायक को अशोभनीय गालीयां दे रहा हो उसका व्यवहार मरीजों से कैसा होगा?दूसरी तरफ क्या विधायक को भी नियमित कार्यों में इतना अतिक्रमण करना चाहिये कि सरकारी कर्मचारी भी आक्रामक प्रतिक्रिया करने लगें।यह परिस्थिति खतरनाक है। जब सत्ता और पद का नशा सर चढ़ कर बोलता है तो सिस्टम टूटता है और विकृतियां पनपने लगतीं हैं।

प्रदेश में घर से भागकर कथावाचक अघोरी और साधु बनने के लिये 13 नावालिग बच्चे उज्जैन में पकड़े गये हैं।उनमें से लगभग सभी ने बताया है कि वे रीलें देख देखकर भक्ति और लोकप्रियता के लिये घर छोड़ आये हैं।रील का नशा और झूठी चमक दमक किस तरह से समाज में तात्कालिक सफलता और अवसरों की तरफ भागने के लिये प्रेरित कर रही है ।तय है कि हमारा सामाजिक ताना-बाना इन मासूम महत्वाकांक्षाओं को समाधान देने मे असफल है।

मजदूरों के खाते खुलवाकर साइबर अपराधियों को खाते बेचने वाले गिरोह पकड़े जा रहे है।जल्दी अरबपति बनने की ख्वाहिश,अभावों से जूझने की बजाय गरीबों की मजबूरी और अशिक्षा को लूट का साधन बना लेने की कलाकारियां खतरनाक हो रहीं हैं।पोस्ट आफिस में एक बुजुर्ग पेशनर महिला कज खाते से लाखों रुपया उड़ा लेने वाले पोस्ट आफिस कर्मचारी को भी क्या लालच की गिनीज बुक का रिकार्ड बना रहा है।ये विकृतियां एक जगह नहीं वल्कि समाज के हर हिस्से में दिखाई दे रहीं हैं।

हमें एक ऐसे समाज में धकेला जा रहा है जहां थाट और एक्शन के बीच कोई टाईम डिस्टेंस नहीं है।क्रिया के बाद सोचा जा रहा है कि ऐसा क्यों किया गया?ऐसे काल प्रवाह में जब समाज फंसता है तो पछताने का भी अवसर नहीं मिलता,क्या पछतावे के पहले इस आक्रामकता को रोका जा सकता है।

समाज सुधारक, लोकप्रिय कथावाचक, राजनीतिक नेतृत्व और कार्यपालिका इस पर विचार करें,हालांकि देर तो हो ही चुकी है।

राशिफल

मेष कुछ कार्य भी सिद्घ होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। महत्त्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। परामर्श व परिस्थिति सभी का सहयोग मिलेगा।

वृष कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढने के अवसर लाभकारी सिद्घ हो रहे हैं। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी।

मिथुन लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। मनोविनोद बढ़ेगे। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा।

कर्क कुछ पिछले संकट अब सिर उठा सकते हैं। निकट जनों के लिए अर्थव्यवस्था हेतु तोड़-तोड़ करना पड़ेगाा। अपने संघर्ष में स्वयं को अकेला महसूस करेंगे। विशेष परिश्रम से ही अभिष्ट कार्य सिद्घ होंगे। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा।

सिंह रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्घिमानी होगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। किसी से कहा सुनी न हो यह ध्यान रहे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी।

कन्या ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कार्यक्षेत्र में आगे बढने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें।

तुला विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। शुभ कार्यों में अड़चनें और परिवार के बुजुर्ग-जनों से मतभेद रहेगा। किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा।

वृश्चिक कुछ आर्थिक डृक्षचताएं भी कम होगी। नियोजित धन से लाभ होने लगेगा। घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। बढ़ते घाटे से कुछ राहत मिलने लगेगी। समय का सदुपयोग करें। साधन और भोग-विलास के प्रचुर अवसर होंगे।

धनु परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आलस्य का त्याग करें। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। जान-पहचान का दायरा बढ़ेगा।

मकर जोखिम से दूर रहना ही बुद्घिमानी होगी। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए।

कुंभ लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी।

मीन अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी डृक्षचता रहेगी। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। व्यापार में प्रगति होगी। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा।

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस : ऊर्जा संरक्षण से होगी बिजली की जरूरतें पूरी

लेखक

रमेश सर्राफ धमोरा

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

> भारत ऐसा देश है जहां पूरे साल सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा का इस्तेमाल किया जा सकता है। भारत में साल भर में लगभग 310 दिनों तक तेज धूप खिली रहती है। भारत भाग्यशाली है जिसके पास सौर ऊर्जा के लिए खिली धूप की उपलब्धता, पर्याप्त मात्रा में भूमि की उपलब्धता, परमाणु ऊर्जा के लिए थोरियम का अथाह भंडार तथा पवन ऊर्जा के लिए लंबा समुद्री किनारा जैसा नैसर्गिक संसाधन उपलब्ध है। जरूरत है तो बस उचित प्रौद्योगिकी का विकास तथा संसाधनों का दोहन करने की।

हमारे जीवन में प्रतिदिन विभिन कार्यों के संचालन के लिए ऊर्जा अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है। दुनिया की अर्थव्यवस्था में वृद्धि के साथ-साथ प्रतिवर्ष ऊर्जा की मांग भी बढ़ रही है। हम प्रतिदिन विभिन रूपों में ऊर्जा का उपयोग करते हैं। अतः भविष्य में ऊर्जा की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इसका संरक्षण आवश्यक है। ऊर्जा संरक्षण से तात्पर्य विभिन्न उपायों के माध्यम से ऊर्जा का संरक्षण करना है। ऊर्जा संरक्षण के अंतर्गत विभिन कार्यों के माध्यम से ऊर्जा का उपयोग इस प्रकार किया जाता है। जिससे वर्तमान की आवश्यता की पूर्ति के साथ भविष्य की जरूरतें भी पूरी हो सकें। ऊर्जा संरक्षण से तात्पर्य ऊर्जा का विवेकपूर्ण उपयोग है। इसका अर्थ है ऊर्जा का अनावश्यक उपयोग ना करना एवं कम से कम ऊर्जा का उपयोग करते हुए कार्य करना।

भारत ऐसा देश है जहां पूरे साल सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा का इस्तेमाल किया जा सकता है। भारत में साल भर में लगभग 310 दिनों तक तेज धूप खिली रहती है। भारत भाग्यशाली है जिसके पास सौर ऊर्जा के लिए खिली धूप की उपलब्धता, पर्याप्त मात्रा में भूमि की उपलब्धता, परमाणु ऊर्जा के लिए थोरियम का अथाह भंडार तथा पवन ऊर्जा के लिए लंबा समुद्री किनारा जैसा नैसर्गिक संसाधन उपलब्ध है। जरूरत है तो बस उचित प्रौद्योगिकी का विकास तथा संसाधनों का दोहन करने की।

देश की ऊर्जा की मांग और आपूर्ति में बहुत बड़ा अन्तर है। देश में बिजली संकट लगातार गहराता जा रहा है। अगर इस समय बिजली संकट को गंभीरता से नहीं लिया गया तो यह भारत के विकास के लिए बड़ा अभिशाप सिद्ध हो सकता है। क्योंकि किसी भी देश की तरक्की का रास्ता ऊर्जा से होकर ही जाता है। सरकार को अब वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों पर गंभीरता से विचार करते हुए ऊर्जा बचत के लिए जरूरी उपाय अपनाने पड़ेंगे। इस मायने में सूर्य से प्राप्त सौर ऊर्जा अत्यंत महत्वपूर्ण विकल्प है।

भारत में 31 मार्च 2023 तक स्थापित बिजली उत्पादन क्षमता 416,059 मेगावाट थी। जिसमें जीवाश्म ईंधन से 237,269 मेगावाट अथवा 57 प्रतिशत तथा गैर-जीवाश्म ईंधन से 178,790 मेगावाट अथवा 43 प्रतिशत शामिल। देश में कोयले से 205,235 मेगावाट अथवा 49.3 प्रतिशत, लिग्नाइट से 6620 मेगावाट, हाइड्रोपावर (पनबिजली) से 46,850 मेगावाट यानी कुल क्षमता का 11.3 प्रतिशत, प्राकृतिक गैस का योगदान 24,824 मेगावाट यानि क्षमता का महज 6 प्रतिशत और परमाणु ऊर्जा से 6780 मेगावाट, सौर उर्जा से 66,780 मेगावाट यानि 16.1 प्रतिशत, डीज़ल से 589 मेगावाट यानि 0.1 प्रतिशत, हवा से 42,633 मेगावाट यानि 10.2 प्रतिशत, बायो मास पावर/कोजेन से 10,248 मेगावाट, अपशिष्ट से 554 मेगावाट, लघु हाइड्रो से 4944 मेगावाट, नाभिकीय से 6780 मेगावाट बिजली उत्पन्न होती है। साफ है कि देश के सभी घरों तक 24 घंटे बिजली पहुंचाने के लिए मौजूदा क्षमता कम पड़ेगी। इसके लिए वर्तमान क्षमता से कम से कम 30 फीसदी अधिक बिजली की जरूरत होगी। इसके लिये देश में पावर प्लांटों में 100 फीसदी बिजली उत्पादन करना होगा।

बिजली आज पूरी दुनिया की सबसे अहम जरूरत बन गयी है। बिजली के बिना कोई भी देश तरक्की नहीं कर सकता। थोड़े से समय के लिये बिजली चली जाने पर हमारे अधिकतर काम रुक जाते हैं। बिजली हमारे जनजीवन का कब मुख्य हिस्सा बन गयी हमें पता नहीं चला। आज पूरा जनजीवन बिजली से जुड़ा है। बिजली का उत्पादन मशीनों से किया जाता है। ऐसे में हमें हर हाल में बिजली का दुरुपयोग रोकने की जरूरत है।

सौर ऊर्जा प्रदूषण रहित, निर्बाध गति से मिलने वाला सबसे सुरक्षित ऊर्जा स्रोत है। भारत में सौर ऊर्जा लगभग बारह महीने उपलब्ध है। सौर ऊर्जा को और अधिक उन्नत करने के लिए हमें अपने संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। ऊर्जा के मामले में अधिक समय तक दूसरों पर निर्भर नहीं रहा जा सकता है। ऊर्जा के क्षेत्र में हमें अपनी तकनीक और संसाधनों का उपयोग कर आत्मनिर्भरता हासिल करनी ही होगा। यह दुख का विषय है कि बहुत लम्बे समय तक हमने सौर ऊर्जा के उत्पादन व उपयोग पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। हमारे देश की परिस्थितियां विषम होने के कारण हमें सभी उपलब्ध ऊर्जा विकल्पों पर विचार करना होगा। इसके साथ ही ऊर्जा संरक्षण के व्यावहारिक कदमों को अपनाना होगा ताकि बड़े पैमाने पर बिजली की बचत हो सके।

हमारे देश में ऊर्जा की मांग तीव्रगति से बढ़ रही है। लेकिन उत्पादन में खपत की तुलना में बढ़ोत्तरी नहीं हो पा रही है। देश में चल रही पुरानी बिजली परियोजनाएं कभी पूरा उत्पादन नहीं कर पाईं है। नई स्थापित होने वाली परियोजनाओं के लिए स्थितियां अनुकूल नहीं होती हैं। देश में बिजली के इस संकट को अगर अभी समय रहते दूर नहीं किया गया तो आने वाले समय में गंभीर संकट का सामना करना होगा। दुर्भाग्यवश हमारे देश में खनिज, पेट्रोलियम, गैस, उत्तम गुणवत्ता के कोयला जैसे प्राकृतिक संसाधन बहुत सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हैं। ऊर्जा की बचत किये बिना हम विकसित राष्ट्र का सपना नहीं देख सकते हैं।

आज जिस तेजी के साथ हम प्राकृतिक और पराम्परिक ऊर्जा के स्रोतों का उपयोग कर रहे हैं। उस रफ्तार से 40 साल बाद हो सकता है हमारे पास तेल और पानी के बड़े भंडार खत्म हो जाए। उस स्थिति में हमें ऊर्जा के गैर-पारंपरिक स्रोतों यानि सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा जैसे साधनों पर निर्भर होना पड़ेगा। लेकिन ऊर्जा के गैर-पारंपरिक स्रोतों को इस्तेमाल करना थोड़ा मुश्किल है और इस क्षेत्र में कार्य अभी प्रगति पर है। इन स्रोतों को इस्तेमाल में लाने के लिए कई तरह के वैज्ञानिक शोध चल रहे हैं जिनके परिणाम आने और आम जीवन में इस्तेमाल लाने के लायक बनाने में अभी समय लगेगा। इसे देखते हुए अगर हमने अभी से ऊर्जा के स्रोतों का संरक्षण करना शुरू नहीं किया तो आगे चलकर हालात बहुत बदतर हो सकते हैं।

केंद्र सरकार का कहना है कि देश के अब सभी 5 लाख 97 हजार 464 गांवों का विद्युतीकरण हो गया है। सरकार की परिभाषा के मुताबिक वे गांव इलेक्ट्रिफाइड माने जाते हैं। जहां बेसिक इलेक्ट्रिकल इंफ्रास्ट्रक्चर हो और गांव के 10 फीसदी मकानों और सार्वजनिक जगहों पर बिजली हो। भारत में बीते एक दशक के दौरान बढ़ती आबादी, आधुनिक सेवाओं तक पहुंच, विद्युतीकरण की दर तेज होने और सकल घरेलू आय में वृद्धि की वजह से ऊर्जा की मांग काफी बढ़ी है।

तुलसी की खेती

कर्पूर तुलसी
काली तुलसी
वन तुलसी या राम तुलसी
जंगली तुलसी
होली बेसिल

श्री तुलसी या श्यामा तुलसी

तुलसी अत्यधिक औषधीय उपयोग का पौधा है। जिसकी महत्ता पुरानी चिकित्सा पद्धति एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति दोनों में है। वर्त्तमान में इससे अनेकों खाँसी की दवाएँ साबुन, हेयर शैम्पू आदि बनाए जाते लगे हैं। जिससे तुलसी के उत्पाद की मांग काफी बढ़ गई है। अतः मांग की पूर्ति बिना खेती के संभव नहीं हैं।

परिचय

तुलसी की ओसिमम प्रजाति को तेल उत्पादन के लिए उगाया जाता है। तुलसी की इस प्रजाति की भारत में बड़े पैमाने पर खेती होती है। उत्तर प्रदेश में बरेली, बादयूं, मुरादाबाद और सीतापुर जिलों में तथा बिहार के मुंगेर जिला में इसकी खेती की जाती है। इसका प्रयोग परफ्यूम व कास्मेटिक इंडस्ट्रीज में अधिक होता है। तूलसी की ओसीमस सेंक्टेम प्रजाति के सारभूत तेल की अधिक कीमत होती है, किन्तु तेल की मात्रा कम मिलती है।

तुलसी की विभिन्न प्रजतियां

भारत में तुलसी का पौधा धार्मिक एवं औषधीय महत्व का है। इसे हिंदी में तुलसी, संस्कृत में सुलभा, ग्राम्या, बहूभंजरी एवं अंग्रेजी में होली बेसिल के नाम से जाना जाता है। लेमिएसी कूल के इस पौधे की विश्व में 150 से ज्यादा प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इसकी मूल प्रकृति एवं गुण एक समान हैं।

प्रमुख प्रजातियाँ निम्न प्रकार हैं

बेसिल तुलसी या फ्रेंच बेसिल

डाउनलोड करें किसान समाधान एंड्राइड एप्प और जाने अन्य व्यापारिक फसलों की जानकारी

स्वीट फेंच बेसिल या बोबई तुलसी

मृदा व जलवायु

इसकी खेती, कम उपजाऊ जमीन जिसमें पानी की निकासी का उचित प्रबंध हो, अच्छी होती है बलूई दोमट जमीन इसके लिए बहुत उपयुक्त होती हैं। इसके लिए उष्ण कटिबंध एवं कटिबंधीय दोनों तरह जलवायु होती है।

भूमि की तैयारी

जमीन की तैयारी ठीक तरह से कर लेनी चाहिए। जमीन जों के दूसरे सप्ताह तक तैयार हो जानी चाहिए।

बुवाई / रोपाई

इसकी खेती बीज द्वारा होती है लेकिन खेती में बीज की बुवाई सीधे नहीं करनी चाहिए। पहले इसकी नर्सरी तैयार करनी चाहिए। बाद में उसकी रोपाई करनी चाहिए।

पौध तैयार करना

जमीन की 15 - 20 सेमी. गहरी खुदाई कर के खरपतवार आदि निकाल तैयार करा लेना चाहिए। 15 टन प्रति हे. की दर से गोबर की सड़ी खाद अच्छी तरह से मिला देना चाहिए। 1 मी. ङ्क 1 मी. आकार की जमीन सतह से उभरी हुई क्यारियां बना कर उचित मात्र में कंपोस्ट एवं उर्वरक मिला दिन चाहिए। 750 ग्रा. - 1 किग्रा. बीज एक हेक्टयेर के लिए पर्याप्त होता है। बीज की बुवाई 1ः10 के अनुपात में रेत या बालू मिला कर 8-10 सेमी. की दूरी पर पक्तियां में करनी चाहिए। बीज की गहराई अधिक नहीं होनी चाहिए। जमाव के 15-20 दिन बाद 20 कि./ हे. की दर से नेत्रजन डालना उपयोगी होता है। पांच- छह सप्ताह में पौध रोपाई हेतु तैयार हो जाती है।

रोपाई

सूखे मौसम में रोपाई हमेशा दोपहर के बाद करनी चाहिए। रोपाई के बाद खेत को सिंचाई तुरंत कर देनी चाहिए। बादल या हल्की वर्षा वाले दिन इसकी रोपाई के लिए बहुत उपयुक्त होते हैं। इसकी रोपाई लाइन में लाइन 60 से. मी. तथा पौधे से पौधे 30 से. मी. की दूरी पर करनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

इसकी पहली निराई गुड़ाई रोपाई के एक माह बाद करनी चाहिए। दूसरी निराई - गुड़ाई पहली निराई के 3-4 सप्ताह बाद करनी चाहिए। बड़े क्षेत्रों में गुड़ाई ट्रैक्टर से की जा सकती है।

उर्वरक

इसके लिए 15 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद जमीन में डालना चाहिए। इसके अलावा 75-80 किग्रा. नेत्रजन 40-40 किग्रा. फास्फोरस व पोटाश की आवश्यता होती है। रोपाई के पहले एक तिहाई नेत्रजन तथा फस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा खेत में डालकर जमीन में मिला देने चाहिए। शेष नेत्रजन की मात्रा दो बार में खड़ी फसल में डालना चाहिए।

कटाई

जब पौधे में पूरी तरह से फूल आ जाए तथा नीचे के पत्ते पीले पड़ने लगे तो इसकी कटाई कर लेनी चाहिए। रोपाई के 10-12 सप्ताह के बाद यह कटाई के लिए तैयार हो जाती है।

आसवन

तुलसी का तेल पूरे पौधे के आसवन से प्राप्त होता है। इसका आसवन, जल तथा वाष्प, आसवन, दोनों विधि से किया जा सकता है। लेकिन वाष्प आसवन सबसे ज्यादा उपयुक्त होता है। कटाई के बाद तुलसी के पौधे को 4-5 घंटे छोड़ देना चाहिए। इससे आसवन में सुविधा होती है।

आय - व्यय विवरण

प्रति हेक्टेयर व्यय - रू. 10,500
तेल का पैदावार - 85 किलो प्रति हेक्टेयर
टेल की कीमत - 450 - रूपया प्रति किलो - 8/5 ङ्क 450 = 38,250
शुद्ध लाभ : रू. 38, 250 - 10,500 = 27,750

पैदावार

इसके फसल की औसत पैदावार 20 - 25 टन प्रति हेक्टेयर तथा तेल का पैदावार 80-100 किग्रा. हेक्टेयर तक होता है।

गुडमार औषधीय पौधे की खेती

गुडमार की खेती

विश्व में पाये जाने वाले अनेकों बहुमूल्य औषधीय पौधों में गुडमार एक बहुउपयोगी औषधीय पौधा है। यह एस्कलपिडेसी कुल का सदस्य है। इसका वानस्पतिक नाम जिमनिमा सिलवेस्ट्री है। गुडमार के पत्ते तथा जड़ औषधीय रूप में उपयोग किये जाते हैं।

वानस्पतिक विवरण

गुडमार बहुवर्षीय लता है। गुडमार की शाखाओं पर सूक्ष्म रोयें पाये जाते हैं। पत्ते अभिमुखी मृदुरोमेश अग्रभाग की तरफ नोकदार होते हैं। एस पर पीले रंग के गुच्छेनुमा फूल अगस्त - सितम्बर माह में खिलते हैं । गुडमार के फल लगभग 2 इंच लम्बे एवं कठोर होते हैं तथा बीज छोटे एवं काले - भूरे रंग के होते हैं ।

भौगोलिक वितरण

यह भारत वर्ष के विभिन्न भागों जैसे - मध्य भारत, पशिचमी घाट, कोकण, त्रवनकोर क्षेत्र के वनों में पाया जाता हैं । गुडमार मध्य प्रदेश के विभिन्न वन क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से काष्ठीय रोयेंदार लता के रूप में पाये जाने वाली वनस्पति हैं।

औषधीय उपयोग

गुडमार की पत्तियों का उपयोग मुख्यतः मधुमेह - नियंत्रण औषधीयों के निर्माण में किया जाता है। इसके सेवन से रक्तगत शर्करा की मात्रा कम हो जाती है , साथ ही पेशाब में शर्करा का आना स्वतः बंद हो जाता है। सर्पविष में गुडमार की जड़ को पीसकर या काढ़ा पिलाने से लाभ होता है। पत्ती या छाल का रस पेट के कीड़े मारने में उपयोग करते हैं। गुडमार यकृत को उत्तेजित करता है और अप्रत्यक्ष रूप से अग्नाशय की इन्सुलिन स्राव करने वाली ग्रंथियों की सहायता करता है । जड़ों का उपयोग खांसी, हृदय रोग, पुराने ज्वार, वात रोग तथा सफ़ेद दाग के उपचार हेतु किया जाता है।

रासायनिक संगठन

पत्तियों में जिम्नेमिक अम्ल, फ्वेरसियल, एन्थ्रान्वोनोन, जिम्नोसाइडस , सेपोनिन तथा कैल्सियम आक्जेलेट रसायन पाये जाते हैं ।

भूमि

गुडमार की खेती के लिए उचित जल निकास वाली दोमट मिटटी अच्छी होती है । गर्मियों में दो बार आड़ी - खड़ी जुताई कर एवं पाटा चलाकर खेत तैयार कर लेना चाहिए । पाटा चलाकर मिटटी को भुरभुरी व समतल कर लेना चाहिए ।

बीज

बीजों से खेती करने के लिए रोपनी में पौधा तैयार करना चाहिए। बीज बोने से पूर्व 3 ग्राम डायथेन एम 45 या बावेस्टीन नामक फफूंदनाशक से बीजों को उपचारित करना चाहिए। उपचारित बीजों को पहले से भरी पालीथीन की थैलियों में बो देना चाहिए। बीजों को बोने व रोपणी बनाने का सही समय अप्रैल - मई माह होता है। माह जुलाई - अगस्त तक पौधे खेत में रोपित करने योग हो जाते है।

कलम द्वारा पौध बनाकर

गुडमार की खेती पुराने पौधों की कलम से पौध बनाकर भी की जा सकती है । इसके लिए जनवरी - फ़रवरी माह उत्तम होता है । पालीथीन बैग में पौध तैयार कर जुलाई - अगस्त माह में खेत में रोपित किया जा सकता है। गुडमार एक बहुवर्षीय लता है । यह लगभग 20 - 30 वर्षों तक उपज देती रहती है।

रोपण

रोपण हेतु 1 म 1 मी. की दुरी पर तैयार किये गये गड्ढों में बारिश प्रारम्भ होने के पश्चात् जुलाई - अगस्त माह में रोपित कर दिए जाते हैं प्रति गड्ढा 5 किलोग्राम गोबर की पक्की खाद एवं 50 ग्राम नीम की खली डालनी चाहिए। गुडमार की खेती के लिए प्रति हेक्टेयर 10,000 पौधों की आवश्यकता होती है।

आरोहन व्यवस्था

गुडमार एक लता है। आरोहन व्यवस्था के लिए बांस , लोहे के एंगल एवं तारों का उपयोग करना चाहिए।

सिंचाई

गर्मी के समय 10 15 दिन तथा सर्दियों में 20 - 25 दिन के अंतराल में एक बार सिंचाई की जाय तो इसकी बढवार के लिए काफी अच्छा रहता है ।

फसल सुरक्षा

कभी - कभी अधिक बारिश के कारण पौधों में पीलेपन की समस्या आती है । इसके लिए बोनी के समय 10 कि.ग्रा. फ़र्स सल्फेट का प्रयोग प्रति हेक्टेयर की दर से किया जाना चाहिए।

फसल कटाई

गुडमार की खेती मुख्य रूप से इसकी पत्तियों के लिए की जाती है। रोपण के प्रथम वर्ष से ही पत्ते प्राप्त होना प्रारम्भ हो जाते हैं। समय बढ़ने के साथ - साथ इसकी लताए बढती रहती हैं तथा फसल की उपज भी बढती जाती है। गुडमार की फसल एक बार लगाने के बाद लगभग 20 - 25 वर्षों तक फसल देती रहती है। सिंचित अवस्था में दो बार पत्तों की तुडाई की जा सकती है ।

पहली सितम्बर - अक्तूबर में तथा दूसरी अप्रैल - मई में 7 गुडमार की परिपक्व एवं चयनित पत्तियों को तोड़कर उन्हें छायादार स्थान में सुखाना चाहिए। ग्रीष्म ऋतू में पौधों की परिपक फलियाँ एकत्र कर सुखाई जाती है। फलियों को एकत्र करते समय ध्यान रखना चाहिए की फलियाँ चटक न गई हो अन्यथा बीज उड़ जायेंगे , क्योंकि इनपर रुई लगी रहती है। एस प्रकार प्रति वर्ष पत्तियों को दो बार तुडाई करने पर तीसरे वर्ष से प्रत्येक पौधे से लगभग 5 कि.ग्रा. गीली पत्तियां अथवा एक किलोग्राम सुखी पत्तियां प्राप्त होती है। एक हेक्टेयर में लगभग 4 - 6 किवंटल सुखी पत्तियां प्राप्त होती है ।

संग्रहण काल

माह दिसम्बर - जनवरी में गुडमार की पत्तियों को चुनकर एकत्र करना चाहिए एवं इनकी जड़ों को ग्रीष्म ऋतू में उखड़ना चाहिए।

विनाश विहीन विदोहन प्रक्रिया

माह दिसम्बर - जनवरी में इसके पत्तों को हाथ से चुनकर एकत्र करना चाहिए। पत्तियां एकत्र करने के लिए पौधे को नहीं काटना चाहिए।

कुल प्राप्तियां

गुडमार की खेती से किसान 25 से 30 हजार रु, प्रति हेक्टेयर आय अर्जित कर सकता है ।

400 यात्री भूखे-प्यासे 24 घंटे इस्तांबुल एयरपोर्ट पर फंसे रहे

नई दिल्ली । नई दिल्ली से मुंबई और तुर्किये के बीच यात्रा करने वाले 400 यात्री भूखे-प्यासे 24 घंटे इस्तांबुल एयरपोर्ट पर फंसे रहे।उड़ान में देरी की वजह से यात्रियों को दिक्कत का सामना करना पड़ा। वहीं एयरलाइन का कहना था कि परिचालन संबंधी दिक्कत की वजह से यात्रियों को दिक्कत हुई। परेशान यात्रियों ने सोशल मीडिया पर बताया कि बिना ठहरने की उचित व्यवस्था और खाना के वे ठंड में एयरपोर्ट पर ही इंतजार करते रहे।एक यात्री ने कहा, हमारी इस्तांबुल से दिल्ली के लिए फ्लाइट थी।करीब 500 यात्री एयरपोर्ट पर ही फंस गए। उड़ान का समय रात का 8 बजकर 10 मिनट था।लेकिन यह फ्लाइट अगले दिन दोपहर 1 बजकर 30 मिनट के लिए शेडयूल कर दी गई। रिपोर्ट के मुताबिक यात्री ने कहा कि दिल्ली के लिए फ्लाइट कैंसल कर दी गई। आने-जाने की सुविधा और ठहरने की सुविधा के बिना यात्रियों को सात डिग्री के तापमान में एयरपोर्ट पर ही ठिठुरना पड़ा। एक अन्य यात्री ने कहा कि इंडिगो की फ्लाइट डिजास्टस साबित हुई। यह फ्लाइट करीब 20 घंटे लेट हो गई।यात्रियों ने बताया कि पहले उड़ान को दो घंटे देरी से बताया गया।इसके बाद अचानक विमान को रद्द कर दिया गया।इसके बाद बताया गया कि अब उड़ान 12 घंटे बाद के लिए शेड्यूल कर दी गई है।इसके बाद सारे यात्री फंस गए।कुछ लोग बीमार भी थे।ना यात्रियों को भोजन दिया गया और ना ही रुकने की जगह।इंडिगो के किसी कर्मचारी ने यात्रियों से संपर्क भी नहीं किया।

विजय दिवस समारोह में शामिल हो सकता है बांग्लादेश का प्रतिनिधिमंडल

कोलकाता । बांग्लादेश के एक प्रतिनिधिमंडल के 16 दिसंबर को कोलकाता में आयोजित होने वाले विजय दिवस समारोह में शामिल होने की संभावना है।रक्षा सूत्रों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। सोलह दिसंबर, 1971 के युद्ध में पाकिस्तान पर भारतीय सशस्त्र बलों की ऐतिहासिक जीत की याद में हर साल 'विजय दिवस' मनाया जाता है। पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी शासन का विरोध करने वाले गुरिल्ला प्रतिरोध बल का हिस्सा रहे 'मुक्ति योद्धा' और बांग्लादेश सशस्त्र बलों के सेवारत अधिकारियों का एक बांग्लादेशी प्रतिनिधिमंडल हर साल कोलकाता में भारतीय सेना की पूर्वी कमान द्वारा आयोजित 'विजय दिवस' समारोह में शामिल होता है। रक्षा सूत्रों ने बताया कि 16 दिसंबर के समारोह में बांग्लादेश का एक प्रतिनिधिमंडल भी शामिल हो सकता है, हालांकि उन्होंने प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों की संख्या के बारे में कोई विवरण नहीं दिया। सेना की पूर्वी कमान 1971 के युद्ध में पाकिस्तान के खिलाफ भारतीय सशस्त्र बलों की ऐतिहासिक जीत के उपलक्ष्य में विजय दिवस पर कई कार्यक्रम आयोजित करेगी। एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी।पूर्वी कमान मुख्यालय के मेजर जनरल-जनरल स्टॉफ (एमजीजीएस) मेजर जनरल मोहित सेठ ने हाल में कहा था कि 16 दिसंबर को फोर्ट विलियम में विजय स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की जाएगी। उन्होंने कहा था कि 1971 के युद्ध में भाग लेने वाले पूर्व सैनिक भी इस कार्यक्रम में शामिल होंगे।

टॉफी के रैपर में छिपाकर रखा 17 लाख रुपये का सोना

नई दिल्ली । दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय (आईजीआई) एयरपोर्ट पर सीमा शुल्क अधिकारियों ने चेकिंग के दौरान यात्री के कब्जे से टॉफी के रैपर में छिपाकर रखा 17 लाख रुपये से ज्यादा का सोना जब्त किया है। इसकी जानकारी कस्टम विभाग ने आधिकारिक बयान में दी। सीमा शुल्क विभाग की ओर से बताया गया कि राजस्थान के 22 वर्षीय भारतीय पुरुष यात्री दोहा से दिल्ली पहुंचा। जहां एयरपोर्ट पर शख्स ने यात्रा के बाद कस्टम अधिकारियों को चकमा देने की कोशिश की। लेकिन अधिकारियों के सामने उसकी चालाकी नहीं चली। अधिकारियों ने उसके सामान से बहुत सारी टॉफी बरामग की। लेकिन जांच में पता चला कि उस शख्स ने टॉफी के रैपर में 240 ग्राम (करीब) सोने की चेन छिपाकर रखी थी। अधिकारियों ने फौरन उस सोने को जब्त किया। जब्त किए गए सोने की कीमत 17.47 लाख रुपये है। सीमा शुल्क विभाग ने बताया तेज निगाह वाले अधिकारियों ने बैगेज एक्स-रे के दौरान संदिग्ध तस्वीरें देखीं, जिससे यह मीठी खोज हुई! जीवन भले ही चॉकलेट के डिब्बे जैसा हो, लेकिन सीमा शुल्क विभाग हमेशा आखिरी चीज चुनता है!

श्वान पालने वालों के लिए बड़ी खबर, 1 जनवरी से अहमदाबाद में रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य

अहमदाबाद। शहर में श्वान पालने के शौकीनों के लिए बड़ी खबर सामने आई है। शहर में आवारा पशुओं पर अंकुश के बाद अहमदाबाद नगर निगम (एएमसी) ने पालतु श्वान को लेकर बड़ा फैसला किया है। जिसके मुताबिक घर में श्वान रखने वालों को अब उसका पंजीकरण कराना होगा और यह नियम 1 जनवरी 2025 से लागू हो जाएगा। जानकारी के मुताबिक एएमसी ने घर में पालतु श्वान रखने के लिए पंजीकरण अनिवार्य कर दिया है। 1 जनवरी से पालतु श्वान का पंजीकरण करवाना अनिवार्य होगा।इतना ही नहीं पालतु श्वान और उसके रखने की जगह की तस्वीर भी एएमसी को उपलब्ध करानी होगी।पालतु श्वान रखने के लिए रु. 200 का भुगतान कर पंजीकरण कराना होगा और श्वान की तस्वीर एएमसी की वेबसाइट पर अपलोड करनी होगी। पालतु श्वान के पंजीकरण के लिए आवेदक को अपनी तस्वीर के अलावा अपना आधार या चुनाव कार्ड, बिजली बिल, पालतु श्वान की फोटो और उसे रखने की जगह की तस्वीर देनी होगी। इतना ही नहीं पालतु श्वान का अनिवार्य रूप से टीकाकरण भी करवाना होगा। अहमदाबाद शहर में जिन नागरिकों को अपने घर में श्वान पाल रखा है उन्हें 1 जनवरी 2025 से 90 दिनों के भीतर पंजीकरण कराना अनिवार्य है। ताकि एएमसी के पास आपके पालतु श्वान का संपूर्ण ब्यौरा उपलब्ध रहेगा।

सड़क दुर्घटनाओं में भारत का रिकॉर्ड ऐसा कि, इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में मुंह छिपाना पड़ता है: गडकरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सत्ता पक्ष से विपक्षी दलों में सर्वाधिक लोकप्रिय मंत्री के रूप में अपनी पहचान बनाने वाले केंद्रीय सड़क, परिवहन एवं राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी संसद में अपनी साफगोई और स्पष्टवादिता के लिए जाने जाते हैं। मुद्दा चाहे किसी भी दल के जनप्रतिनिधि का हो, गडकरी की कार्यशैली से प्रभावित हुए बिना कोई रह नहीं सकता।

गुरुवार को प्रश्नकाल के दौरान लोकसभा में केंद्रीय सड़क, परिवहन एवं राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के एक वक्तव्य से हर कोई दंग रह गया। जिसमें उन्होंने देश में लगातार बढ़ती जा रही सड़क दुर्घटनाओं को लेकर अपनी गंभीर चिंता जताते हुए कहा कि 'सड़क दुर्घटनाओं में कमी तो भूल जाइए, मुझे ये कहने में कोई झिझक नहीं है कि विश्व स्तर पर इस मामले में भारत का सबसे गंदा रिकॉर्ड है। मैं सड़क दुर्घटनाओं पर चर्चा के लिए होने वाले अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मुंह छिपाने की कोशिश करता हूं'। स्वीडन ने हालांकि दुनिया में जीरो दुर्घटना के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है।

सड़क दुर्घटनाओं का आंकड़ा बताते हुए नितिन गडकरी ने कहा कि देश में सालाना होने वाली सड़क दुर्घटनाओं का आंकड़ा 1.78 लाख है। उत्तर प्रदेश इस मामले में शीर्ष पर है। वहां सड़क दुर्घटनाओं के 23 हजार 652 मामले सामने आए हैं। यह कुल दुर्घटनाओं का करीब 13.7 फीसदी होता है। इसके बाद तमिलनाडु में 18 हजार 347 मामले सामने आए। जो कि 10.6 फीसदी होता है। तीसरे स्थान पर 15 हजार 366 मामलों के साथ महाराष्ट्र (9 फीसदी) है। चौथे स्थान पर 13 हजार 798 मामलों के साथ मध्य प्रदेश में सड़क दुर्घटनाओं का आंकड़ा 8 फीसदी पर रहा। इन चारों राज्यों के मुख्यमंत्रियों से मुलाकात कर मामले में सुधार की कोशिश का तर्क गडकरी ने सदन के समक्ष दिया। उन्होंने सड़क दुर्घटनाओं के शहरों में सामने आए मामलों के बारे में बताते हुए कहा कि दिल्ली में 1 हजार 457 मामले, बेंगलुरु में 915 और जयपुर में 850 सड़क दुर्घटना के मामले सामने आ चुके हैं।

50 फीसदी के लक्ष्य तक पहुंचने से कोसो दूर

गडकरी ने कहा कि मंत्रालय ने मौजूदा साल के अंत तक देश में सड़क दुर्घटनाओं के आंकड़े में 50 फीसदी की कटौती का लक्ष्य रखा था। इसे हम हासिल नहीं कर सके। बल्कि यह बढ़ गए हैं। यह हमारे लिए बड़ी चिंता का विषय है कि दुर्घटनाओं में 60 फीसदी मौतें 18 से 34 साल के युवाओं की हो रही है। केंद्रीय मंत्री ने सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए सभी सांसदों से सहयोग करने का आह्वान किया। गडकरी ने कहा कि इस मामले में समाज के सहयोग की बेहद आवश्यकता है। लोग कानून का सम्मान नहीं करते जिसकी वजह से

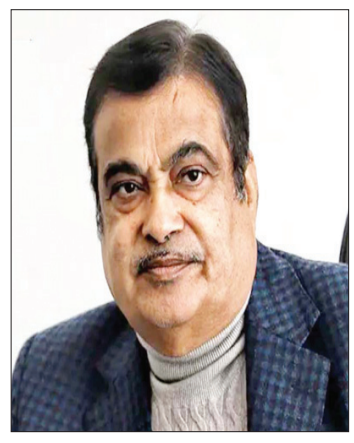

सड़क हादसों की संख्या बढ़ती जा रही है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने भी केंद्रीय मंत्री को मामले पर सदन के सभी सदस्यों को पुनः पत्र लिखकर सहयोग करने की अपील की। जिसे उन्होंने स्वीकार किया।

निजी अस्पताल में लगी आग, 7 की मौत, कई झुलसे

-मरने वालों में एक बच्चा और तीन महिलाएं शामिल, तीन गंभीर

चेन्नई। तमिलनाडु के डिंडीगुल स्थित एक निजी अस्पताल में गुरुवार रात आग लगने से अब तक सात लोगों की मौत हो गई है, जबकि कई झुलस गए।मरने वालों में एक बच्चा और तीन महिलाएं शामिल हैं।तीन लोगों की हालत गंभीर बताई जा रही है।जानकारी के मुताबिक आग गुरुवार रात लगी। सूचना के बाद फायर ब्रिगेड की गाड़ी मौके पर पहुंची और रेस्क्यू किया।अस्पताल में फंसे लोगों को निकालने के लिए फायर ब्रिगेड की तीन गाड़ियां मौके पर पहुंची। इसके बाद लोगों को बाहर निकालकर एम्बुलेंस और निजी एम्बुलेंस के जरिए दूसरे अस्पतालों में शिफ्ट किया गया। आग डिंडीगुल जिले के तिरुचि रोड स्थित चार मंजिला अस्पताल के ग्राउंड फ्लोर पर लगी थी।इसके बाद धीरे-धीरे आग ने पूरे अस्पताल को अपनी चपेट में ले लिया। शुरुआती जांच में आग की वजह शॉर्ट सर्किट बताया जा रहा है। हादसे के बाद ग्रामीण विकास मंत्री पहुंची। इस हादसे को लेकर डिंडीगुल की जिला कलेक्टर ने कहा कि रात 10 बजे निजी अस्पताल में आग लगी थी।खबर मिलते ही रेस्क्यू किया गया।मरीजों को बचाकर पास के सरकारी और निजी अस्पतालों में भर्ती कराया गया है जिनका इलाज चल रहा है।

अखिलेश का केंद्र पर हमला, देश की सीमाएं आज खतरे में और सुरक्षा में सेंध लगी हुई

नई दिल्ली (एजेंसी)।लोकसभा में संविधान पर चल रही चर्चा के दौरान समाजवादी पार्टी के प्रमुख और पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने सरकार पर संविधान के धर्मनिरपेक्ष मूल्यों का हनन करने और अल्पसंख्यकों को हाशियों पर धकेलने का आरोप लगाया। यादव ने कहा कि देश की सीमाएं आज खतरे में हैं। उन्होंने कहा, सीमाओं की रक्षा करना किसी भी सरकार का प्राथमिक कर्तव्य है, लेकिन वर्तमान सरकार के कार्यकाल में सीमाएं सिकुड़ रही हैं और सीमा सुरक्षा में सेंध लगने की घटनाएं बढ़ी हैं। उन्होंने देश में बढ़ती आर्थिक विषमता पर चिंता जताकर कहा, आज 82 करोड़ लोग सरकारी अन्न पर निर्भर हैं, जबकि मोदी सरकार अर्थव्यवस्था को ऊंचाई पर बताती है। उन्होंने सवाल उठाया कि देश की 60 प्रतिशत आबादी की प्रति व्यक्ति आय क्या है?

अल्पसंख्यकों के अधिकार और सुरक्षा

सपा प्रमुख अखिलेश ने आरोप लगाया कि अल्पसंख्यकों, विशेष रूप से मुसलमानों, को दूसरे दर्जे का नागरिक बनाने का प्रयास किया जा रहा है। उनके खिलाफ हिंसा और संपत्ति नुकसान की घटनाएं बढ़ रही हैं। उन्होंने केंद्र सरकार से अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की अपील की। अखिलेश यादव ने संविधान को लोकतंत्र की प्राणवायु और 90 प्रतिशत जनता का सुरक्षा कवच बताया। उन्होंने कहा, संविधान की प्रस्तावना इसकी आत्मा है और यही हमें समानता और न्याय की दिशा में ले जाती है।

दिल्ली के बाद अब रांची में बढ़ा वायु प्रदूषण, जमशेदपुर-धनबाद भी पीछे नहीं

-खुले में सांस लेना हुआ खतरनाक, मास्क लगाने की दी जा रही सलाह

रांची (एजेंसी)। एक तरफ ठंड की मार लोग झेल रहे हैं वहीं दिल्ली की हवा भी प्रदूषित है। अब दिल्ली के साथ ही झारखंड के भी हालात बिगड़ने लगे हैं। दूषित हवा के मामले में जमशेदपुर कुछ दिनों पहले टॉप पर था लेकिन दो दिनों से वहां कुछ सुधार हुआ है अब टॉप पोजीशन पर रांची आ गया है। जी हां! पिछले दो दिनों से एयर क्वालिटी इंडेक्स रिपोर्ट में रांची 200 से पार पहुंच गया है।

वहीं, जमशेदपुर व धनबाद का आंकड़ा भी 150 के ऊपर चला गया। ताजा आंकड़ा भी काफी निराशाजनक है जिसे लेकर लोगों को सचेत रहना होगा। वहीं, घर से बाहर निकले तो मास्क जरूर लगाएं। एयर क्वालिटी इंडेक्स के मुताबिक पिछले 24 घंटे में रांची में प्रदूषण का स्तर सबसे ऊपर रहा। यहां एक्युआई का आंकड़ा

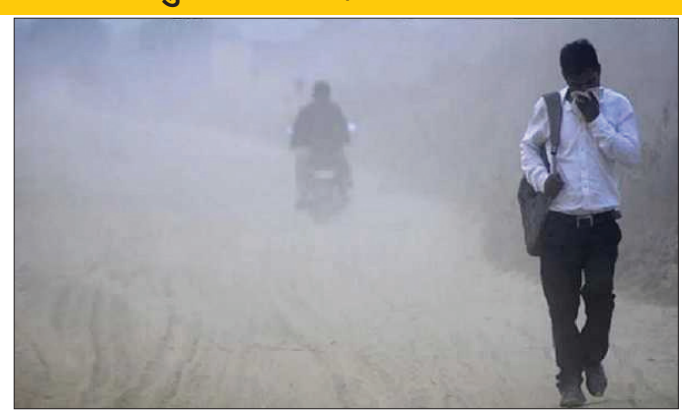

233, जमशेदपुर का 165 और धनबाद का 162 दर्ज किया गया है। जो सामान्य से ऊपर है। वहीं, आज रांची का सबसे ज्यादा 225, धनबाद का 166 और जमशेदपुर का 165 रहने की संभावना है। इन शहरों में खुले में सांस लेना खतरनाक हो सकता है। ऐसे में लोगों को मास्क लगाने की सलाह दी जा रही है।

पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड की ओर से प्रदूषण वाले शहर के लोगों को सावधान रहने की सलाह दी जा रही है। लोगों से घर के बाहर निकलने पर मास्क जरुर लगाने को कहा जा रहा है। वहीं घर के दरवाजे-खिड़की को ज्यादातर बंद रखने को कहा है ताकि घर के अंदर धूलकण आने से रोका जा सके। संभव हो तो घर में एयर प्यूरीफायर लगा सकते हैं। बाहर धूल या गंदी जगहों पर बच्चों को खेलने न दें।

बता दें 0 से 50 के बीच में एयर क्वालिटी इंडेक्स अच्छा माना जाता है। वहीं, 51 से 100 के बीच सामान्य, 101 से 200 के बीच खराब, 201 से 300 के बीच अनहेल्दी, 301 से 400 के बीच सर्वर और 401 से 500 के बीच खतरा यानी यह डेंजर जोन में आता हैं इसलिए वायु प्रदूषण के बचने के लिए चेतावनी और अपील की जा रही है।

केंद्रीय नेतृत्व ने फडणवीस को खुली छूट, मंत्रिमंडल का गठन अपने हिसाब से करें

मुंबई ।भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने कथित तौर पर महाराष्ट्र मंत्रिमंडल के गठन के संबंध में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को खुली छूट दे दी है।प्रोफाइल और विभाग आवंटित करने की जिम्मेदारी सीएम फडणवीस की ही होगी। राज्य के लिए महाराष्ट्र मंत्रिमंडल का विस्तार 14 दिसंबर को होगा। रिपोर्ट के अनुसार, बीजेपी को 20 मंत्री पद मिलने की उम्मीद है, जबकि शिवसेना और एनसीपी को 10-10 विभाग मिलने की उम्मीद है। महाराष्ट्र के नवनियुक्त मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बना चुका है। महाराष्ट्र भी विकास की कहानी का हिस्सा बनने की इच्छा रखता है। सीएम फडणवीस ने कहा कि उनके मंत्रिमंडल में भाजपा के संभावित मंत्रियों के नाम शॉर्टलिस्ट कर लिए गए हैं और अंतिम निर्णय पार्टी का केंद्रीय नेतृत्व करेगा। पिछले माह महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में भाजपा के नेतृत्व वाली महायुति ने भारी जीत दर्ज की थी। भाजपा-शिवसेना-राकांपा गठबंधन ने 230 सीटें जीतीं, जबकि गठबंधन का हिस्सा छोटे दल पांच सीटों पर विजयी रहे। फडणवीस के अलावा, शिवसेना प्रमुख एकनाथ शिंदे और अजित पवार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राजनीति, उद्योग और मनोरंजन क्षेत्र के कई नेताओं की उपस्थिति में उपमुख्यमंत्रियों के रूप में शपथ ली। फडणवीस ने सत्ता-साझाकरण समझौते पर सत्तारूढ़ गठबंधन के बीच मतभेदों की रिपोर्टों को भी खारिज कर दिया।

दिल्ली बीजेपी ने 5000 पन्नों के सबूतों के साथ अवैध रोहिंग्या, बांग्लादेशी, डुप्लीकेट और फर्जी पते वाले मतदाताओं के खिलाफ आपत्ति दर्ज की

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली बीजेपी के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने आज मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य दो चुनाव आयुक्तों से मुलाकात कर दिल्ली की मतदाता सूची में लाखों अवैध घुसपैठियों (रोहिंग्या और बांग्लादेशी मूल के), डुप्लीकेट, फर्जी पते वाले और मृत लोगों के नाम शामिल होने का विरोध दर्ज कराया। उन्होंने मांग की कि चुनाव आयोग इन शिकायतों को प्राथमिकता से कानूनी आधार पर हल करे ताकि दिल्ली विधानसभा चुनाव पारदर्शी और निष्पक्ष हों।

वीरेंद्र सचदेवा के नेतृत्व वाले इस प्रतिनिधिमंडल में बीजेपी की चुनाव समन्वय समिति के राष्ट्रीय संयोजक ओम पाठक, केंद्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा, सांसद और वरिष्ठ अधिवक्ता सुब्रांसुरी स्वराज, दिल्ली बीजेपी मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर और दिल्ली बीजेपी चुनाव समिति के संयोजक अधिवक्ता संकेत गुप्ता शामिल थे।

वीरेंद्र सचदेवा ने ECI को 5000 पन्नों के प्राथमिक सबूतों के साथ विस्तृत प्रस्तुति दी। दिल्ली बीजेपी अध्यक्ष ने चुनाव आयोग को

बताया कि यह हैरानी की बात है कि हर बार लोकसभा चुनाव समाप्त होने और विधानसभा चुनाव शुरू होने के बीच लाखों नए मतदाता पंजीकृत होते हैं। यह संख्या वार्षिक मतदाता सारांश संशोधन की सामान्य प्रक्रिया से काफी अधिक होती है।

सचदेवा ने कहा कि अगस्त 2024 के चुनाव आयोग के एक सर्कुलर के आधार पर, बीजेपी कार्यकर्ता दिल्ली के 70 विधानसभा क्षेत्रों में जांच कर रहे हैं और पाया है कि बड़ी संख्या में अवैध रोहिंग्या और बांग्लादेशी मतदाता पंजीकृत हैं। इसके अलावा, डुप्लीकेट, फर्जी पते और मृत मतदाता भी बड़ी संख्या में सूची में शामिल हैं। उन्होंने चुनाव आयोग से अपील की कि अवैध मतदाताओं के पंजीकरण और नकली मतदान के खिलाफ अभियान चलाया जाए। उन्होंने मीडिया और रेडियो अभियानों के जरिए ऐसे मतदाताओं को सख्त चेतावनी देने की भी मांग की।

बांसुरी स्वराज ने दिए कानूनी सबूत

सुबांसुरी स्वराज ने 18 मजबूत सबूतों की सूची प्रस्तुत की, जिनमें रोहिंग्या और बांग्लादेशी घुसपैठियों के पंजीकरण का प्रमाण है। उन्होंने बताया कि कैसे कई निर्वाचन क्षेत्रों की मतदाता सूचियों में एक ही परिवार के व्यक्ति अलग-अलग EPIC नंबरों के साथ बार-बार पंजीकृत हैं। उन्होंने ऐसे मामलों का जिक्र किया जहां एक ही समुदाय के मतदाता गैर-मौजूद पते पर पंजीकृत हैं या एक ही परिवार के सदस्य एक से अधिक निर्वाचन क्षेत्रों में पंजीकृत हैं। उन्होंने यह भी कहा कि बीएलओ अपने पवित्र कर्तव्य को निभाने में विफल हो रहे हैं। हर्ष मल्होत्रा ने आम आदमी पार्टी के गलत प्रचार पर चुनाव आयोग को विरोध से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि बीजेपी केवल घुसपैठियों और फर्जी पते वाले मतदाताओं का विरोध कर रही है, न कि भारतीय मूल के मतदाताओं का। उन्होंने चुनाव आयोग से मीडिया के माध्यम से इस मामले पर स्पष्टता देने का अनुरोध किया।

पुरुषो के खिलाफ दहेज कानून के दुरुपयोग को रोकने की मांग

बेंगलुरु इंजीनियर अतुल सुभाष आत्महत्या के बाद सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका

नई दिल्ली (एजेंसी)। बेंगलुरु स्थित एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर की आत्महत्या के बाद दहेज कानूनों के दुरुपयोग और दुरुपयोग के लिए दिशानिर्देश पेश करने की मांग करते हुए सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की गई है। उत्तर प्रदेश के 34 वर्षीय तकनीकी विशेषज्ञ अतुल सुभाष की मंगलवार को बेंगलुरु में उनके आवास पर आत्महत्या से मृत्यु हो गई। सुभाष ने 24 पन्नों का एक नोट और 1.5 घंटे लंबा एक वीडियो छोड़ा, जिसमें अपनी अलग रह रही पत्नी और उसके परिवार पर उत्पीड़न और उनके खिलाफ झूठे मामले दर्ज करने का आरोप लगाया गया।

वकील विशाल तिवारी द्वारा दायर याचिका में अदालत से केंद्र को अपने पहले के फैसले में की गई टिप्पणियों को

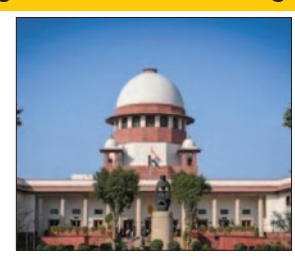

लागू करने का निर्देश देने की मांग की गई। अदालत ने भारतीय दंड संहिता की धारा 498 ए के दुरुपयोग को चिह्नित किया था, जहां पति और उसके रिश्तेदारों को पत्नी के खिलाफ घरेलू क्रूरता का आरोप लगाते हुए अनावश्यक रूप से आपराधिक मामलों में घसीटा जाता है। इसने अदालत से मौजूदा दहेज और घरेलू हिंसा कानूनों की समीक्षा और सुधार करने और उनके दुरुपयोग को रोकने के उपाय सुझाने के लिए सेवानिवृत्त न्यायाधीशों, वकीलों और कानूनी न्यायविदों की एक विशेषज्ञ समिति बनाने के निर्देश जारी करने की भी मांग की। याचिका में यह भी मांग की गई है कि विवाह पंजीकरण में विवाह के दौरान दिए गए सामान और उपहारों को भी दर्ज किया जाना चाहिए।

गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को कहा था कि अदालतों को दहेज उत्पीड़न के मामलों में सावधानी बरतनी चाहिए ताकि कानून का दुरुपयोग रोका जा सके और पति के रिश्तेदारों को फंसाने की प्रवृत्ति को देखते हुए परिवार के निर्दोष सदस्यों को अनावश्यक परेशानी से बचाया जा सके।

अमेरिका ने क्यों नहीं सौंपा खालिस्तानी आतंकी पन्नू का बैंक डिटेल, इसके पीछे क्या है मंसूबा?

नई दिल्ली (एजेंसी)। खालिस्तानी आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू को से जुड़ा बड़ा अपडेट सामने आया है। भारत ने एक मामले में अमेरिका से आतंकी पन्नू के बैंक खातों और मोबाइल नंबर्स की डिटेल मांगी थी। वॉशिंगटन ने जानकारी साझा करने से इनकार कर दिया। भारत और अमेरिका के बीच आतंकवाद के खिलाफ सहयोग करने का करार है, इसके बावजूद भारतीय जांच एजेंसी की मांग को ठुकरा दिया। बता दें कि खालिस्तानी आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू को भारत ने यूएपीए के तहत आतंकवादी घोषित किया हुआ है। उस पर कई संगीन धाराओं में मामला दर्ज है। बता दें कि पन्नू ने पंजाब और हरियाणा में स्वतंत्रता दिवस से पहले इमारतों पर तिरंगे की जगह खालिस्तान का झंडा फहराने वाले को 2,500 डॉलर देने की घोषणा की थी।

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (एनआईए) ने एक गंभीर मामले की छानबीन के दौरान अमेरिका से खालिस्तानी आतंकी पन्नू के बैंक खातों की डिटेल और मोबाइल फोन नंबर्स का ब्योरा मांगा। रिपोर्ट की मानें तो अमेरिका ने भारत के इस आग्रह को ठुकराते हुए इनसे जुड़ी जानकारियां साझा करने से इनकार कर दिया। अमेरिकी अधिकारियों ने अपने घरेलू कानूनी प्रावधानों का हवाला देते हुए बैंक अकाउंट डिटेल और मोबाइल फोन नंबर्स का ब्योरा साझा करने से इनकार कर दिया।

अमेरिकी अधिकारियों ने बताया कि जिस अपराध के लिए एनआईए की ओर से जानकारी मांगी गई थी, उसके लिए अमेरिका में सिर्फ 1 साल जेल का प्रावधान है। ऐसे में संबंधित अपराध के लिए इस तरह की जानकारियां उपलब्ध नहीं कराई जा सकती हैं।एनआईए ने चार साल से भी ज्यादा पुराने मामले में पन्नू से जुड़ी डिटेल अमेरिका से मांगी थी. दरअसल, 14 अगस्त 2020 को स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर दो लोगों ने सुरक्षा घेरा तोड़कर मोगा के जिला प्रशासनिक परिसर में प्रवेश किया. उन्होंने छत पर खालिस्तान का झंडा फहराया और तिरंगे का अपमान किया। तत्कालीन मोगा एसएसपी हरमनबीर सिंह गिल ने कहा था कि दोनों लोगों की तस्वीरें सीसीटीवी कैमरों में कैद हो गई थीं. इस मामले में फरार पन्नू के खिलाफ गंभीर धाराओं में मामला दर्ज किया था। एनआईए इस मामले की जांच कर रही है.

अब 2 दिन में बंद हो जाएगी एसआईपी, नहीं लगेगा जुर्माना

- सेबी ने म्यूचुअल फंड कंपनियों को दिए सख्त निर्देश

नई दिल्ली ।

सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के माध्यम से म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले लोगों के लिए अच्छी खबर है, भारतीय प्रतिभूति और विनियमक बोर्ड (सेबी) ने नया नियम लागू कर दिया है जिसके अनुसार अब आपको एसआईपी बंद करने के लिए सिर्फ दो दिन का इंतजार करना होगा। यह नियम 1 दिसंबर, 2024 से लागू हो चुका है। पहले सिपाहियों को 10 वर्किंग डेज़ का इंतजार करना पड़ता था, जिससे कई लोग अपनी सिप बंद करने में समय परेशान होते थे। इस नए नियम से निवेशकों को बड़ी राहत मिलेगी, क्योंकि अब वे अपने एसआईपी को दो दिन पहले ही बंद कर सकेंगे। यह न केवल जुर्माने से बचाएगा, बल्कि उन्हें अपने निवेश पर अधिक नियंत्रण भी मिलेगा। सेबी ने इस नए नियम को पारदर्शिता और निवेशकों के हितों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया है। वरिष्ठ आर्थिक सलाहकारों का कहना है कि इस नए नियम से निवेशकों को वित्तीय योजनाओं में अधिक सावधानी बरतने में मदद मिलेगी। यह भी निवेशकों को आत्मविश्वास देगा की उनके निवेशों पर पूरी निगरानी हो रही है। इस नए नियम के लागू होने से बाजार में भी एक नया जोश आया है, क्योंकि लोग अब अपने निवेशों पर अधिक नियंत्रण बनाए रख सकेंगे। यह नियम आम लोगों के वित्तीय सुरक्षा को भी मजबूत करेगा और उन्हें बेहतर वित्तीय योजनाओं में निवेश करने का साहस देगा। इस तरह सेबी द्वारा नए नियमों की घोषणा से म्यूचुअल फंड निवेशकों को एक बड़ी सुविधा प्रदान की गई है और वित्तीय योजनाओं में निवेश करने के लिए उन्हें अधिक आत्मविश्वास मिलेगा।

रूस की तेल कंपनी रिलायंस को 500,000 बैरल प्रतिदिन कच्चा तेल देगी!

10 वर्षीय समझौता वैश्विक आपूर्ति का 0.5 प्रतिशत है

मुंबई ।

रूस की सरकारी तेल कंपनी रोसनेफ्ट ने भारतीय निजी रिफाइनर रिलायंस को लगभग 500,000 बैरल प्रतिदिन (बीपीडी) कच्चे तेल की आपूर्ति करने पर सहमत हुई है, जो दोनों देशों के बीच अब तक का सबसे बड़ा ऊर्जा सौदा है।

10 वर्षीय समझौता वैश्विक आपूर्ति का 0.5 प्रतिशत है और आज की कीमतों पर लगभग 13 बिलियन डॉलर प्रति वर्ष है याने 11 हजार 322 करोड़ रुपये से ज्यादा का होगा।

इस सौदे से जुड़े तीनों सूत्रों ने बताया कि इस सौदे के तहत, रोसनेफ्ट हर महीने विभिन्न रूसी कच्चे तेल के 20-21 अफ्रामैक्स आकार के कार्गो (80,000 से 100,000 मीट्रिक टन) और ईंधन तेल के लगभग 100,000 टन के तीन कार्गो की आपूर्ति करेगा। ये शिपमेंट पश्चिमी राज्य गुजरात के जामनगर में रिलायंस के रिफाइनिंग कॉम्प्लेक्स, जो दुनिया का सबसे बड़ा है, के लिए आपूर्ति की जाएगी। 2024 में रिलायंस ने रोसनेफ्ट के साथ हर महीने 3 मिलियन बैरल कच्चे तेल की खरीद का सौदा किया था। रोसनेफ्ट नियमित आधार पर बिचौलियों के माध्यम से रिलायंस को कच्चा तेल भी बेच रहा है। एक सूत्र ने बताया कि नए सौदे में रूसी बंदरगाहों से रोसनेफ्ट के समुद्री तेल निर्यात का लगभग आधा हिस्सा शामिल है, जिससे अन्य व्यापारियों और बिचौलियों के लिए बहुत अधिक आपूर्ति उपलब्ध नहीं होती है। सूत्रों के अनुसार जनवरी से अक्टूबर तक रिलायंस ने औसतन 405,000 बैरल प्रतिदिन रूसी तेल का आयात किया, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में 388,500 बैरल प्रतिदिन से अधिक है।

टोयोटा वेलफायर का घटा वेटिंग पीरियड

नई दिल्ली।

टोयोटा वेलफायर कार के लिए वेटिंग पीरियड घटकर अब 6 महीने रह गया है।पहले ग्राहकों को इसके लिए 12 महीने तक इंतजार करना पड़ता था। नवंबर 2024 में इस कार की केवल 86 यूनिट्स की बिक्री हुई, जो पिछले 6 महीनों में इसका सबसे खराब प्रदर्शन है। अक्टूबर में 115 यूनिट्स बिकी थीं, और नवंबर में इसकी बिक्री में 29 यूनिट्स की कमी देखी गई। पिछले छह महीनों के बिक्री आंकड़ों के मुताबिक, जून 2024 में 142 यूनिट्स, जुलाई 2024 में 113 यूनिट्स, अगस्त 2024 में 114 यूनिट्स, सितंबर 2024 में 87 यूनिट्स, अक्टूबर 2024 में 115 यूनिट्स, और नवंबर 2024 में 86 यूनिट्स बिकीं। इस दौरान कुल 657 यूनिट्स की बिक्री हुई। टोयोटा वेलफायर का डिजाइन बेहद मॉडर्न है और इसमें शानदार डैशबोर्ड, एंबिएंट लाइटिंग और 14 इंच का बड़ा टचस्क्रीन इन्फोटेनमेंट सिस्टम जैसी सुविधाएं मिलती हैं। इसके अलावा, इसमें डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, वेंटिलेटेड और हीटेड सीट्स, इलेक्ट्रिकली एडजस्ट होने वाला स्टीयरिंग व्हील, रूफ-माउंटेड एंटरटेनमेंट सिस्टम और स्प्लिट ग्लास रूफ जैसी सुविधाएं भी हैं।

सुरक्षा के लिहाज से भी वेलफायर बेहतरीन है, इसमें 360-डिग्री कैमरा और एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम जैसी सुविधाएं मिलती हैं। इस कार में 2.5 लीटर का 4-सिलेंडर पेट्रोल इंजन है, जो स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड सिस्टम से लैस है और 193 पीएस की पावर और 240 एनएम का टॉर्क जनरेट करता है। इसके ई-सीवीटी गियरबॉक्स की वजह से ड्राइविंग अनुभव और भी स्मूथ और आरामदायक बन जाता है। बता दें कि इस कार की एक्स-शोरूम कीमत 1.20 करोड़ रुपये है और इसके बावजूद खरीददारों में कमी नहीं आई है।

सेबी ने एसएमई कंपनियों के आईपीओ के नियमों में किया बड़ा सुधार

- यूपीएसआई की परिभाषा को और व्यापक और सख्त बनाया जाएगा

मुंबई ।

भारतीय शेयर बाजार के नियामक प्राधिकरण, सेबी छोटे और मझोले उद्यमों (एसएमई) के आईपीओ के नियमों में सुधार करने की योजना बना रहा है। इसके तहत अप्रकाशित प्राइस सेंसिटिव इंफॉर्मेशन (यूपीएसआई) की परिभाषा को और व्यापक और सख्त बनाया जाएगा। सूत्रों के मुताबिक ये सुधार 18 दिसंबर को होने वाली सेबी की बोर्ड बैठक में चर्चा के लिए रखा गया है। सेबी ने यह फैसला लिया है कि एसएमई लिस्टिंग नियमों को सख्त करके शेयर बाजार में धांधली और गलत प्रैक्टिस को रोका जा सके। इसके साथ ही, एसएमई आईपीओ में निवेश की न्यूनतम सीमा बढ़ाकर 2 लाख रुपये से 4 लाख रुपये करने का भी मौका दिया जा सकता है। समाचार के अनुसार इन सुधारों का मकसद है एसएमई लिस्टिंग में पारदर्शिता को बढ़ाना और निवेशकों को बेहतर सुरक्षा प्रदान करना। सेबी इन कदमों के जरिए इंसाइडर ट्रेडिंग (पिट) नियमों को भी मजबूत करने का इरादा रखता है। इसे लेकर बहस चरम पर हो रही है, जब सेबी चेयरपर्सन को संबंधित विवादों में फंसे रहने का आरोप भी

उठाया जा रहा है। इस सुधार से उम्मीद है कि शेयर बाजार में नए एसएमई कंपनियों के एक पारदर्शी और सकारात्मक मिलान की ऊर्जा बढ़ेगी।

बजाज ऑटो 20 दिसंबर को लॉन्च करेगा अपडेटेड चेतक इलेक्ट्रिक स्कूटर

नई दिल्ली ।

स्वदेशी कंपनी बजाज ऑटो लोकप्रिय इलेक्ट्रिक स्कूटर चेतक का अपडेटेड मॉडल लॉन्च करने जा रहा है। कंपनी 20 दिसंबर को इसे लांच करेगी। कंपनी नए वर्जन में नए बॉडी फेम का इस्तेमाल करेगी, जिसमें बैटरी पैक अब स्कूटर के फ्लोरबोर्ड के नीचे फिक्स होगा। इसके अलावा, अंडर सीट स्टोरेज को बढ़ाकर 22 लीटर तक किया जाएगा, जिससे ग्राहकों को ज्यादा स्पेस मिलेगा। नए चेतक इलेक्ट्रिक स्कूटर के डिजाइन में कुछ मामूली बदलाव हो सकते हैं, हालांकि इसकी स्टाइल और लुक्स में बहुत बड़ा परिवर्तन नहीं होगा। स्कूटर में नए बैटरी पैक के साथ ज्यादा रेंज मिलने की उम्मीद है, जिससे ग्राहक लंबी दूरी तय करने में सक्षम होंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, नया मॉडल मौजूदा वर्जन के आसपास की कीमत पर लॉन्च किया जा सकता है, जो कि 96,000 रुपये से लेकर 1.29 लाख रुपये (एक्स-शोरूम, दिल्ली) के बीच है। अनुमान है कि नए मॉडल की एक्स-शोरूम कीमत लगभग 1 लाख रुपये हो सकती है। इस इलेक्ट्रिक स्कूटर में स्टील बॉडी के साथ कुछ नई डिजाइन फीचर्स मिलेंगे, जैसे बॉडी कलर्ड रियर व्यू मिरर, सैटिन ब्लैक ग्रैब रेल, मैचिंग पिलियन फुटरेस्ट और चारकोल ब्लैक फिनिश टू हेडलाइट केसिंग। स्कूटर में डिस्क ब्रेक, अलॉय व्हील, एलईडी लाइटिंग, टेलीस्कोपिक फ्रंट सस्पेंशन और आईपी67 रेटेड वॉटरप्रूफ बैटरी जैसे महत्वपूर्ण फीचर्स भी दिए जाएंगे। इसके अलावा, एक एक्स्ट्रा 'स्पोर्ट' राइड मोड भी मिलेगा। भारत में चेतक का मुकाबला एथर रिज्टा जेड, ओला एस1 प्रो और टीवीएस आई-क्यूब जैसे इलेक्ट्रिक स्कूटर्स से है। ब्रेकिंग सिस्टम में सुधार करते हुए नए मॉडल में डिस्क ब्रेक सेटअप भी दिया जा सकता है। नए चेतक में हिल-होल्ड कंट्रोल, फॉलो मी होम लाइट, टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन, म्यूजिक कंट्रोल, कॉल अलर्ट, कस्टमाइजेबल थीम के साथ कलर्ड टीएफटी डिस्प्ले और ब्लूटूथ ऐप कनेक्टिविटी जैसी सुविधाएं भी मिलेंगी।

रक्षा मंत्रालय ने एचएएल से 12 सुखोई जेट खरीदने किया करार

सरकार ने जेट्स की खरीद के सौदे पर हस्ताक्षर किए

नई दिल्ली । रक्षा मंत्रालय ने भारतीय वायुसेना के लिए उन्हें और अधिक शक्तिशाली और तैयार बनाने के लिए 12 सुखोई जेट्स की खरीद के सौदे पर हस्ताक्षर किए हैं। इस 13,500 करोड़ रुपये के समझौते के ज़रिए, भारतीय रक्षा उद्योग का संयम और अनुभव ताकत में वृद्धि करेगा। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) के साथ हुई इस डील के माध्यम से, एसयू-30 एमकेआई जेट्स का निर्माण अब भारत में ही होगा। यह एक महत्वपूर्ण क़दम है जो भारत के आत्मनिर्भरता की धारा को मज़बूत करेगा। विमानों में घरेलू सामग्री का 62.6 प्रतिशत शामिल होने से, भारतीय वायुसेना की योग्यता और तैयारी में सुधार होगा। इस सौदे ने भारत के सशस्त्र बलों की ताकत को बढ़ावा देने के लिए एक नया मार्ग प्रदर्शित किया है। रक्षा मंत्रालय ने इस महत्वपूर्ण खरीद के संदर्भ में सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक बयान जारी किया है, जिसमें इस सौदे की महत्वपूर्णता और फायदे पर जोर दिया गया है। इसके माध्यम से, भारत ने अपने रक्षा सेक्टर को आगे बढ़ाया है और अपनी रक्षा तंत्र को मज़बूत करने के लिए ठोस क़दम उठाए हैं।

SBI
AMRIT VRISHTI
FD Scheme

एसबीआई की अमृत वृष्टि योजना- बेहतर निवेश का अवसर

आम ग्राहकों को 7.25 और वरिष्ठ को 7.75 फीसदी ब्याज दर मिलेगी

मुंबई । वर्तमान समय में निवेश करने के लिए मिल रहे अनगिनत ऑप्शन्स में से एक है भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) की नई अमृत वृष्टि योजना। यह सावधि जमा योजना है जिसका आकर्षण है उसकी अवधि के साथ सुनहरा ब्याज दर है। इस योजना में निवेश करने पर आम ग्राहकों को 7.25 फीसदी और वरिष्ठ नागरिकों को 7.75 फीसदी की ब्याज दर मिलेगी। इस योजना के तहत जो आशन किए जा रहे हैं, वे महिलाएं और वरिष्ठ नागरिकों के लिए भी हैं। सीमित अवधि की यह जमा योजना 444 दिनों के लिए है और उन्हें 16 जुलाई 2024 से मिलेगी। निवेश करने का अंतिम तारीख 31 मार्च 2025 है। इस योजना को किसी भी भारतीय नागरिक के लिए खोला गया है, चाहे वो निवासी हो या अनिवासी और इसमें व्यक्तिगत, संयुक्त खाते और कंपनियां भी निवेश कर सकती हैं।

दूसरों को मनपसंद डिश खिलाने वाली जोमैटो सरकार के डकार गई 803 करोड़! अब होगी वसूली

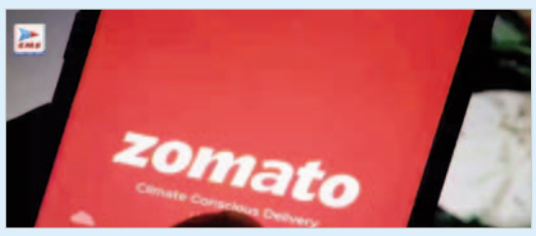

नई दिल्ली। जोमैटो को लेकर सरकार ने एक खुलासा किया है। सरकार ने कहा है कि जोमैटो ने 803 करोड़ रुपये की टैक्स चोरी की है और अब उसे वसूली के लिए नोटिस भेजा गया है। दूसरी ओर, जोमैटो ने इन आरोपों से इनकार किया और कहा है कि वह इससे बचने के लिए कानूनी सहारा लेगी। ऑनलाइन ऑर्डर पर खाने-पीने का सामान पहुंचाने वाले मंच जोमैटो ने शेयर बाजार को दी सूचना में बताया है कि महाराष्ट्र के ठाणे जिले में माल एवं सेवा कर (जीएसटी) विभाग ने उसे 803.4 करोड़ रुपये का टैक्स डिमांड मांग नोटिस भेजा है। इसमें ब्याज और जुर्माना भी शामिल है। कंपीन का कहना है कि डिलिवरी शुल्क पर ब्याज और जुर्माना के साथ जीएसटी का भुगतान न करने के संबंध में उसे नोटिस मिला है। जोमैटो ने कहा, 'कंपनी को 12 दिसंबर, 2024 को एक आदेश प्राप्त हुआ है। यह आदेश 29 अक्टूबर, 2019 से 31 मार्च, 2022 की अवधि के लिए सीजीएसटी और केंद्रीय उत्पाद शुल्क, ठाणे आयुक्तालय, महाराष्ट्र के संयुक्त आयुक्त द्वारा पारित किया गया है। इसमें लागू ब्याज के साथ 401,70,14,706 रुपये के जीएसटी की मांग और 401,70,14,706 रुपये के जुर्माने की पुष्टि की गई है।'

अचानक शेयर बाजार ने मारी पलटी...

सेंसेक्स 2000 अंक चढ़कर बंद

नई दिल्ली ।

भारतीय शेयर बाजार में सप्ताह के आखिरी दिन भारी उठापठक देखी जा रही है। शुरुआती कारोबार में शेयर बाजार में भारी गिरावट आई थी। लेकिन अब ना सिर्फ रिकवरी की है, बल्कि शानदार तेजी आई है। सेंसेक्स अभी 843 अंक चढ़कर 82,133 लेवल पर क्लोज हुआ, जबकि निफ्टी करीब 219 अंक उछलकर 24,768 पर बंद हुआ। इसके अलावा, बैंक निफ्टी में भी अच्छी तेजी देखने को मिली है। वहीं दोपहर तक शेयर बाजार में भारी गिरावट थी। सेंसेक्स 1200 अंक तक टूट चुका था और निफ्टी में 300 अंकों की गिरावट आई थी।

ऐसे में देखा जाए तो सेंसेक्स शुक्रवार के लो लेवल यानी 80,082 की तुलना में हाई लेवल 82,213.92 पर पहुंचा है, जो 2000 अंकों की उछल है। वहीं निफ्टी दिन के लो लेवल से 600 अंकों की तेजी दिखाई है। शेयर बाजार में इतनी तेज रिकवरी की वजह हैवीवेट स्टॉक में शानदार तेजी और निवेशकों द्वारा लार्ज कैप स्टॉक में खरीदारी को माना जा रहा है।

बीएसई सेंसेक्स के टॉप 30 शेयरों में से 27 शेयर उछाल पर थे, जबकि तीन शेयर टाटा

स्टील, इंडसइंड बैंक और जेएसडब्लू स्टील दबाव में थे। सबसे तेज उछाल भारती एयरटे के शेयर में 4.43 फीसदी की आई। इसके बाद कोटक बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर, टाइटन और रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में 1 फीसदी से ज्यादा की तेजी रही, जबकि सुबह के दौरान इन शेयरों में 1 फीसदी से ज्यादा की गिरावट देखी गई थी।

79 शेयरों ने लगाया अपर सर्किट

वहीं एनएसई की बात करें तो टॉप 50 शेयरों में से 40 शेयरों में तेजी रही, जबकि 10 शेयर ही गिरावट पर थे। 79 शेयरों ने अपर सर्किट लगाया था और 73 शेयरों ने लोअर सर्किट लगाया। इसके अलावा, 83 शेयर 52 सप्ताह के हाई पर थे और 18 शेयर 52 सप्ताह के निचले स्तर पर थे।

मुंबई में 455 करोड़ का बिका प्लॉट, रजिस्ट्री पर खर्च हुए 27.30 करोड़

मुंबई।

मुंबई में एक साढ़े 19 हजार वर्ग फिट का प्लॉट 455 करोड़ में बिका है। इतने महंगे प्लॉट की खासियत यह है कि ये जुहू इलाके में है जहां बॉलीबुड की तमाम हस्तियां रहती हैं। स्क्वायर याड्र्स के अनुसार, अग्रवाल होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड ने मुंबई के अत्यधिक मांग वाले जुहू इलाके में एक लैंड पार्सल का अधिग्रहण किया है, जिसकी कीमत 455 करोड़ रुपये है। यह प्लॉट शापूरजी पालोनजी ग्वालियर प्राइवेट लिमिटेड से हासिल किया था। स्क्वायर याड्र्स ने इस प्लॉट के रजिस्ट्रेशन डॉक्युमेंट को देखने के बाद बताया कि यह लैंड पार्सल लगभग 1,819.90 वर्ग मीटर (19,589.22 वर्ग फुट) के क्षेत्र में फैला है। इस लैंड डील को नवंबर 2024 में रजिस्ट्रेशन के बाद फाइनल किया गया। इस प्लॉट की रजिस्ट्री में 27.30 करोड़ रुपये की स्टांप ड्यूटी और 30,000 रुपये का रजिस्ट्रेश चार्ज लगा है। इससे पहले, अग्रवाल होल्डिंग्स ने सितंबर 2022 में जुहू में लगभग एक एकड़ और तीन-चौथाई एकड़ में फैले दो लैंड पार्सल का अधिग्रहण किया था, जिसका कुल मूल्य 332.8 करोड़ रुपये था। कैपिटल मार्केट एंड सर्विसेज, स्क्वायर याड्र्स के फाउंडर आनंद मूर्ति ने कहा, मुंबई देश की कमर्शियल कैपिटल है और एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र है इसलिए यहां प्रॉपर्टी की कीमतें बहुत ज्यादा हैं। बता दें कि मुंबई में बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स और साउथ व वेस्ट मुंबई की कई लोकेशन की मांग सबसे ज्यादा है। वहीं, जुहू और बांद्रा भी समंदर से अपनी नजदीकी और लग्जरी हाउसिंग प्रोजेक्ट्स के लिए निवेश के लिए हमेशा से आकर्षण का केंद्र रहा है।

यूपी से बिहार तक सस्ता हुआ तेल, हर जिले में बदला भाव

-ब्रेंट क्रूड का भाव नीचे आकर 73.41 डॉलर प्रति बैरल हुआ

नई दिल्ली ।

वैश्विक बाजार में पिछले 24 घंटे के दौरान कच्चे तेल की कीमतों में खास बदलाव नहीं आया। इस वजह से शुक्रवार सुबह देश के ज े यादातर शहरों में तेल की कीमतों में नरमी देखी जा सकती है। शुक्रवार को यूपी से से बिहार तक सभी जिले में तेल के दाम में बदलाव हुआ है। ज्यादातर बड़े शहरों में तेल की कीमतों में गिरावट दिख रही है। सरकारी तेल कंपनियों के अनुसार यूपी के गौतमबुद्ध नगर जिले में पेट्रोल 27 पैसे सस्ता होकर 94.71 रुपये लीटर, डीजल भी 32 पैसे गिरा और 87.81 रुपये लीटर पहुंच गया है। बिहार की राजधानी पटना में पेट्रोल 13 पैसे सस्ता हुआ और 105.60 रुपये लीटर हो गया, जबकि डीजल 13 पैसे गिरकर 92.43 रुपये लीटर पहुंच गया है। यूपी की राजधानी लखनऊ में पेट्रोल 16 पैसे चढ़कर 94.73 रुपये लीटर तो डीजल 19 पैसे चढ़कर 87.86 रुपये लीटर बिक रहा है।

कच्चे तेल की बात करें तो बीते 24 घंटे में इसकी कीमतों में मामूली गिरावट दिख रही है। ब्रेंट क्रूड का भाव नीचे आकर 73.41 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गया है। डब्े ले यूटीआई भी गिरकर 69.90 डॉलर प्रति बैरल हो गया है। वहीं दिल्ली में पेट्रोल 96.65 रुपये और

डीजल 89.82 रुपये प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76 रुपये प्रति लीटर है। नोएडा में पेट्रोल 94.71 रुपये और डीजल 87.81 रुपये प्रति लीटर हो गया है। पटना में पेट्रोल 105.60 रुपये और डीजल 92.43 रुपये प्रति लीटर हो गया है। लखनऊ में पेट्रोल 94.73 रुपये और डीजल 87.86 रुपये प्रति लीटर हो गया है।

आईसीआईसीआई प्रू लाइफ ने वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही के 99.04 प्रतिशत क्लेम सिर्फ 1.2 दिनों में निपटाए

रांची :आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस ने जुलाई 2024 से सितंबर 2024 की अवधि में 99.04 प्रतिशत का क्लेम सेटलमेंट रेशियो हासिल किया है, जो इंडस्ट्री में सबसे अधिक है। खास बात यह है कि डेथ क्लेम निपटाने में औसतन केवल 1.2 दिन का समय लगा। इंश्योरेंस के चीफ ऑपरेशन्स ऑफिसर, श्री अमीश बैंकर ने कहा, ह्लक्लेम वह पल है जब ग्राहक का विश्वास हम पर टिका होता है, और हम हर क्लेम को संवेदनशीलता के साथ संभालते हैं। वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही में हमने 99.04 प्रतिशत क्लेम सेटल किए, जबकि नॉन-इन्वेस्टिगेटेड क्लेम्स का एवरेज सेटलमेंट समय केवल 1.2 दिन था। इस अवधि में हमने 451 करोड़ रुपये के डेथ क्लेम निपटाए।

हमारी 'क्लेम फॉर श्योर' पहल के तहत, हम सभी दस्तावेज जमा होने के बाद योग्य क्लेम्स को एक दिन में निपटाने का वादा करते हैं। इस पहल के तहत वित्त वर्ष 2024 की दूसरी तिमाही में हमने 71.24 करोड़ रुपये के डेथ क्लेम निपटाए। हम लगातार इंडस्ट्री में अग्रणी क्लेम सेटलमेंट रेशियो के साथ सबसे आगे बने हुए हैं।

फिक्की एफएलओ की वार्षिक बैठक में 350 महिला प्रतिनिधि शामिल

गुवाहाटी ।

फिक्की महिला संगठन की अंतरराज्यीय बैठक में देश भर से लगभग 350 व्यवसायी महिलाएं और उद्यमी शो मिल हुई हैं। एफएलओ के पूर्वोत्तर चैप्टर द्वारा आयोजित मिस्टिकल नॉर्थईस्ट नामक इस बैठक में भाग लेने वाली महिलाएं प्रतिनिधि हैं। यह चार दिवसीय बैठक गुवाहाटी और शिलांग में आयोजित की जा रही है। इस बैठक में भारत के 20 चैप्टर से महिला उद्यमियों और पेशेवरों को एक साथ लाने का उद्देश्य है। इसके दौरान सलाह, नेटवर्किंग, और प्रदर्शन का मौका दिया जा रहा है। बैठक के पहले दो दिन गुवाहाटी में आयोजित होंगे और बाकी दो दिन शिलांग में। एफएलओ के माध्यम से इस सम्मेलन ने महिलाओं के उद्यमिता और एकजुटता को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण कदम साबित होने की उम्मीद है।

सबसे कम उम्र के गुकेश बने शतरंज के बादशाह, बधाइयों का लगा तांता

विश्वनाथन आनंद, सचिन तेंदुलकर, सहवाग से लेकर अभिनव बिंद्रा ने की जमकर तारीफ

एजेंसी

नई दिल्ली। कम उम्र में शतरंज विश्व चैंपियन बनकर इतिहास रचने वाले डी गुकेश की तारीफ करते हुए उन्हें लाखों युवाओं के लिए प्रेरणा माना जा रहा है। 18 साल के गुकेश की जीत का जश्न पूरे देश में मन रहा है और उनकी अविश्वसनीय उपलब्धि की सराहना की जा रही है। गुकेश ने सिंगापुर में चीन के डिंग लिरेन को 14वीं और आखिरी बाजी में हरा दिया था।

पांच बार के विश्व चैंपियन और महान खिलाड़ी विश्वनाथन आनंद ने भी कम उम्र में इतनी बड़ी जीत हासिल करने के लिए गुकेश की तारीफ की। आनंद ने कहा कि यह एक बड़ी उपलब्धि है। कम उम्र में विश्व चैंपियन बनना कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। जीत के बाद उन्हें जश्न मनाते देखना एक शानदार नजारा था। उम्मीद है कि इससे कई महत्वाकांक्षी खिलाड़ियों को प्रेरणा मिलेगी। गुकेश ने गैरी कास्परोव के 22 साल, छह महीने और 27 दिन के रिकॉर्ड को तोड़ दिया, जब उन्होंने 1985 में खिताब जीता था।

खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने गुकेश को शतरंज का प्रतिभाशाली खिलाड़ी बताया। उन्होंने एक्स पर लिखा- प्रतिष्ठित विश्व शतरंज चैंपियनशिप का खिताब जीतने और शतरंज के इतिहास में सबसे कम उम्र के विश्व चैंपियन बनने के लिए डी गुकेश को हार्दिक शुभकामनाएं। आपकी कड़ी मेहनत और समर्पण ने पूरे देश को गौरवान्वित किया है। देश के पहले और एकमात्र ट्रैक एंड फील्ड ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता चैंपियन भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने एक्स पर लिखा- बधाई हो, गुकेश। दुनिया में सर्वश्रेष्ठ और ऐसा करने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी। भारत को गर्व है। क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने कहा कि अपनी जीत के साथ गुकेश ने अनंत संभावनाओं की दुनिया खोल दी है। बधाई हो डी गुकेश सिर्फ 18 साल की उम्र में 18वें विश्व चैंपियन बनने पर! विशी के नक्शेकदम पर चलते हुए अब आप भारतीय शतरंज के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की अगली लहर का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

अभिनव बिंद्रा ने कहा कि गुकेश ने अपनी शानदार उपलब्धि से एक पीढ़ी को बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित किया है। बिंद्रा ने कहा कि गुकेश विश्व शतरंज चैंपियन बनने पर बधाई। दबाव में आपकी प्रतिभा, दृढ़ संकल्प और शालीनता ने पूरे देश को गौरवान्वित किया है। आपने न केवल एक खिताब जीता है, बल्कि एक पीढ़ी को बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित किया है। आपको आगे और भी बड़ी सफलता की शुभकामनाएं।

क्रिकेटर वीरेंद्र सहवाग ने कहा कि वाह, आप शानदार रहे गुकेश। सिर्फ 18 साल की उम्र में गुकेश सबसे कम उम्र के विश्व शतरंज चैंपियन बन गए हैं। हम सभी के लिए एक शानदार पल और आप एक प्रेरणा हैं, गुकेश। अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ ने ट्वीट किया- एक नया विश्व चैंपियन। बधाई डी गुकेश। यह गुकेश के लिए एक शानदार वर्ष का समापन है जिन्होंने कैंडिडेट्स 2024 टूर्नामेंट और शतरंज ओलंपियाड भी जीता है।

संक्षिप्त खबरें

स्टीव स्मिथ जल्द ही बड़ी पारी खेलने को तैयार : पैट कमिंस

ब्रिस्बेन। ब्रिस्बेन टेस्ट से पहले, ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने कहा कि उन्हें भरोसा है कि उनके प्रमुख बल्लेबाज स्टीव स्मिथ जल्द ही बड़ी पारी खेलने को तैयार है। स्मिथ इस सीरीज में अब तक भारत के खिलाफ खास प्रदर्शन नहीं कर सके हैं। साल 2024 में अब तक 7 टेस्ट में स्मिथ का औसत सिर्फ 23.20 रहा है। उनका अकेला अर्धशतक जनवरी में वेस्टइंडीज के खिलाफ ब्रिस्बेन में बना था। अपनी पसंदीदा नंबर चार की पोजीशन पर वापस आने के बाद भी स्मिथ भारत के खिलाफ सफल नहीं हुए हैं। उनके अब तक के स्कोर 0, 17 और 2 रहे हैं। कमिंस ने कहा, उनके रिकॉर्ड को देखकर लगता है कि रन दूर नहीं हैं। खासकर वह नेट्स में बेहतरीन दिख रहे हैं। वह आत्मविश्वास से भरे लगते हैं। पिछले मैच में वह लेग साइड पर आउट हो गए थे। मैं नहीं मानता कि इसे ज्यादा तूल देना चाहिए। मुझे पूरा यकीन है कि वह जल्द ही बड़ी पारी खेलने को तैयार है। सीरीज फिलहाल 1-1 से बराबर है, और गाबा में होने वाला अगला टेस्ट दोनों टीमों के लिए काफी अहम है। यह टेस्ट न सिर्फ सीरीज जीतने के लिए बल्कि विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के महत्वपूर्ण अंक जुटाने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

भारत की ना से पीसीबी के भविष्य पर संकट

नई दिल्ली। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के आयोजन पर छाए संशय के बादल छटने का नाम नहीं ले रहे है। जहां भारत ने सुरक्षा चिंताओं का हवाला देकर पाकिस्तान में खेलने से मना कर दिया है, जिसके बाद टूर्नामेंट के आयोजन स्थल और प्रारूप को लेकर संशय पैदा हो गया है। भारतीय टीम के पाकिस्तान में खेलने से इंकार के बाद एक हाइब्रिड मॉडल का सुझाव दिया गया था, इस हाइब्रिड मॉडल में भारत अपने मैच दुबई या किसी अन्य तटस्थ स्थान पर खेल सकता है। हालांकि, इस पर कोई ठोस सहमति नहीं बनी है। दिसंबर 2024 में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने मुद्दे पर चर्चा के लिए एक बैठक बुलाई थी, लेकिन भाग लेने वाले देशों के बीच सहमति की कमी के कारण बैठक को स्थगित करना पड़ा। इस विवाद के बीच रिपोर्ट में कहा गया है कि यदि गतिरोध बना रहता है, तब चैंपियंस ट्रॉफी को पारंपरिक वनडे प्रारूप से बदलकर टी20 प्रारूप में आयोजित किया जाएगा है। वनडे क्रिकेट की घटती लोकप्रियता और टी20 के प्रति दर्शकों के बढ़ते रुझान को देखकर निर्णय हो सकता है।

गाबा में तीसरे टेस्ट को लेकर आस्ट्रेलिया टेंशन में

भारत दे चुका है करारी शिकस्त

रोहित ब्रिगेड के हौसला बुदंल, कंगारु भी उस हार को चाहेगा भुलाना

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत-आस्ट्रेलिया का तीसरा टेस्ट गाबा में होने वाला है जिसको लेकर आस्ट्रेलिया ने टीम का ऐलान भी कर दिया है। गाबा वह मैदान है जहां आस्ट्रेलिया को हराना मुश्किल होता है लेकिन 2021 में गाबा में भारत ने ऑस्ट्रेलिया को हराया था। यह बात रोहित ब्रिगेड का हौसला बुदंल कर रही है। ऑस्ट्रेलिया भी उस हार को भुलाना चाहेगा।

ऑस्ट्रेलिया के ऑलराउंडर मिचेल मार्श ने कहा कि यह वक्त उस हार के बारे में सोचने का नहीं है। इसकी बजाय टीम को एडिलेड की तरह वापसी करने की अपनी क्षमता पर ध्यान देना होगा। भारत ने ऑस्ट्रेलिया के 2021 में गाबा टेस्ट मैच में ऋषभ पंत और शुभमन गिल की शानदार पारियों के दम पर हार का मजा चखाया था। यह ऑस्ट्रेलिया की इस मैदान पर 1988 के बाद पहली हार थी।

अब दोनों टीमें 14 दिसंबर से फिर आमने-सामने आने वाली हैं। यह पांच मैचों की सीरीज का तीसरा टेस्ट है। दोनों टीमें अभी 1-1 मैच जीत कर बराबर हैं। ऐसे में तीसरा टेस्ट बहुत अहम माना जा रहा है। मिचेल मार्श ने तीसरे टेस्ट मैच से पहले प्रैक्टिस सेशन में कहा कि पहले क्या हुआ अभी हमारे पास उसके बारे में सोचने का समय नहीं है। अभी हम केवल उन चीजों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जो वर्तमान में अहम हैं।

पर्थ में पहले टेस्ट मैच में हार के बाद हमने जिस तरह से वापसी की यह उसका एक उदाहरण है। इसलिए हम अपनी शैली की क्रिकेट खेलने पर ध्यान दे रहे हैं। मार्श ने अपनी फिटनेस के बारे में कहा कि मेरी पीठ में दर्द था लेकिन अब मैं अच्छा महसूस कर रहा हूं। मार्श ने पहले दो टेस्ट मैच में बहुत अधिक गेंदबाजी नहीं की लेकिन उन्होंने कहा कि यह टीम की रणनीति का हिस्सा है।

मिचेल मार्श ने तेज गेंदबाज जोस हेजलवुड की फिटनेस की स्थिति का स्पष्ट ब्यौरा नहीं दिया जो मांसपेशियों में खिंचाव के कारण दूसरे टेस्ट मैच में नहीं खेले थे। उन्होंने गुरुवार को अभ्यास सत्र में गेंदबाजी भी नहीं की। उन्होंने कहा कि अब तक जोस का सवाल है तो वह ऐसा खिलाड़ी है जो परेशान नहीं होता और मैच में खेलने के लिए जो कुछ संभव है वह करेगा।

ब्रिस्बेन टेस्ट की टीमें इस प्रकार हैं

भारत की संभावित प्लेइंग-11

यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल, शुभमन गिल, विराट कोहली, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रोहित शर्मा (कप्तान), नीतीश कुमार रेड्डी, रवींद्र जडेजा/ रविचंद्रन अश्विन/ वॉशिंगटन सुंदर, आकाश दीप, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज।

ऑस्ट्रेलिया की प्लेइंग 11

उस्मान ख्वाजा, नाथन मैकस्वीनी, मार्नस लाबुशेन, स्टीव स्मिथ, ट्रेविस हेड, मिचेल मार्श, एलेक्स कैरी (विकेट कीपर) पैट कमिंस, मिचेल स्टार्क, नाथन लायन, जोश हेजलवुड।

बांग्लादेश के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए वेस्टइंडीज की टीम घोषित

एजेंसी

किंग्सटाउन। वेस्टइंडीज ने घरेलू मैदान पर बांग्लादेश के खिलाफ आगामी टी20 सीरीज के लिए टीम की घोषणा कर दी है। विकेटकीपर-बल्लेबाज शाई होप और बाएं हाथ के बल्लेबाज शेरफेन रदरफोर्ड को टीम से बाहर कर दिया गया है।

ऑस्ट्रेलिया में बिग बैश लीग में खेलने के कारण इस जोड़ी को बाहर कर दिया गया, रोवमैन पॉवेल एक बार फिर खेल के सबसे छोटे प्रारूप में वेस्टइंडीज का नेतृत्व करेंगे। फॉर्म में चल रहे बल्लेबाज कीसी कार्टी ने सेंट किट्स में बांग्लादेश के खिलाफ तीसरे और अंतिम वनडे में 95 रन बनाकर पहला टी20 अंतरराष्ट्रीय कॉल-अप हासिल किया, जबकि अनुभवी बल्लेबाज जॉनसन चार्ल्स भी चोट के कारण हाल ही में सीरीज गंवाने के बाद वापस लौटे हैं। वेस्टइंडीज के कोच डेरेन सैमी ने कहा कि टीम को आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप के 2026 संस्करण को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। उन्होंने कहा, कार्टी ने हमें दिखाया है कि वह उस प्रारूप में एक बल्लेबाज हो सकता है, और बांग्लादेश के खिलाफ खेलते हुए, एक ऐसी टीम जिसे हम हल्के में नहीं ले सकते, हमें डेक पर सभी की जरूरत है। हमारे पास उपलब्ध खिलाड़ियों के साथ टीम का सावधानीपूर्वक चयन किया गया था, और मुझे विश्वास है चैंपियनशिप जीतने के लिए आवश्यक अनुभव के साथ यह हमारी सबसे व्यवस्थित टीम है। वेस्टइंडीज और बांग्लादेश के बीच तीनों मैच सेंट विंसेंट में होंगे, पहला मुकाबला 15 दिसंबर से शुरू होगा। दूसरा मैच ,17 और तीसरा 19 दिसंबर को खेला जाएगा।

रोहित ओपनिंग करे, ताकि टीम को शुरुवात से मजबूती मिले : शास्त्री

ब्रिस्बेन। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच चल रही टेस्ट सीरीज में निर्णायक मोड़ आ चुका है। इस पर पूर्व भारतीय कोच रवि शास्त्री ने कप्तान रोहित शर्मा को ओपनिंग की सलाह दी है। एडिलेड में दूसरे टेस्ट में भारत को 10 विकेट से मिली हार के बाद सीरीज 1-1 से बराबर है, और गाबा में शनिवार से शुरू होने वाले तीसरे टेस्ट में विजेता टीम के लिए सीरीज जीतने की संभावना प्रबल हो सकती है। दरअसल शास्त्री ने कहा कि रोहित ने अपने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन बतौर सलामी बल्लेबाज किया है। उन्होंने तेज गेंदबाजों के खिलाफ अपनी तकनीक और क्षमता का बार-बार प्रदर्शन किया है। शास्त्री ने कहा, अगर रोहित को ऑस्ट्रेलिया पर दबाव बनाना है, तब उन्हें पारी का आगाज करना चाहिए।

बीडब्ल्यूएफ से बाहर हुई ट्रीसा गोपीचंद की भारतीय युगल जोड़ी

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय महिला युगल जोड़ी ट्रीसा जॉली और गायत्री गोपीचंद शुक्रवार को हांग्जो में अपने ग्रुप ए मुकाबले में जापानी जोड़ी नामी मात्सुयामा और चिहारू शिदा के खिलाफ सीधे गेम में हारकर बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर फाइनल 2024 से बाहर हो गई। भारतीय जोड़ी करो या मरो वाले मैच में 17-21, 13-21 से हार गई, जहां एक जीत उन्हें टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में जगह दिला सकती थी। ट्रीसा और गायत्री, (सीज़न के अंतिम टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई करने वाले एकमात्र भारतीय) को ग्रुप के अपने शुरुआती मैच में विश्व नंबर 1 लियू शेंग शू और चीन के टैन निंग के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था।

उन्होंने अपने दूसरे मैच में मलेशियाई जोड़ी पर्ली टैन और थिना मुरलीधरन के खिलाफ जीत के साथ वापसी की और अपनी सेमीफाइनल की उम्मीदों को जिंदा रखा। हालाँकि, हालिया हार के बाद, वे तीन मैचों में केवल एक अंक के साथ अपने समूह में तीसरे स्थान पर रहे। चीनी और जापानी जोड़ी समूह में क्रमशः पहले और दूसरे स्थान पर रहते हुए अगले चरण में आगे बढ़ी।

35 ओवर के बाद बल्लेबाजी करना आसान : शुभमन गिल

एजेंसी

ब्रिसबेन। गाबा में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चल रहे बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तीसरे टेस्ट से पहले, स्टार भारतीय बल्लेबाज शुभमन गिल ने कहा कि ब्रिस्बेन में परिस्थितियां काफी चुनौतीपूर्ण हैं लेकिन 30 से 35 ओवर के बाद पहले बल्लेबाजी करना आसान होता है। सीरीज का तीसरा टेस्ट 14 दिसंबर को ब्रिसबेन क्रिकेट ग्राउंड पर शुरू होने वाला है। दोनों टीमें 1-1 मैच जीतकर पांच मैचों की श्रृंखला में बराबरी पर हैं। अगला मुकाबला द गाबा में होगा, एक ऐसा मैदान जहाँ 2020-21 के दौरे के दौरान एक अनुभवहीन भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया को 32 वर्षों में अपनी पहली टेस्ट हार दी थी। गिल ने प्री-मैच प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, जिस तीव्रता से यहाँ खेल खेले जाते हैं, खासकर टेस्ट मैच, वह कठिनाइयों में से एक है क्योंकि पाँच दिनों तक एक ही तीव्रता बनाए रखना ऑस्ट्रेलियाई दौरे को इतना कठिन बनाता है और सबसे बढ़कर यह मानसिक तीव्रता और मानसिक फिटनेस है जिसकी यहाँ ऑस्ट्रेलिया में आवश्यकता होती है। दाएं हाथ के बल्लेबाज ने कहा कि ब्रिस्बेन में परिस्थितियां काफी चुनौतीपूर्ण हैं लेकिन 30 से 35 ओवर के बाद नई गेंद आने से पहले बल्लेबाजी करना आसान होता है। उन्होंने कहा, ब्रिसबेन की परिस्थितियाँ चुनौतीपूर्ण हैं, लेकिन 30 से 35 ओवर तक का समय होता है जब तक कि दूसरी नई गेंद नहीं आ जाती, तब बल्लेबाजी करना आसान होता है। ऑस्ट्रेलिया की पिचें तेज़ हैं और ऑस्ट्रेलिया का इतिहास यह है कि उन्होंने अच्छे तेज़ गेंदबाज़ों के साथ खेला है क्योंकि विकेट ने उन्हें मदद की है क्योंकि यह कठोर और तेज़ है।

यशस्वी की देरी से काफी नाराज हुए रोहित शर्मा

नई दिल्ली। तीसरे टेस्ट से पहले युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल की देरी से भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा काफी नाराज हुए। भारतीय टीम को सुबह 10 बजे ब्रिस्बेन के लिए फ्लाइट पकड़नी थी, जिसके लिए होटल से रवाना होने का समय सुबह 8:30 बजे निर्धारित था। हालांकि, यशस्वी जायसवाल करीब 20 मिनट की देरी से होटल की लॉबी में पहुंचे। इस दौरान कप्तान रोहित शर्मा, कोच गौतम गंभीर और बाकी टीम बस में बैठे उनका इंतजार कर रहे थे। देरी के चलते टीम ने जायसवाल के बिना ही एयरपोर्ट के लिए रवाना होने का फैसला किया। रिपोर्ट्स के मुताबिक, रोहित शर्मा इस घटना से खासे नाराज दिखे। हालांकि, टीम प्रबंधन ने जायसवाल के लिए पहले से ही एक अलग कार की व्यवस्था कर रखी थी। वे वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारी के साथ उस वाहन में यात्रा करके एयरपोर्ट पहुंचे।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में नहीं खेलेंगे मोहम्मद शमी, फिटनेस को लेकर रोहित भी चिंतित

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी की फिटनेस चिंता का विषय बनी हुई है, जिससे ऑस्ट्रेलिया में चल रही बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए उनकी उपलब्धता पर संदेह है। राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) ने शमी को अंतरराष्ट्रीय टीम के लिए मंजूरी देने की संभावना नहीं है, जब तक कि वह पूरी तरह फिट नहीं हो जाते। सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2024 में बंगाल का अभियान बेंगलुरु में बड़ौदा के खिलाफ क्वार्टर फाइनल हार के साथ खत्म हुआ। शमी जोकि आखिरी बार वनडे विश्व कप 2023 में खेले थे, चोट के बाद वापसी कर रहे हैं।

भारतीय प्रशंसकों को उम्मीद थी कि मोहम्मद शमी ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए टीम इंडिया में वापसी करेंगे। उनकी वापसी योजना के अनुसार नहीं हुई है। अब शमी विजय हजारे ट्रॉफी में शामिल होंगे। जो दिसंबर के बीच में शुरू होगी। सैय्यद मुश्ताक अली ट्रॉफी में शमी के साथ तीन बार ऐसा हुआ जब उन्होंने 4 ओवर के स्पैल में 10 से ज्यादा की इकोनमी से रन बनाए। शमी ने 9 मैचों में 11 विकेट लिए। माना जा रहा है कि एनसीए उन्हें मार्च 2025 में होने वाली चैंपियंस ट्रॉफी में संभावित वापसी के लिए तैयार करना चाहती है। वह आईसीसी के प्रमुख 50 ओवर के टूर्नामेंट के लिए अहम होंगे।

भारत शमी की सेवाओं के बिना अपना ऑस्ट्रेलिया दौरा जारी रखेगा। रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम का लक्ष्य शनिवार से ब्रिस्बेन के गाबा में शुरू होने वाले तीसरे टेस्ट में वापसी करना है। गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की फिटनेस को लेकर चिंताएं हैं, जो श्रृंखला में अग्रणी विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। एडिलेड में रोहित ने खुलासा किया था कि अगर शमी पूरी तरह से फिट नहीं हैं तो टीम उन्हें खेलने के लिए प्रेरित करने का जोखिम नहीं उठाने देगी, क्योंकि इससे और समस्याएं पैदा हो जाएंगी। उन्होंने कहा कि पेशेवर लोग शमी की स्थिति पर नजर रख रहे हैं और वे उन पर अनावश्यक दबाव नहीं डालना चाहते। रोहित ने कहा था कि हम उसे ऐसी स्थिति में नहीं लाना चाहते हैं और वह खेलता है और फिर उसे दर्द होता है या कुछ और हो जाता है। हम उन पर यहां आकर टीम के लिए काम करने का दबाव नहीं डालना चाहते।

ऋषभ पंत बने टेकजॉकी के बांड एम्बैसडर

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेटर ऋषभ पंत को लेकर चौंकाने वाली खबर आई है। एक क्रिकेटर का सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री से क्या नाता हो सकता है? ये क्या मामला है कि पंथ का नाम सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री से जुड़ रहा हैं। दरअसल ऑनलाइन सॉफ्टवेयर मार्केटप्लेस टेकजॉकी ने क्रिकेटर ऋषभ पंत को अपना ब्रांड एम्बैसडर बनाया है। टेकजॉकी के सह-संस्थापक आकाश नांगिया ने पंत के जुनून, प्रेरणा और दूरगामी सोच को ब्रांड के लिए आदर्श बताया।

ऋषभ पंत को ब्रॉन्ड एम्बेसडर बनाए जाने पर कंपनी ने कहा कि पंत को लगता है कि पेशेवर खेलों में प्रौद्योगिकी के प्रगतिशील उपयोग ने प्रशंसकों के देखने के अनुभव को बेहतर बनाया है। पंत का मानना है कि टेक्नोलॉजी के उपयोग से पूरे सपोर्ट इकोसिस्टम में भागीदारी और प्रशंसकों की संख्या को बढ़ाया जा सकता है। पंत ने टेकजॉकी का ब्रांड एम्बैसडर बनाए जाने के बाद कहा कि पेशेवर खेलों में प्रौद्योगिकी के प्रगतिशील उपयोग को देखना बेहद उत्साहजनक है। इसने प्रशंसकों के लिए देखने के अनुभव और जुड़ाव को काफी हद तक बढ़ाया है।

बता दें कि क्रिकेटर ऋषभ पंत ने सितंबर, 2024 में ऑनलाइन सॉफ्टवेयर मार्केटप्लेस टेकजॉकी निवेश किया है। शॉर्क टैंक के इन्वेटर्स की तरह पंत ने भी इस स्टार्टअप में 7.40 करोड़ रुपए का इन्वेटमेंट करके 2 फीसदी की हिस्सेदारी खरीदी है। पंत के कंपनी में 7.40 करोड़ रुपए में 2 फीसदी हिस्सेदारी हासिल करते ही फर्म का मूल्यांकन 370 करोड़ रुपए हो गया। 2017 में स्थापित यह कंपनी सॉफ्टवेयर विक्रेताओं को छोटे व्यवसायों से जोड़ती है और हाल ही में कंपनी ने अमेरिकी बाजार में विस्तार किया है। नई फंडिंग से कंपनी को मार्केटिंग और वैश्विक विस्तार में मदद मिलेगी।

टेकजॉकी के सह-संस्थापक आकाश नांगिया ने कहा कि पूंजी 370 करोड़ रुपए के पोस्ट-मनी मूल्यांकन पर जुटाई गई है। स्टार्टअप इस फंड का उपयोग मार्केटिंग प्रयासों को बढ़ाने और वैश्विक स्तर पर अपने प्लेटफॉर्म पर ज्यादा विक्रेताओं को जोड़ने के लिए करेगा। वित्त वर्ष 2024 में, टेकजॉकी ने 125 करोड़ रुपए का राजस्व अर्जित किया, जिसमें से 7-10 करोड़ रुपए एड सेल्स से कमाए हैं। बाकी रेवेन्यू विक्रेताओं के जरिए आया। कंपनी प्रबंधन के मुताबिक कंपनी का लक्ष्य वित्त वर्ष 2025 में 170-180 करोड़ रुपए का रेवेन्यू हासिल करना है।

मिताली राज ने छोड़ी गुजरात जायंट्स, आंध्रा क्रिकेट एसोसिएशन से जुड़ी

एजेंसी

अहमदाबाद। फरवरी 2025 में शुरू होने वाली विमेंस प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के तीसरे सत्र से पहले मिताली राज ने गुजरात जायंट्स छोड़ दी है। वहीं डेनियल मार्श को बल्लेबाजी और प्रवीण तांबे गेंदबाजी कोच के रूप में गुजरात टीम के कोचिंग दल में शामिल हो गए हैं। गुजरात जायंट्स की मेंटॉर रही मिताली अब आंध्रा क्रिकेट एसोसिएशन से जुड़ गई हैं, जहां वह सीनियर टीम के साथ काम करने के अलावा राज्य की टीम को तैयार करने पर भी काम करेंगी। पहले दो सत्र तक फैंचाइजी में सहायक कोच की भूमिका निभाने वाली पूर्व भारतीय स्पिनर नूशीन अल खदीर भी अब कोचिंग दल का हिस्सा नहीं होंगी। अल-खदीर के पास इस समय अंडर 19 महिला टीम की जिम्मेदारी है जो कि अगले साल मलेशिया में होने वाले विश्वकप के दूसरे संस्करण के लिए तैयारी कर रही हैं। यह घोषणा 15 दिसंबर को बेंगलुरु में आयोजित होने वाली डब्ल्यूपीएल की नीलामी से कुछ ही दिन पहले ही की गई है। इस पर फैसला 2024-25 के घरेलू सत्र के शुरू होने से पहले ही ले लिया गया। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज माइकल क्लिंगर टीम के मुख्य कोच बने रहेंगे जबकि डेनियल मार्श बल्लेबाजी और प्रवीण तांबे गेंदबाजी कोच के रूप में टीम के कोचिंग दल ही रहेंगे। अपने करियर में 150 प्रथम श्रेणी मैच खेल चुके मार्श 2013 से 2017 के बीच तसमानिया के मुख्य कोच रहे हैं और 2022 में उन्हें ऑस्ट्रेलिया महिला टीम का सहायक कोच बनाया गया था। वहीं तांबे इस समय आईपीएल में लखनऊ सुपर जायंट्स के स्पिन गेंदबाजी कोच हैं। क्लिंगर ने कहा कि पिछले साल हमने साथ मिलकर बहुत अच्छा काम किया और अगले सत्र के लिए जिन खिलाड़ियों को रिटेन किया मैं उनके इंद गिर्द एक मजबूत टीम बनाने की ओर देख रहा हूं।

संक्षिप्त समाचार

काबुल में बम विस्फोट, शरणार्थी मामलों के मंत्री हक्कानी की मौत

इस्लामाबाद , एजेंसी। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में बुधवार को एक आत्मघाती बम विस्फोट में तालिबान सरकार के शरणार्थी मामलों के मंत्री की मौत हो गई. यह जानकारी गृह मंत्रालय के अधिकारियों ने दी. अधिकारियों के मुताबिक विस्फोट मंत्रालय के भीतर हुआ. इस वजह से शरणार्थी मामलों के मंत्री खलील हक्कानी की मौत हो गई. बता दें कि खलील हक्कानी ऐसे वरिष्ठ पदाधिकारी थे जिनकी अफगानिस्तान में तालिबान के द्वारा सत्ता प्राप्त किए जाने के तीन साल के अंदर बम विस्फोट में मौत हुई है. हालांकि तत्काल बम विस्फोट की किसी ने जिम्मेदारी नहीं ली है. अमेरिकी विदेश विभाग के अनुसार, हक्कानी हक्कानी नेटवर्क का एक वरिष्ठ नेता था, जो तालिबान के भीतर एक शक्तिशाली आतंकवादी गुट है. हक्कानी समूह पर 20 साल के विद्रोह के दौरान पूरे अफगानिस्तान में बड़े हमले करने का आरोप है. बता दें उसका भतीजा, सिराजुद्दीन हक्कानी, अब नेटवर्क का नेतृत्व करता है और तालिबान के कार्यवाहक आंतरिक मंत्री के रूप में कार्य करता है. 2021 में तालिबान द्वारा देश पर कब्जा करने के बाद से अफगानिस्तान में हिंसा कम हो गई है, जिससे संयुक्त राज्य अमेरिका और नाटो के नेतृत्व वाली विदेशी सेनाओं के खिलाफ उनका युद्ध समाप्त हो गया है. हालांकि, इस्लामिक स्टेट की क्षेत्रीय शाखा, जिसे इस्लामिक स्टेट खुरासान के नाम से जाना जाता है, देश में सक्रिय है. आईएसआईएस खुरासन नियमित रूप से नागरिकों, विदेशियों और तालिबान अधिकारियों को बंदूक और बम हमलों के जरिए निशाना बनाती रही है।

सूडान के उत्तरी दारफुर में अर्धसैनिक बलों के हमले में 15 लोगों की मौत

खार्तूम , एजेंसी। सूडान के उत्तरी दारफुर राज्य की राजधानी एल फशर के दक्षिण में एक विस्थापन शिविर और एक बाजार पर अर्धसैनिक बल रैपिड सपोर्ट फोर्स (आरएसएफ) ने तोपखाने से गोले दागे, जिसमें कम से कम 15 लोगों की मौत हो गई और 64 अन्य घायल हो गए। उत्तरी दारफुर राज्य के स्वास्थ्य मंत्रालय के महानिदेशक इब्राहिम ख़ातिर ने समाचार एजेंसी सिन्हुआ को बताया, अब तक 15 लोग मारे गए हैं और 64 अन्य घायल हुए हैं। वहीं जमजम शिविर और पशुधन बाजार पर आरएसएफ मिलिशिया का हमला अभी भी जारी है। हताहतों में ज्यादातर बच्चे और महिलाएं हैं। एक प्रत्यक्षदर्शी ने स्थानीय समयानुसार बुधवार सुबह 6~00 बजे हुए हमले को सबसे हिंसक बताया। आरएसएफ ने 10 मई को एल फशर की घेराबंदी शुरू की थी।

ब्रिटेन में सड़क दुर्घटना में भारतीय छात्र की मौत, चार लोग घायल

लीसेस्टरशायर, एजेंसी। बयान में कहा गया है, ''पंगुलुरी की मौके पर ही मौत हो गई तथा वाहन में सवार तीन अन्य यात्री और चालक को अस्पताल ले जाया गया। दो पुरुष यात्री गंभीर रूप से घायल हैं।'' बताया जा रहा है कि ये सभी लोग आंध्र प्रदेश से हैं। पूर्वी इंग्लैंड के लीसेस्टरशायर में सड़क दुर्घटना में एक भारतीय छात्र की मौत हो गई और चार अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी है। लीसेस्टरशायर की पुलिस ने बताया कि हादसा मंगलवार सुबह हुआ जिसमें एक कार के खाई में गिर जाने से उसमें सवार चिरंजीवी पंगुलुरी की मौके पर ही मौत हो गई जबकि एक महिला, दो पुरुष और चालक घायल हो गए और उन्हें अस्पताल ले जाया गया। पुलिस ने बताया कि वाहन चालक (27) को खतरनाक तरीके से वाहन चलाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था लेकिन उसे जमानत पर रिहा कर दिया गया है।

एमआईटी में भारतीय मूल के पीएचडी छात्र को निलंबित किया गया

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका स्थित 'मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी' (एमआईटी) में पीएचडी कर रहे भारतीय मूल के एक छात्र को फलस्तीन समर्थक सक्रियता के कारण जनवरी 2026 तक निलंबित कर दिया गया है और उसने विश्वविद्यालय के फैसले के खिलाफ अपील की है। ' एमआईटी कोलिशन अगेंस्ट अपार्थेड' नामक एक संगठन ने 'एक्स' पर एक 'पोस्ट' साझा करके बताया कि नेशनल साइंस फाउंडेशन के फेलो प्रह्लाद अयंगर को ''जनवरी 2026 तक निलंबित'' कर दिया गया है। संगठन ने कहा कि इस निलंबन से अयंगर की पांच वर्षीय एनएसएफ फेलोशिप समाप्त हो जाएगी तथा उनका शैक्षणिक कैरियर बुरी तरह प्रभावित होगा। उसने कहा कि 'इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग और कंप्यूटर साइंस' विभाग में पीएचडी के छात्र अयंगर बुधवार को एमआईटी में कुलपति के समक्ष ''इस निर्णय के खिलाफ अपील कर रहे हैं'' जो ''इस उत्पीड़न को रोकने और उनकी अकादमिक गरिमा को बहाल करने का अंतिम अवसर है।'' संगठन ने कहा, ''यह निर्णय भाषण-संबंधी गतिविधियों के परिणामस्वरूप लगाए गए कई प्रतिबंधों में सबसे कठोर है।

अदालत ने खारिज की हिंदू संत चिन्मय दास की अपील कहा- तय तारीख पर ही होगी जमानत याचिका पर सुनवाई

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश की एक अदालत ने बुधवार को राजद्रोह के मामले में हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास की जमानत याचिका पर जल्द सुनवाई की मांग को खारिज कर दिया। अदालत ने कहा कि उनकी याचिका पर सुनवाई पहले तय की गई तारीख 2 जनवरी 2025 को होगी।

अदालत के अधिकारियों के मुताबिक, चटगांव मेट्रोपोलिटन सेशन जज सैफुल इस्लाम ने याचिका खारिज की, क्योंकि वकील के पास चिन्मय दास की ओर से याचिका दायर करने का अधिकार पत्र (पावर ऑफ अटॉर्नी) नहीं था। वकील रवींद्र घोष ने अदालत से याचिका पर जल्द सुनवाई की मांग की थी। हालांकि, जब दूसरे वकील ने अदालत को बताया कि रवींद्र घोष के पास चिन्मय दास की ओर से उनका प्रतिनिधित्व करने का अधिकार पत्र नहीं है, तो जज ने उनकी जल्द सुनवाई की मांग करने वाली याचिका खारिज कर दी। अदालत के एक अधिकारी ने बताया कि घोष ने कहा कि दास को झूठे और मनगढ़ंत मामले में फंसाया गया है, जबकि वे डायबिटीज, अस्थमा और अन्य बीमारियों से जूझ रहे हैं। हालांकि, वकील ने यह माना कि उन्होंने चिन्मय दास से अधिकार पत्र हासिल करने के लिए जेल में उनसे मुलाकात नहीं की थी। उन्होंने कहा, अब मैं चिन्मय दास से मिलने जेल जाऊंगा और उनसे अधिकार पत्र हासिल करूंगा। इससे पहले, तीन दिसंबर को होने वाली सुनवाई को अदालत ने 2 जनवरी 2025 तक के लिए स्थगित कर दिया था, क्योंकि उस दिन

आरोपी की ओर से कोई वकील पेश नहीं हुआ था। अभियोजन पक्ष के सुझाव पर यह तारीख बदली गई थी।

दास के एक सहयोगी और उनके सम्मिलित सनातनी जागरण जोत संगठन के सदस्य स्वतंत्र गौरंग दास ने पहले कहा था कि किसी भी वकील ने दास के लिए प्रतिनिधित्व नहीं किया, क्योंकि उन पर राजनीतिक रूप से प्रेरित वकीलों के समूह से दबाव था और धमकियां मिली थीं।

हवाई अड्डे से गिरफ्तार किए गए थे चिन्मय कृष्ण दास

चिन्मय कृष्ण दास पहले इस्कॉन से जुड़े रहे हैं। उन्हें 25 नवंबर को ढाका के हजरत शाहजलाल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से गिरफ्तार किया गया था। अगले दिन चटगांव की अदालत ने उन्हें जेल भेज दिया था और उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी थी, क्योंकि उन पर बांग्लादेश के राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करने का आरोप था। दास की गिरफ्तारी के बाद उनके अनुयायियों ने ढाका और अन्य स्थानों पर विरोध प्रदर्शन किए, जिसमें चटगांव में प्रदर्शन हिंस गया, जहां एक वकील की मौत हुई। इस वकील की मौत के बाद इस्कॉन पर बांग्लादेश में प्रतिबंध लगाने की मांग की गई। इस्कॉन ने भी यह कहते हुए दास से दूरी बना ली कि उन्हें छह महीने पहले संगठन से निकाल दिया गया था।

31 अक्तूबर को चटगांव के कोटवाली थाने में दास और उनके 18 अन्य सहयोगियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया। आरोप था कि उन्होंने बांग्लादेश के राष्ट्रीय ध्वज का अपमान किया। जिसमें एक स्थानीय नेता भी शामिल था, जो पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया की पार्टी बीएनपी का सदस्य था। लेकिन उसे पार्टी से निकाल दिया गया था।

एफबीआई निदेशक क्रिस्टोफर रे का पद छोड़ने का एलान

वॉशिंगटन, एजेंसी। एफबीआई निदेशक क्रिस्टोफर रे ने पद छोड़ने का एलान कर दिया है। रे ने कहा है कि वे जो बाइडन का कार्यकाल खत्म होने के बाद ही जनवरी में एफबीआई निदेशक का पद छोड़ देंगे। क्रिस्टोफर रे का यह एलान डोनाल्ड ट्रंप के उस एलान के एक हफ्ते बाद ही आया है, जिसमें ट्रंप ने कश पटेल को एफबीआई का नया निदेशक बनाने का एलान किया था। बुधवार को एफबीआई मुख्यालय में आयोजित हुई एक बैठक में क्रिस्टोफर ने पद छोड़ने का एलान किया। अभी रे के 10 साल के कार्यकाल में तीन साल का समय और बचा है। हालांकि जब ट्रंप ने कश पटेल को एफबीआई का नया निदेशक बनाने का एलान किया था तो तभी से इस बात की चर्चा थी कि क्रिस्टोफर रे समय से पहले इस्तीफा दे सकते हैं, लेकिन ट्रंप के शपथ लेने से पहले ही इस्तीफे का एलान कर क्रिस्टोफर रे ने चौंकाया है। माना जा रहा है कि नई सरकार के साथ किसी तरह के टकराव से बचने के लिए क्रिस्टोफर रे ने पद छोड़ना ही बेहतर समझा है। अपने कार्यकाल के दौरान रे ने एफबीआई को राजनीति से दूर रखने की कोशिश की। पद छोड़ने का एलान करते हुए क्रिस्टोफर रे ने कहा कि पद छोड़ने का एलान उनके लिए आसान नहीं है। मुझे इस जगह से प्यार है और मुझे अपने काम से भी प्यार है, लेकिन मेरा फोकस हमेशा इस बात पर रहा है कि एफबीआई के लिए क्या सही है। जब रे ने यह एलान किया तो उस दौरान बैठक में मौजूद कई लोगों की आंखों में आंसू भी देखे गए। वहीं रे के इस्तीफे के एलान पर ड्रोनाल्ड ट्रंप ने भी प्रतिक्रिया दी है। सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में ट्रंप ने इसे अमेरिका के लिए एक अच्छा दिन बताया और इससे अमेरिका के अन्याय विभाग का शस्त्रीकरण बंद होगा।

सिंगापुर में भारतीय नागरिक को जेल, अवैध रूप से 58 कछुए ले जाने का आरोप

सिंगापुर, एजेंसी। सिंगापुर में अवैध रूप से कछुए ले जाने के लिए भारतीय नागरिक को एक साल और चार महीने की जेल की सजा सुनाई गई है. मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, आरोपी को अगस्त में 58 इंडियन स्टार कछुओं के साथ पकड़ा गया था. द स्ट्रेट्स टाइम्स की रिपोर्ट में कहा गया कि आरोपी अब्दुल जाफर हाजी अली के निजी सामान में कछुए छिपाए गए थे, जब वह 29 अगस्त को भारत से सिंगारपुर के चांगी एयरपोर्ट पर पहुंचा था, जहां से उसे जकार्ता के लिए दूसरी उड़ान लेनी थी. 40 वर्षीय अली ने सीलबंद बैग में कछुए छिपाए थे, जो हवादार नहीं था. सिंगापुर की अदालत ने देश में अवैध रूप से इंडियन स्टार कछुए लाने के लिए अली को दोषी ठहराया, क्योंकि इन कछुओं को अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (ढ्ढष्टह्र) द्वारा लुप्तप्राय प्रजाति घोषित किया गया है. इससे पहले, अली पर लुप्तप्राय प्रजाति (आयात और निर्यात) अधिनियम और पशु एवं पक्षी अधिनियम के तहत आरोप लगाए गए थे कि कछुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, यह सुनिश्चित करने के लिए उचित कदम नहीं उठाया गया था. रिपोर्ट के अनुसार, कछुओं में से एक की मौत हो गई थी, जबकि 22 अन्य को बाद में कमजोर पाया गया. अली को ये कछुए अपने दोस्त से मिले थे, जिसकी पहचान अदालती दस्तावेजों में भाई के रूप में की गई है. भाई ने विदेश यात्रा की व्यवस्था करने में अली की मदद की थी, जिसमें फ्लाइट का टिकट और रहने की व्यवस्था करना शामिल था. इसके बदले में, भाई ने पैक किए गए सामान को जकार्ता तक ले जाने के लिए अली से मदद मांगी. सिंगापुर के नेशनल पार्क्स बोर्ड (एनपार्क) के वकील लिम चोंग हुई ने कहा कि अली ने पैकेज की सामग्री के बारे में नहीं पूछा और न ही भाई द्वारा 28 अगस्त को चेन्नई में इसे सौंपने के बाद कभी भी इसकी जांच की. लिम ने कहा कि आरोपी को भाई की उपस्थिति में सामान की सामग्री की जांच करने और उसे सत्यापित करने का पर्याप्त अवसर मिला था.

सीरिया की क्षेत्रीय अंखडता के किसी भी उल्लंघन के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र, इजरायल को सुनाई खरी-खरी

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र सीरिया की क्षेत्रीय अखंडता के किसी भी उल्लंघन के खिलाफ है। एक यूएन प्रवक्ता ने यह बयान दिया है। यह टिप्पणी इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि बशर अल-असद सरकार के पतन के बाद इजरायल ने गोलान हाइट्स में एक बफर जोन पर कब्जा कर लिया है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव के प्रवक्ता स्टीफन दुजारिक ने दैनिक प्रेस ब्रीफिंग में कहा, यह बहुत स्पष्ट है कि हम सीरिया की क्षेत्रीय अखंडता के किसी भी उल्लंघन के खिलाफ हैं। हम इस तरह के हमलों के भी विरोध में हैं। दुजारिक से उन मीडिया रिपोर्ट्स के बारे में पूछा गया था जो इजरायली रक्षा बलों (आईडीएफ) के 320 सीरियाई सैन्य ठिकानों पर हमले को लेकर थी। सिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक, अल-असद की सरकार के पतन के बाद, इजरायल ने सीरिया में अपने सैन्य अभियान को तेज कर दिया और गोलान हाइट्स में एक गैर-सैनिक बफर जोन पर कब्जा कर लिया। दुजारिक ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र गोलान हाइट्स को सीरिया का कब्ज़ा वाला क्षेत्र मानता है। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि हम बफर ज़ोन पर आईडीएफ के कब्ज़े के बाद हुए 1974 के सीरिया-इजरायल समझौते के उल्लंघन के बारे में बहुत स्पष्ट थे। प्रवक्ता ने कहा, मुझे लगता है कि यह सीरिया के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ है।

ब्रिटेन में चचेरे भाई-बहन की शादी बैन करने की मांग

सांसद ने कहा कि इससे आनुवांशिक बीमारियां बढ़ रहीं, भारतवंशी सांसद ने विरोध किया

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन में एक कंजर्वेटिव नेता ने संसद में चचेरे भाई-बहनों के बीच शादी पर रोक लगाने की मांग की है। बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक रिचर्ड होल्डन ने बुधवार को प्रस्ताव पेश करते हुए कहा कि चचेरे भाई-बहनों के बीच शादियों से हुए बच्चों में बीमारियां और विकलांगता का खतरा बहुत बढ़ गया है। यह पब्लिक हेल्थ सिस्टम को प्रभावित कर रहा है। सांसद ने ऑक्सफोर्ड जर्नल ऑफ लॉ एंड रिलीजन शोध का हवाला देते हुए कहा कि इन शादियों से होने वाले बच्चों में सामान्य बच्चों की तुलना में आनुवांशिक बीमारियां होने का खतरा दोगुना ज्यादा होता है। यह प्रथा महिलाओं की सुरक्षा के लिए भी खतरा है।

होल्डन ने कहा कि आधुनिक ब्रिटिश समाज के लिए यह प्रथा बिल्कुल भी सही नहीं है। देश के लिए चिंताजनक स्थिति पैदा हो गई है, क्योंकि उनके दादा-दादी के वक्त की तुलना में अब हालात ज्यादा खराब हो चुके हैं। हालांकि, पिछले कुछ साल से इसमें गिरावट आ रही है, क्योंकि कुछ युवा इस सिस्टम को नहीं मान रहे हैं, लेकिन फिर भी इस पर रोक लगाना जरूरी है। होल्डन ने कहा कि ब्रिटेन में कुछ प्रवासी समुदाय, जैसे कि ब्रिटिश-पाकिस्तानी और आयरिश ट्रैवलर्स में चचेरे भाई-बहनों के बीच विवाह दर ज्यादा है। इनमें करीब 40त्न शादियां फर्स्ट कजन (चचेरे भाई-बहनों) के बीच होती हैं।

ब्रिटेन में फर्स्ट कजन मैरिज पर कानून नहीं सांसद ने कहा कि दुनियाभर में करीब 10प्रतिशत शादियां चचेरे भाई-बहनों में होती है। अफ्रीका के सहारा रीजन में 35 से 40 फीसदी लोग चेचेरे भाई-बहनों में शादी करते हैं। मिडिल ईस्ट और साउथ एशिया में भी यह कल्चर बेहद आम है। पाकिस्तान के कुछ हिस्से में तो यह 80प्रतिशत पहुंच चुकी है।

ब्रिटेन में भाई-बहन, माता-पिता या फिर अपने ही बच्चे से विवाह पर बैन है, लेकिन चचेरे भाई-बहनों के बीच शादियों को लेकर वहां कोई कानून नहीं है। होल्डन के प्रस्ताव पर कई कंजर्वेटिव साथियों का साथ मिला। हालांकि, सरकार के समर्थन के बिना यह कानून बनना संभव नहीं है। भारतीय मूल के सांसद बोले- बैन समाधान नहीं, जागरूकता बढ़ाएं निर्दलीय ब्रिटिश सांसद इकबाल मोहम्मद ने इस प्रस्ताव का विरोध किया है। उन्होंने संसद में कहा कि चचेरे भाई-बहनों की शादियों पर प्रतिबंध लगाना सही नहीं है। गुजराती मूल के सांसद ने कहा कि इस परेशानी को जागरूकता से ही दूर किया जा सकता है। इकबाल मोहम्मद मूल रूप से गुजरात के रहने वाले हैं। उन्होंने कहा कि उप-सहारा अफ्रीकी आबादी का 35 प्रतिशत से 50 प्रतिशत हिस्सा तो चचेरे भाई-बहन की शादी को पसंद करते हैं। यह मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया में बेहद आम है। मोहम्मद ने कहा कि चचेरे भाई-बहनों में शादियां बहुत आम है, क्योंकि इससे पारिवारिक बंधन बनाने में, पारिवारिक संपत्ति सुरक्षित रखने में मदद मिलती है।

हिजाब नहीं पहना तो मौत की सजा; ईरान का नया कानून और खतरनाक, 2 साल पहले खिलाफत में उठी थी आवाजें

तेहरान, एजेंसी। अपने सख्त कानूनों को लेकर चर्चा में रहने वाले ईरान ने हिजाब को लेकर नए कानून बनाए हैं जिस पर विवाद खड़ा हो गया है। इन कानूनों के तहत हिजाब नियमों का उल्लंघन करने पर महिलाओं को मौत की सजा तक दी जा सकती है। ईरान के नए कानून के अनुच्छेद 60 के तहत उल्लंघन करने पर महिलाओं को जुर्माना भरने, कोड़े खाने या कठोर जेल की सजा हो सकती है। वहीं एक से ज्यादा बार अपराध करने वालों को 15 साल तक की जेल या फांसी की सजा भी हो सकती है। ईरानी अधिकारियों ने देश में ड्रेस कोड का उल्लंघन करने वाली महिलाओं के लिए विवादास्पद हिजाब क्लीनिक खोलने का भी ऐलान किया है।

एक रिपोर्ट के मुताबिक विदेशी मीडिया या संगठनों में हिजाब विरोधी विचारों को बढ़ावा देने के आरोपी लोगों को 10 साल तक की जेल की सजा मिलेगी। साथ ही 12,500 पाउंड तक का जुर्माना भी भरना पड़ सकता है। इसके अलावा कानून का उल्लंघन करने वाली महिलाओं की गिरफ्तारी को रोकने या हस्तक्षेप करने की

कोशिश करने वाले लोगों को भी नहीं बख्शा जाएगा। ईरान की सरकार ऐसे लोगों को सीधे जेल में डाल सकती है। ईरान के मुताबिक नए कानूनों का उद्देश्य हिजाब की संस्कृति की पवित्रता को बनाए रखना है। ईरान ने कहा है कि ढंग से कपड़े ना पहनने, नग्नता को बढ़ावा देने या चेहरे को ढकने का विरोध करने पर कठोर से कठोर सजा दी जाएगी। गौरतलब है कि 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद से ईरान ने महिलाओं को सार्वजनिक जगहों पर बाल ढकने का कानून लागू किया है। 2022 में इन कानूनों के विरोध में देश भर में प्रदर्शन हुए थे। ईरान में 16 सितंबर, 2022 को 22 वर्षीय कुर्द महिला महसा अमिनी की पुलिस हिरासत में मौत हो गई थी। महसा को तेहरान में तैनात मोरल पुलिस ने देश के ड्रेस कोड का उल्लंघन करने के आरोप में गिरफ्तार किया था। उसकी मौत के बाद पूरे देश में विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए थे। इन प्रदर्शनों में कई सुरक्षाकर्मियों सहित सैकड़ों लोगों की मौत हो गई थी। तब ईरानी सरकार ने इन प्रदर्शनों को रोकने के लिए हजारों प्रदर्शकारियों को गिरफ्तार किया था।

ट्रंप ने की दो और प्रमुख नियुक्तियां, ड्र्यू फर्गुसन को एफटीसी चीफ तो किंबर्ली को ग्रीस का राजदूत चुना

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दो और प्रमुख नियुक्तियां की है। ट्रंप ने एंड्र्यू फर्गुसन को फेडरल ट्रेड कमिशन (एफटीसी) के अगले प्रमुख के तौर पर नामित किया है। वहीं ग्रीस में अमेरिकी राजदूत के तौर पर किंबर्ली गिलफॉयल को नियुक्त किया है। फर्गुसन लीना खान की जगह लेंगे, जो अरबों डॉलर के कॉरपोरेट अधिग्रहणों को अवरुद्ध करके तथा प्रतिस्पर्धा-विरोधी व्यवहार का आरोप लगाते हुए अमेजन और मेटा पर मुकदमा दायर करके चर्चा का केंद्र बनीं। ग्रीस में अमेरिका के राजदूत की नियुक्ति ट्रंप ने सोशल मीडिया मंच के जरिये किंबर्ली गिलफॉयल को ग्रीस के लिए अमेरिका का राजदूत नामित किया। गिलफॉयल लंबे समय से ट्रंप की समर्थक रही हैं और उनके बेटे डोनाल्ड ट्रंप जूनियर से उनकी सगाई हुई थी। ट्रंप ने टॉम बराक को तुर्किये में राजदूत नियुक्त करने की घोषणा की और उन्हें एक सम्मानित और अनुभवी आवाज कहा। फर्ग्यूसन पहले से ही एफटीसी के पांच आयुक्तों में से एक हैं। डेविड ओ सैक्स बने थे एआई और क्रिप्टो जार बीते दिनों डोनाल्ड ट्रंप ने अपने प्रशासन में अहम नियुक्ति की। ट्रंप ने अपने करीबी और अरबपति उद्योगपति डेविड सैक्स को व्हाइट हाउस का एआई और क्रिप्टो जार नियुक्त किया है। डेविड सैक्स कृत्रिम बुद्धिमत्ता और क्रिप्टो करेंसी पर ट्रंप सरकार को सलाह देंगे। डेविड के नाम का एलान करते हुए डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा कि डेविड सरकार की एआई और क्रिप्टोकरेंसी पर नीतियों का नेतृत्व करेंगे। ये दोनों क्षेत्र भविष्य में अमेरिकी प्रतिस्पर्धा के लिहाज से बेहद अहम हैं। डेविड ऑनलाइन फ्री स्पीच की रक्षा करेंगे और हमें बड़ी तकनीकी कंपनियों और उनकी सेंसरशिप से दूर रखेंगे।

मस्क के करीबी जेरेड को मिली थी जिम्मेदारी : अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने स्पेसएक्स के मालिक व अरबपति कारोबारी एलन मस्क के करीबी जेरेड इसाकमैन को नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) प्रमुख चुना था। इसाकमैन पेमेंट कंपनी शिफ्ट4 पेमेंट्स के सीईओ हैं। वह निजी अंतरिक्ष यात्री मिशनों का संचालन करने के लिए स्पेसएक्स वाहनों का उपयोग करने वाले कार्यक्रम का हिस्सा भी हैं।

साउथ कोरियाई प्रेसिडेंट बोले- मार्शल लॉ कानूनी फैसला था

सियोल, एजेंसी। साउथ कोरिया में मार्शल लॉ लगाने वाले राष्ट्रपति यून सुक योल ने गुरुवार को टीवी पर संबोधन दिया। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक उन्होंने अपने फैसले का बचाव करते हुए कहा कि वे पद से नहीं हटेंगे और महाभियोग लगाए जाने के खिलाफ अंत तक लड़ते रहेंगे। यून ने कहा कि संसद में सैनिकों को भेजना विद्रोह नहीं है। लोकतंत्र को खत्म होने से रोकने और संसद में विपक्ष की तानाशाही का मुकाबला करने के लिए उन्होंने मार्शल लॉ लगाने का फैसला लिया। यह पूरी तरह से कानूनी था।

यून ने कहा- चाहे मेरे खिलाफ जांच की जाए या महाभियोग लाया जाए, मैं निष्पक्ष रूप से इसका सामना करूंगा रहूंगा। मैं आखिर तक लड़ता रहूंगा। इससे पहले 7 दिसंबर को राष्ट्रपति यून ने मार्शल लॉ लगाने के लिए देश से माफी मांगी थी। उन्होंने लाइव टीवी पर सिर झुकाकर जनता के सामने मार्शल लॉ लगाए जाने को गलत कहा था। तब उन्होंने कहा था कि ये फैसला कानूनी या राजनीतिक वजहों से नहीं बल्कि हताशा में लिया गया था।

राष्ट्रपति बोले- लोकतंत्र को नुकसान पहुंचा रहा विपक्ष यूं ने विपक्ष पर सरकार के कामकाज को रोकने का आरोप लगाया। दरअसल मार्शल लॉ मामले के बाद साउथ कोरिया में राष्ट्रपति ने 673.3 ट्रिलियन वॉन (करीब 40 लाख करोड़ रुपए) का बजट पारित करने की कोशिश की, लेकिन मुख्य विपक्षी दल ने इसमें कटौती कर दी।

विपक्ष के इस कदम से नाराज राष्ट्रपति ने कहा कि देश की विपक्षी पार्टी लोकतंत्र को नुकसान पहुंचा रही है। साउथ कोरिया में विपक्षी पार्टी ही बहुमत में है। संसद में 300 सीटों में से मुख्य विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ कोरिया को 171 सीटें मिली हुई हैं। साउथ कोरिया में 4 दशक बाद मार्शल लॉ साउथ कोरिया में राष्ट्रपति यून ने 3 दिसंबर की रात देश में मार्शल लॉ लागू कर दिया था। हालांकि, भारी विरोध के बाद उन्होंने 6 घंटों के भीतर ही अपना फैसला वापस ले लिया था। यून के इस कदम के बाद दक्षिण कोरिया में उनका काफी विरोध हो रहा है उन्हें पद से हटाए जाने की भी कोशिशें हो रही हैं। राष्ट्रपति की ही पार्टी के नेता अब उन्हें हटाने में जुट गए हैं। सत्ताधारी पीपुल्स पावर पार्टी के महासचिव हान डोंग-हुन ने गुरुवार को कहा कि लोकतंत्र सुरक्षित रहे इसके लिए राष्ट्रपति का हटना जरूरी है।

राष्ट्रपति को हटाने के लिए फिर से प्रस्ताव लाएगा विपक्ष पिछली बार शनिवार को राष्ट्रपति यून के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव लाया गया था। लेकिन जरूरी 200 सांसदों का इसे समर्थन नहीं मिल पाया था। इसे लेकर हान ने कहा कि पिछली बार कई सांसद राष्ट्रपति को हटाने और न हटाने को लेकर भ्रम में पड़ गए थे और उन्होंने वोटिंग नहीं की थी। अब ये भ्रम की स्थिति दूर होनी चाहिए। हान ने कहा कि इसे रोकने का एक ही तरीका ये है कि हर सांसद संसद भवन में आए और अपने विवेक के आधार पर वोट डाले। साउथ कोरिया में विपक्षी पार्टी छ्वक्क्च राष्ट्रपति को पद से हटाने के लिए दूसरी बार महाभियोग प्रस्ताव ला सकती है। यह प्रस्ताव शनिवार को लाया जा सकता है।

संक्षिप्त खबरें

जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन 18 को

पलामू(बिभा) : महानिदेशक एवं पुलिस महानिरीक्षक झारखंड, रांची के द्वारा निर्गत आदेश के आलोक में 18.12.24, दिन बुधवार को 'जन शिकायत समाधान कार्यक्रम का आयोजन एक साथ पुरे राज्य में किया जाना है। कार्यक्रम में आम नागरिकों की समस्या शिकायत का त्वरित निष्पादन किया जाना है। इस कार्यक्रम के दौरान आम नागरिकों से प्राप्त लिखित एवं मौखिक समस्यायों पर पलामू जिला के प्रखंड कार्यालय एवं थाना/ओपी शाखा के पदाधिकारी से संपर्क स्थापित कर आम नागरिक के शिकायत/ समस्या का त्वरित निष्पादन किया जायेगा। इस कार्यक्रम में प्रखंड के प्रशासनिक एवं पुलिस पदाधिकारी भाग लेकर आम नागरिकों के समस्यायों का निष्पादन करेंगे। आप सभी पलामू वासियों से आग्रह है कि आप अपने आस-पास, गाँव मुहल्ला एवं अन्य जगहों पर आम नागरिक जिनका कोई समस्या शिकायत है उन्हें दिनांक 18.12.24 को समय-11:00 बजे पूर्वा से इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु जागरूक करें ताकि उनकी समस्यायों का त्वरित समाधान किया जा सके।

साहित्यिक गतिविधियों, कला और सृजन को समर्पित, स्पंदन का दूसरा दिन

आत्मविश्वास की ताकत को अपने अंदर आत्मसात कर अपने सपनों को पूरा करें: डॉ तपन कुमार शांडिल्य

बिभा संवाददाता

रांची : डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची के सभागार में तीन दिवसीय युवा महोत्सव, स्पंदन के दूसरे दिन की शुरूआत शास्त्रीय नृत्य और लोक नृत्य के साथ हुई। इसके तहत 4 शास्त्रीय नृत्य कथक, कुचिपुड़ी और ओडिसी नृत्य प्रस्तुत किये गए। इसके अलावा झारखण्ड लोक नृत्यों को भी प्रस्तुत किया गया। मौके पर कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य, कुलसचिव डॉ नमिता सिंह मौजूद रहे। इस अवसर पर कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य ने सभागार में उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमेशा याद रखें कि आत्मविश्वास एक दिन में नहीं आता। इसके लिए हमें छोटी-छोटी सफलताओं पर ध्यान देना होगा और हर असफलता से सीखना होगा। जब भी किसी काम में असफल हों, तो खुद को निराश न करें, बल्कि अपनी गलतियों से सीखकर फिर से कोशिश करें। यह सारी बातें इस युवा महोत्सव के लिए कॉफी प्रासंगिक है क्योंकि यहां हार और जीत को आप जीवन के नजरिए से समझने की कोशिश करें और आत्मविश्वास की ताकत को अपने अंदर आत्मसात कर अपने सपनों को पूरा करें। इस अवसर पर पद्मश्री से सम्मानित मधु मंसुरी हंसमुख ने भी प्रतिभागियों को प्रेरित किया।

आज पूर्वाह्न आयोजित क्विज प्रतियोगिता का अंतिम चरण हुआ जिसमें 11 प्रतिभागी अंतिम तौर पर चयनित हुए। डिबेट प्रतियोगिता में 41 प्रतिभागियों ने वैश्वीकरण, विकासशील देशों लिए लाभकारी है या नहीं , विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। स्पॉट फोटोग्राफी के तहत थीम था, छाया और प्रतिबिंब। इस प्रतियोगिता में 8 प्रतिभागियों ने अपनी हिस्सेदारी दर्शाई । क्ले मॉडलिंग में 22 प्रतिभागियों ने और कोलाज के अंतर्गत बड्र्स एंड फ्लावर्स थीम के तहत 9 प्रतिभागियों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। कार्टूनिंग प्रतियोगिता के तहत आधुनिक जीवन पर आधारित थीम पर 12 प्रतिभागियों ने भाग लिया। आज संचालित प्रतियोगिताओं में क्विज, डिबेट, स्पॉट फोटोग्राफी, क्ले मॉडलिंग, कोलाज और कार्टूनिंग तथा नृत्य प्रतियोगिताओं का संचालन डॉ शुचि संतोष बरवार, डॉ अभय सागर मिंज, डॉ रजनी कुमारी, डॉ अभय कृष्ण सिंह, डॉ धनंजय द्विवेदी, डॉ रीना नंद, डॉ पीयूष बाला, डॉ शमा सोनाली, धर्मजय कुमार, श्वेता कुमारी, डॉ मनीषा , डॉ जीसी बास्की के द्वारा संचालित किए गए। यह जानकारी।पीआरओ प्रो राजेश कुमार सिंह ने दी।

टाटानगर - हटिया - टाटानगर एक्सप्रेस कल रद्द रहेगी

रांची (बिभा): चक्रधरपुर मंडल के अंतर्गत विकास कार्यों के लिए ब्लॉक लिया जाएगा अतः निम्नांकित ट्रेनें प्रभावित रहेंगी।

ट्रेनें रद्द रहेंगी :- 1. ट्रेन संख्या 18601/ 18602 टाटानगर - हटिया - टाटानगर एक्सप्रेस, यात्रा प्रारंभ दिनांक 15/12/2024 को रद्द रहेगी। 2. ट्रेन संख्या 08151/08152 टाटानगर - बरकाकाना - टाटानगर पैसेंजर, यात्रा प्रारंभ दिनांक 15/12/2024 को रद्द रहेगी।

ट्रेन के प्रस्थान समय में परिवर्तन :- 1. ट्रेन संख्या 18428 आनंद विहार टर्मिनल - पुरी एक्सप्रेस, यात्रा प्रारंभ दिनांक 15/12/2024 को अपने निर्धारित प्रस्थान समय के स्थान पर 3 घंटे 15 मिनट विलम्ब से आनंद विहार टर्मिनल से प्रस्थान करेगी

ट्रेन परिवर्तित मार्ग से चलेगी :- ट्रेन संख्या 22892 रांची - हावड़ा इंटरसिटी एक्सप्रेस, यात्रा प्रारंभ दिनांक 19/12/2024 को अपने निर्धारित मार्ग कोटशीला - पुरुलिया - टाटानगर - खड़गपुर के स्थान पर परिवर्तित मार्ग कोटशीला - राजाबेडा - जमुनियाटाँड़ - आद्रा - मेदिनीपुर - खड़गपुर होकर चलेगी ।

हटिया- झारसुगुड़ा- हटिया मेमू ट्रेन रद्द

रांची(बिभा) : रांची रेल मंडल के टाटी झ परबाटोनिया झ ओड़गा रेलखंड पर विकास कार्य हेतु ट्रैफिक तथा पावर ब्लॉक लिया जाएगा अतः निम्नांकित ट्रेनें रद्द रहेंगी । ट्रेन संख्या 18175/18176 हटिया- झारसुगुड़ा- हटिया मेमू एक्सप्रेस ट्रेन, यात्रा प्रारंभ दिनांक 15.12.2024, 16.12.2024, 18.12.2024 एवं 20.12.2024 को रद्द रहेगी।

बैंक सरकारी योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाएं : उपायुक्त

बिभा संवाददाता

सिमडेगा: उपायुक्त सिमडेगा अजय कुमार सिंह की अध्यक्षता में विशेष ज़िला परामर्शदात्री समिति (स्पेशल डीसीसी), जिला स्तरीय समीक्षा समिति (डीएलआरसी) की त्रैमासिक एवं ऋण जमा अनुपात निगरानी उप समिति की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया।

बैठक के दौरान वित्तीय वर्ष 2024-25 में बैंक के तिमाही कार्य प्रगति की समीक्षा किया गया। इस दौरान उपायुक्त महोदय सभी बैंकों की प्रगति का समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिये। उन्होंने जिला के सभी सरकारी और गैर सरकारी बैंकों के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे लोगों को अधिक से अधिक संख्या में बैंकों से जोड़ने और उन्हें उदारता के साथ ऋण उपलब्ध करने की दिशा में कार्य करें। इससे आम लोगों तक बैंकिंग योजनाओं का लाभ पहुंचेगा। बैठक में एलडीएम ने कहा कि पूर्व में दिए गए निर्देश के अनुसार बैंक ऑफ इंडिया द्वारा बानो प्रखंड में एटीएम मशीन का अधिष्ठापन करने हेतु स्वीकृत प्रदान किया गया है स्थल का चयन कर ससमय मशीन अधिष्ठापन किया जाएगा।

उपायुक्त ने जिले खाता धारकों का केवाईसी समय से करने की बात कहीं जिससे कि सरकार द्वारा मुहैया कराई जानी वाली योजना में किसी प्रकार की दिक्कत ना हो। जिले के बैंकों में कैश लिमिट को भी बढ़ाने का निर्देश दिया गया। सीडी रेशियों की समीक्षा के क्रम में उन्होंने सभी बैंक प्रबंधकों को हर हाल में जिले के बैंक सीडी रेशियों को बढ़ाने का निर्देश दिया। PMFME, PMEGP, MUDRA LOAN एवं पीएम स्वनिधि योजना के तहत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप लाभुकों का चयन कर लोन मुहैया कराने का निर्देश दिया। साथ ही लंबित मामलों का ससमय निष्पादन सुनिश्चित कराने की बात कहीं। इसके अलावा उन्होंने केसीसी योजना की समीक्षा कर जिले के ज्यादा से ज्यादा किसानों को केसीसी योजना से आच्छादित करने का निर्देश दिया। बैठक में आरबीआई के एसडीओ नीतीन गौरव, एलडीएम सन्नीस अभिजित मिंज, डीडीएम नाबार्ड सहित अन्य पदाधिकारी गण, सभी बैंक प्रबंधक सहित अन्य उपस्थित थे।

उपायुक्त ने नीति आयोग द्वारा संचालित योजनाओं की समीक्ष की

सिमडेगा: उपायुक्त सिमडेगा अजय कुमार सिंह की अध्यक्षता में आकांक्षी जिला कार्यक्रम/ आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम के तहत नीति आयोग द्वारा संचालित योजनाओं की समीक्षात्मक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में उपायुक्त ने जिले कई विद्यालयों में अभी भी शौचालय एवं पेयजल उपलब्ध नहीं कराई गई है जिसका समीक्षा कर संबंधित पदाधिकारी को ससमय विद्यालयों में पानी की उपलब्ध सुनिश्चित कराने का निर्देश दिया। इसके अलावा उन्होंने नीति आयोग द्वारा निर्धारित इंडिकेटर्स के तहत कार्य में प्रगति लाने का की बात कहीं। बैठक में जिला शिक्षा पदाधिकारी सहित एडीएफ उपस्थित थे।

जिले के 23 लैम्पसों में धान अधिप्राप्ति का शुभारंभ 15 दिसंबर से

सिमडेगा: उपायुक्त सिमडेगा अजय कुमार सिंह की अध्यक्षता में खरीफ विपणन मौसम 2024-25 धान अधिप्राप्ति योजना के तहत आवश्यक तैयारी से संबंधित बैठक आयोजित की गई। बैठक में मुख्य रूप से धान अधिप्राप्ति को लेकर लैम्प्स केंद्र में 15 दिसंबर 2024 से सक्रिय कर किसानों से धान अधिप्राप्ति करने का निर्देश दिया। उपायुक्त महोदय ने सभी पदाधिकारियों से कहा कि पिछले वर्ष में सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य के प्रति बहुत ही कम धान का क्रय किया गया था। साथ ही जिसका सभी किसानों के खाते में शत प्रतिशत राशि भुगतान समय पर कर दिया गया था। इस वर्ष भी किसानों को जागरूक करते हुए सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप धान अधिप्राप्ति करने का निर्देश पदाधिकारी को दिया। उन्होंने कहा कि इस वर्ष भी सभी किसानों को ससमय राशि का भुगतान कर दिया जाएगा। उन्होंने संबंधित पदाधिकारियों को कहा कि सूचना मिल रही है कि जिले में बिचौलियों द्वारा नगद पैसे देकर न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम राशि में किसानों से खरीद कर बाहर के राज्यों मेंअधिक दाम पर बेचा जा रहा, इसमें नजर रखे। किसानों को जागरूक करें कि बिचौलियों को 1700 से 1800 रुपये प्रति क्विंटल धान बेचने के बजाय सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य 2300 प्रति क्विंटल की दर से एवं बोनस रुपये 100 प्रति क्विंटल की दर से कुल 2400 रु प्रति क्विंटल धान अधिप्राप्ति केंद्र में सरकार को ही धान बिक्री करें। उपायुक्त ने जिले के किसानों को उसके उत्पादन का सही मूल्य प्राप्त हो इस हेतु बिचौलिया द्वारा धान बाहर राज्य में बिक्री हेतु न भेजी जाय, जिसे ध्यान में रखते हुए उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ बार्डर पर कड़ी निगरानी रखने निर्देश दिया। उपायुक्त ने जिला कृषि पदाधिकारी मुनेंद्र दास को कृषक मित्र द्वारा नए किसानों का रजिस्ट्रेशन कराने हेतु व्यापक जागरूकता अभियान चलानव नए किसानों का निबंधन करने का निर्देश दिया गया। साथ ही जिला जनसंपर्क पदाधिकारी पलटू महतो को किसानों की जागरूकता हेतु प्रखंड स्तर पर फ्लैक्स होर्डिंग के माध्यम से प्रचार-प्रसार सुनिश्चित कराने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने जिला सहकारिता पदाधिकारी आत्म अभय टोप्पो को निर्देश दिया कि सभी मिलरो का ससमय लैम्पसों से टैग कर समय से धान का उठाव करायें। उन्होंने कहा कि सभी किसानों को जागरूक करें कि धान सरकार के लैम्प्स में ही धान की बिक्री करें। अंत में उन्होंने कहा कि धान अधिप्राप्ति में किसी प्रकार की गड़बड़ी न हो इसे सुनिश्चित करें, किसी भी लैम्पस केंद्र के द्वारा धान अधिप्राप्ति में गड़बड़ी की जाती है तो एफआईआर दर्ज कराते हुए कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

सात ज्योतिर्लिंग यात्रा के साथ शिर्डी के दर्शन की होगी शुरूवात 5 जनवरी से

इंडियन रेलवे कैटरिंग टूरिज्म कारपोरेशन लिमिटेड, भारत सरकार के उधम ने झारखंड से पहली बार भारत गौरव पर्यटक सर्किट स्पेशल ट्रेन चलाने की योजना बनाई है

बिभा संवाददाता

रांची : भारत गौरव विशेष ट्रेन द्वारा आगामी 5 जनवरी दिन रविवार को शुभ यात्रा की शुरूआत झारसुगुडा से सात ज्योतिर्लिंग यात्रा के साथ शिर्डी की होगी।रेल मंत्रालय ने देश के विभिन्न भागों से भारत सरकार द्वारा परिकल्पित ₹देखो अपना देश₹ और ₹एक भारत श्रेष्ठ भारत' की पर्यटन अवधारणाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत गौरव पर्यटक ट्रेनों का संचालन शुरू किया है।भारतीय रेलवे भारत को अंतरराष्ट्रीय और घरेलू क्षेत्र में एक आकर्षक गंतव्य के रूप में प्रदर्शित करने के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहा है। भारतीय रेल की इन थीम-आधारित ट्रेनों की परिकल्पना घरेलू पर्यटकों के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत से अवगत कराने हेतु की गई है। इंडियन रेलवे कैटरिंग टूरिज्म कारपोरेशन लिमिटेड (आईआरसीटीसी), भारत सरकार के उधम ने झारखंड से पहली बार भारत गौरव पर्यटक सर्किट स्पेशल ट्रेन चलाने की योजना बनाई है। यह ट्रेन आगामी 5 जनवरी दिन रविवार को झारसुगुडा से खुलेगी और राउरकेला,रांची,मूरी, बोकारो स्टील सिटी, हजारीबाग रोड,कोडरमा,गया,राजगीर, बिहारशरीफ,पटना,बक्सर, आरा,पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन होते हुए भीमाशंकर, द्वारका,ग्रिशनेश्वर,महाकालेश्वर, नागेश्वर,ओंकारेश्वर,त्र्यंबकेश्वर, शिर्डी ,सोमनाथ के तीर्थ स्थल का दर्शन कराते हुए दिनांक 17.01.2025 को लौट कर वापस आएगी । यह पूरी यात्रा 12 रात/13 दिन की होंगी और इसका कुल किराया सभी कर सहित स्लिपर क्लास के लिए फ₹.24330 और 3 एसी के लिए फ₹.42655 है।

इस यात्रा में तीर्थ यात्रियों कों स्लीपर क्लास एवं 3 एसी से यात्रा, शाकाहारी भोजन,घूमने के लिए बस रहने के लिए होटल की व्यवस्था तथा प्रत्येक कोच में सिक्यूरिटी गार्ड एवं टूर एस्कॉर्ट की सेवा उपलब्ध रहेगी एवं इसके अलावा यात्रियों की बीमा के भी सुविधा रहेगी।

जामताड़ा पुलिस ने हथियार सहित चार अपराधियों को किया गिरफ्तार

बिभा संवाददाता

जामताड़ा : जामताड़ा पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में जामताड़ा थाना क्षेत्र के मोहड़ा पुल के निकट गोविंदपुर-साहिबगंज हाईवे पर डकैती की योजना बना रहे 4 अपराधियों को गिरफ्तार किया गया है। इनके पास से एक लोडेड देशी पिस्तौल, 3 जिंदा कारतूस और कई मोबाइल बरामद हुए हैं। बता दें कि गिरफ्तार अपराधियों में आजाद अंसारी, आसिफ अंसारी, इसराफिल अंसारी और जितेंद्र महतो शामिल हैं। इस मामले की जानकारी पुलिस अधीक्षक डॉ एहतेशाम बकारीब ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिए दी। उन्होंने बताया कि ये अपराधी पहले भी इस तरह के अपराधों में संलिप्त रहे हैं। साथ ही बताया कि इन अपराधियों के अन्य सहयोगियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की छापेमारी जारी है। बता दें कि इससे पहले ये अपराधी जामताड़ा थाना क्षेत्र के सोनबाद गांव से एक व्यक्ति का अपहरण कर उसे छोड़ चुके थे। पुलिस ने इन अपराधियों का पता लगाया और इन्हें गिरफ्तार कर लिया। वहीं, इस सफलता के बाद पुलिस ने अपराधियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई जारी रखने की बात कही है।

डीएवी पब्लिक स्कूल कुसुंडा में विद्यालय की प्राचार्या झूमा महता के कुशल निर्देशन में यूरेका वार्षिक साइंस

बिभा संवाददाता

धनबाद । डी ए वी पब्लिक स्कूल कुसुंडा में विद्यालय की प्राचार्या झूमा महता के कुशल निर्देशन में यूरेका 2024 वार्षिक साइंस, आट् एंड क्राफ्ट एग्जिविशन का आयोजन किया गया ' इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. सुकुमार मिश्र, डायरेक्टर आइआइटी, आइएसएम, धनबाद थे। विद्यालय की प्राचार्या ने मुख्य अतिथि व आगत अतिथियों के साथ दीप प्रज्जवलित किया।विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा विभिन्न प्रकार के मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। एक्जिविशन में लगभग 600 प्रतिभागियों ने 105 मॉडल्स की प्रस्तुति की । सभी ने बच्चों की रचनात्मक प्रस्तुति की सराहना की। बच्चों ने जैमर,एरोप्लेन, एआई बेस्ड रोबोट, ह्युमेनॉइड रोबोट, पाट्र्स ऑफ सर्किल, ज्यॉमेट्रिकल पार्क, एल्जेबरिक आइडेंटिटी, टैंक,लोकटक लेक,इनजस्टीस एक्रॉस एराज,मेवाड़ एंपायर, स्मार्ट एग्रीकल्चर, वाटरफॉल,द ग्रेट स्फींक्स ऑफ गीजा,द राइम ऑफ एनसिएंट मैरेनर आदि मॉडल्स की प्रस्तुति की।विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती झूमा महता ने आगत अतिथियों का स्वागत किया।उन्होंने कहा कि यह एग्जिविशन एनईपी 2020 के मानकों को पूरा करता है और मुझे उम्मीद है कि विद्यालय के बच्चों द्वारा प्रदर्शित मॉडल्स की सभी सराहना करेंगे।उन्होंने बच्चों और शिक्षक-शिक्षिकाओं के लगन व परिश्रम की सराहना की। मुख्य अतिथि ने कहा कि बच्चे देश के भविष्य हैं। यदि भारत को विकसित देश बनाना है तो इस तरह की एग्जिविशन जरूरी है क्योंकि यह बाल मस्तिष्क को कल्पना करने का अवसर प्रदान करता है।उन्होंने कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि डीएवी कुसुंडा अपने विद्यार्थियों को इस तरह का अवसर प्रदान करता है।इस अवसर पर एन.एन. श्रीवास्तव, एआरओ झारखंड जोन सी,वेदप्रकाश, मुख्य प्रबंधक कार्मिक विभाग, सुनील कुमार गुप्ता, प्रबंधक वित्त विभाग, बीसीसीएल, कुसुंडा, एरिया श्क, एस.मोदक, प्राचार्य, डीएवी अलकुसा,एके मिश्र, प्राचार्य, डीएवी जामाडोबा, एस.चटराज, प्राचार्य डीएवी मुगमा की गरिमामयी उपस्थिति रही। निर्णायक मंडल में एस.के. मोहंती, शांतनू कौर, जया सिन्हा व आर.एम.सुंदरम थे।

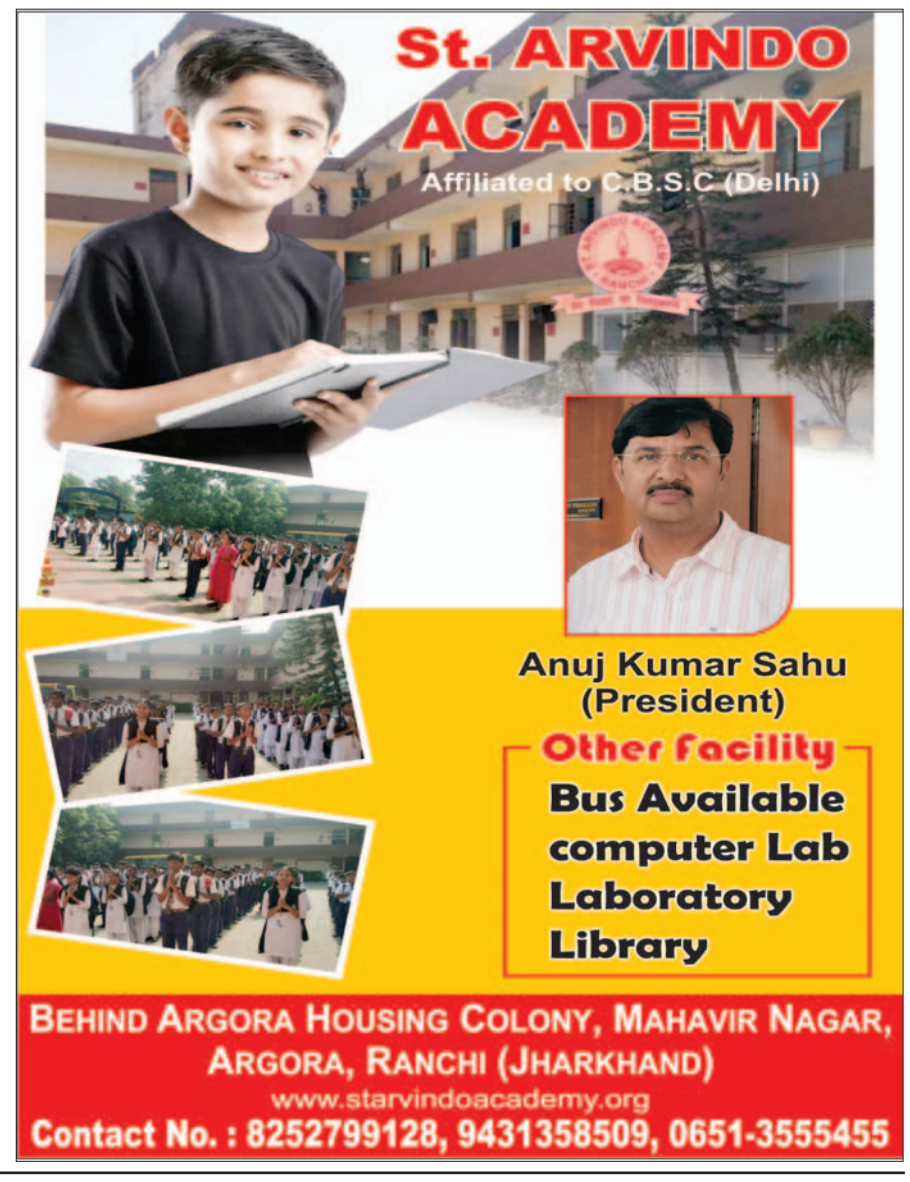

बिहान भारत की ओर से स्वात्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक **संजय कुमार** के लिए वाटिका अपार्टमेंट,भोसले गली,हरिहर सिंह रोड,बरियातू,रांची-834009(झारखंड) दूरभाषः 7761060594, 7004767601 से प्रकाशित तथा शिवा साई पब्लिकेशन प्रा.लि., काठीटांड रातु, नियर टेंडर बगीचा, एचपी पेट्रोल पंप, रातु, रांची - 835222 झारखंड से मुद्रित। समस्त दीवानी विवाद, न्यायोचित कार्रवाई एवं दंडित परिवादो के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। **संपादक कविता साहू***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार । Email-bihanbharat@gmail.com, bihanbharatranchinews@gmail.com